Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

[१६ दिसम्बर से १५ जनवरी १९८९ तक]

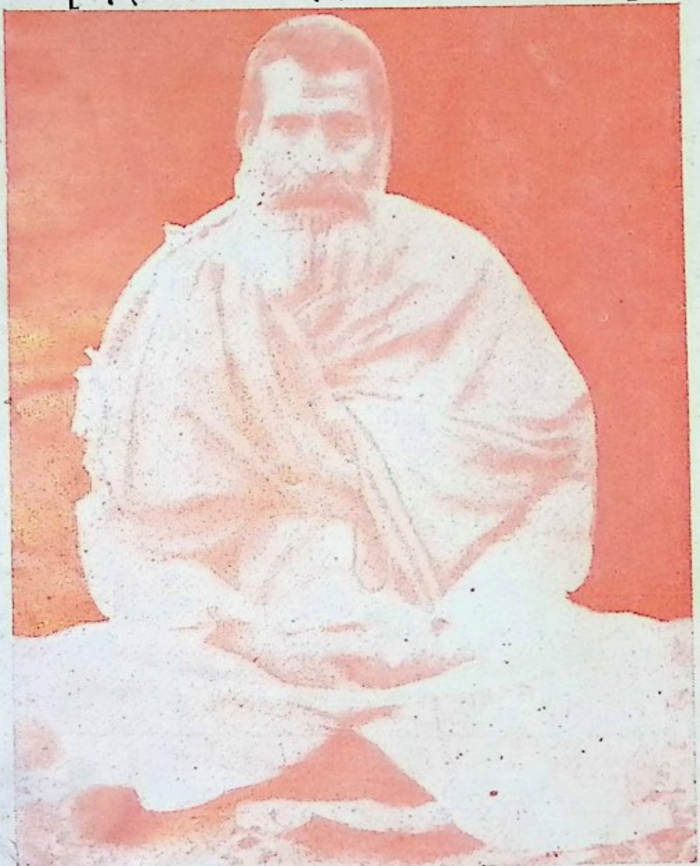

आदर्श नेता, आचार्य व बलिदानी
स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुन्शीराम)
२३ दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान, दयानन्द संस्थान तथा
'हिन्दू रक्षा समिति' के संस्थापक
स्व० महात्मा वेदभिक्षुः
२० दिसम्बर-पुण्यतिथि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

हिन्दू राष्ट्र के लिए संघर्ष करो

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षः

सम्पादक—राकेश रानी

अवैं० सहसम्पादक—विमलचक्षु:
वेद मन्दिर-महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036
दूरभाष : 745325
कार्यालय—दयानन्द संस्थान 2286,
आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष – 5724741
वार्षिक शुल्क : 35 रुपये
ीवन : 501 रुपये
—विमान से 48 पौंड,
60 डालर
.क से 7 पौंड, 12 डालर
ेश में आजीवन : 1501 रुपये
यह अंक : साढ़े तीन रुपये
दसम्बर 1988 : वर्ष 21 अंक 8

यद्देवा यतयो तथा भुवनान्यपिन्वत। अत्रा समुद्र आ गूढहमा सूर्यमजभर्त्तन ॥ ऋ० ।१०।७२।७।

अर्थ—हे (देवा) पूर्ण विद्वान् (यतय:) संन्यासी लोगों तुम (अत्र) इस (समुद्रे) आकाश में (गूढम्) गुप्त (आसूर्यम) सर्वप्रकाशक प्रकाशरूप परमेश्वर को (आ, अजभर्त्तन) भली प्रकार प्राप्त करके आनन्दित होओ तथा (यत्) जो (भुवनानि) भुवनस्थ गृहस्थादियों को सदा (अपिन्वत) विद्यादि के उपदेश से संयुक्त किया करो, यही तुम्हारा परम धर्म है।

भावार्थ :—विद्वान्, संन्यासी व उपदेशक कहाने का अधिकार उसी को है जो परमेश्वर तथा सृष्टि के सम्पूर्ण पदार्थों को यथावत् जानता है। ऐसा पुरुष ही सच्चा, त्यागी, तपस्वी व ईश्वरभक्त बनकर लोक-कल्याण में समर्थ हो सकता है। इन्हीं के द्वारा संसार को उत्तम पुरुष व विद्वानादि प्राप्त होते हैं। समस्त भूमण्डल पर विद्या का प्रचार-प्रसार इन्हीं की शक्ति तथा सामर्थ्य पर निर्भर होता है।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

इस अंक में आप पढ़िये

महात्मा वेदभिक्षु: पुण्य स्मरण (सम्पादकीय)		३
मरघट में शहनाइयां न बजाओ (महात्मा वेद भिक्षु:)		८
पाकिस्तान में दृश्य-परिवर्तन		१४
ऊर्जा के अक्षय भंडार थे महात्मा वेदभिक्षु:	—धर्मपाल शर्मा	१७
महात्मा वेदभिक्षु:	— दिव्येन्दु	२०
महात्मा वेदभिक्षु जी : वे एक अच्छे विचारक भी थे	— सत्यपाल शास्त्री	२४
आचार्य का उपदेश		२७
मुजफ्फरनगर व अलीगढ के दंगों की वास्तविकता	— शिवकुमार गोयल	२९
वेदों में राष्ट्र-निर्माण की कल्पना	—हरि	३३
बच्चों में आप कैसे बदलते हैं	—निशा व्यास	४४
मंत्र गीत	—देवनारायण भारद्वाज	४८
वैदिक शिक्षा प्रणाली का महत्व	— अमरनाथ आर्य	४९
हिन्दू राष्ट्रीय मंच	—प्रेमनाथ जोशी	५६
गीता का कर्मयोग ही ज्ञानयोग है	परमानन्द पटेल	६५
भाषायी प्रदूषण एक बहुत बड़ा खतरा	— डा० कृष्णलाल	७०
स्वस्थ रहना हो तो संतुलित आहार लीजिए	— डा० ओ० पी० उपाध्याय	७६
स्वामी श्रद्धानन्द	— सिद्धार्थ	८१
क्या तीसरे नेत्र के अस्तित्व का कोई वैज्ञानिक आधार है ?	— विवेकी	८५
मातृका मजंरी का चमत्कार	— अजय लुणावत	९०
राष्ट्रीय अखंडता के लिए एक चुनौती और कसौटी	कृष्णलाल शर्मा	९४
आदर्श निर्भय नेता स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	— ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती 'विद्यामार्तण्ड	१०१
कहानी—पश्चाताप	भावना दीक्षित	१०९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महात्मा वेदभिक्षु: पुण्य स्मरण

यों तो उस महान् मनस्वी की स्मृति सदैव ही मेरी श्वासों में बसी रहती है, परन्तु जब वह दिन आता है जो उनके नश्वर काया को त्याग कर अनन्त सत्ता में समाहित होने की स्मृति दिलाता है तो एक-एक कर अनेक घटनाक्रम मानस पटल पर उभर उठते हैं। वे सभी प्रेरक प्रसंग महात्मा (वेदभिक्षु: जी) के जीवन के उन गुणों को उजागर करते हैं, जिनके कारण मेरे स्मृतिपटल पर उनका नाम-रूप रूपायित होकर एक श्रद्धा जाग्रत कर गया है और जिसके कारण मैं लेखनी हाथ में लेकर उनके प्रति श्रद्धा को निवेदन करने की भावना में ध्यानस्थ हूँ। उसके भावजगत का शोधन करते हुए मैं जिन प्राणवान क्षणों को अक्षरों में केवल मूर्त कर सकी हूँ, उन्हें यहां प्रस्तुत कर रही हूँ।

महात्मा वेदभिक्षु: सहसा ही अपनी नश्वर काया को छोड़कर वहाँ चले गए हैं जहाँ "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' वाली स्थिति है।

महात्मा जी एक निर्भीक और कुशल वक्ता थे तो विमल मन-संयुक्त कर्म योगी योद्धा भी थे। सर्वथा आकर्षित करने वाला उनका प्रभा-प्रज्ज्वल व्यक्तित्व और मन्द स्मिति को बिखेरता उनका स्वर, जो किसी भी क्षण ब्रह्म [illegible] के साथ क्षत्रियोचित दर्प में परिवर्तित हो श्रोता को रसानुभूति में निमग्न और ओज से स्तम्भित कर सकता था। [illegible] साथ समग्र प्रभाव की दृष्टि से वैचित्र्य का पूर्ण था। व्यूहरचना के वे कितने कुशल शिल्पी थे, इसका दर्शन उस समय बम्बई में जनता-जनार्दन को हुआ था जब धन के बल पर हिन्दू समाज के अभिन्न अंग तथा कथित पिछड़े जन से उनका धर्म खरीदने की दुरभिसन्धि कुछ तत्वों [illegible] थी। वह किसी को करने का आदेश देने से पहले स्वयं कर्मक्षेत्र में [illegible] पड़ते थे। क्रान्ति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारी पिता पंडित गयाप्रसाद शुक्ल और समाज-सुधार के क्षेत्र में अग्रणी माता विद्यावती शारदा का यह कुलदीपक ब्रह्मतेज और क्षात्र तेज का जीवित जागृत पुंज था। विकट परिस्थिति में घुटने टेकना उनके सिद्धान्त और संस्कार में ही नहीं था। वह 'योग: कर्मसु कौशलम्' के प्रबल पक्षधर थे। देश की पराधीनता उनके लिए असह्य थी तो हिन्दुओं को हीनता से मुक्त कराना भी उनकी साध थी। इसी भांति विश्व के जन-जन को वास्तविक कल्याण से अभिभूत करने के लिए वेदों का पावन प्रचार भी उनकी श्रद्धा और आस्था का परिपाक था।

आदर्श पुरुष के सभी गुणों से युक्त महात्मा वेदभिक्षु: धुन के धनी और हिन्दू राष्ट्र के एक ऐसे सजग प्रहरी थे कि जहाँ और जब भी हिन्दुत्व पर कोई संकट आया तो लोगों ने उन्हें अपने बीच खड़ा पाया था। मीनाक्षीपुरम में हुए धर्मान्तरण की घटना ने राष्ट्र के समक्ष जो गम्भीर चुनौती प्रस्तुत की थी तब उन्होंने जन-जन को जागृत करने के लिये प्रबल अभियान छेड़ा था तो गो-रक्षा आन्दोलन में भी परिवार सहित कूद पड़े थे। अपनी बाल्यावस्था में ही एक सरकारी भवन पर तिरंगा फहरा कर ब्रिटिश राज्यसत्ता को चुनौती देने वाले "भारत" (पं० भारतेन्द्रनाथ) ने भारत की अस्मिता और अखंडता को ही अपने मानस पटल पर अमिट रूप में अंकित कर लिया था। वे जितने प्रखर वक्ता थे, उतने ही सशक्त लेखक भी। परन्तु कोरे वाक्शूर और शब्दवीर नहीं थे। वह तो एक ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे जिन्होंने मनसा-वाचा-कर्मणा इस आर्य जाति को विगत गौरव प्रदान कर एक बलशाली हिन्दू राष्ट्र और अजेय हिन्दुस्थान का सपना देखा था।

दयानन्द संस्थान के माध्यम से उन्होंने जहां परमपिता परमात्मा की अमर वाणी को कोटि-कोटि जन तक पहुंचाया था, वहीं धार्मिक और हिन्दू जागृति के सन्देशवाहक साहित्य का प्रकाशन कर लाखों लोगों के मन में हिन्दुत्व की ही अन्ततोगत्वा विजयी होने का प्रबल विश्वास जगाया था। जनज्ञान के माध्यम से जहां उन्होंने राष्ट्रीयता की पुनीत भावना का जन-जन में सचरण के प्रबल अभियान का सूत्रपात किया था। वहीं "वेद मन्दिर" की स्थापना कर देव दयानन्द, अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों की पूर्ति की दिशा में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पग बढ़ाया था। साहित्यसृजन में पंडित लेखराम का लेखनी को विराम न देने का आह्वान उनका प्रेरक था, तो सबल और सुदृढ़ हिन्दु राष्ट्र के निर्माण में स्वातन्त्र्यवीर सावरकर और देवतास्वरूप भाई परमानन्द एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय उनके प्रेरणा-स्रोत रहे थे। महात्मा कालिदास का यह कथन उनके जीवनवृत्त में साकार हुआ था।

'आकारसदृश: प्रज्ञा प्रज्ञया सदृशागम:। आगमै: सदृशारम्भ, आरम्भ स दृशोदय:।

अर्थात शरीर के आकार जैसा ही उनका मानस विशाल था, प्रज्ञा के समान उनकी मेधा थी, उनकी चेष्टा में उनकी मेघा एवं प्रज्ञा उनके अनुकूल थीं और उनकी चेष्टाओं के परिणाम भी सदैव उनकी चेष्टाओं के अनुरूप महान होते थे। वे एक उद्भट सेनानी, महारथी योद्धा और मानवमात्र के कल्याण की भावनाओं से सराबोर कर्मयोगी थे। वे उस समय हिन्दुत्व के हितार्थ युद्ध तत्पर थे, जब चतुर्दिक धर्म-निरपेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यक तुष्टिकरण का ही वह नक्कारा बज रहा था; जो वास्तविक धर्मनिरपेक्षता के स्वरूप को ही विकृत कर राष्ट्र को अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के रूप में स्थाई तौर पर विभाजित कर देने का कारण बन सकता था। महात्मा वेदभिक्षु: कुशाग्र बुद्धि, गंभीर, पराक्रमी, निर्भय और एक महान रूप-अध्यक्ष सेनानी थे। राष्ट्र विरोधी तत्वों से टक्कर लेने में उन्होंने अपने प्राणों के लिये खतरा उपस्थित होने की चेतावनी मिलने के बाद भी मुख नहीं मोड़ा था। रोगग्रस्त होने पर जब उन्हें चिकित्सकों ने पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया था तब भी उन्होंने एक ही उत्तर दिया था "सारा राष्ट्र ही रोगग्रस्त है। इसे रोग मुक्त करने में यह नश्वर काया काम आयेगी तो स्वयं को धन्य मानूँगा। मैं जिस जाति में जन्मा हूँ वह तो पुनर्जन्म में विश्वास करती है, और आत्मा के अमरत्व में भी। अतएव यह काया नहीं भी रहेगी तो पुन: जन्म लेकर अधूरे कार्य को पूर्ण करूँगा तथा हिन्दू राष्ट्र का वह प्रखर और महान रूप ही मेरी साधना का विषय रहेगा जो अपने गत गौरव को प्राप्त करने पर विश्व शान्ति का वास्तविक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
संदेशवाहक बनेगा और "सर्वे भवन्तु सुखिन:" के आदर्श को साकार करेगा।"

धर्म को संकीर्ण अर्थों में न लेने वाले महापुरुष वेदभिक्षु: का यह सुदृढ़ विश्वास था कि धर्म-प्रतिष्ठा के लिए राजनैतिक शक्ति भी अपेक्षित है। इसी लिए वह बाल्यावस्था में स्वातन्त्र्य समर में कूद पड़े थे। उनका यह सुस्पष्ट चिन्तन था कि धर्म राजनीति को पथभ्रष्ट होने से बचाता है और राजनीति धर्म को संरक्षण प्राप्त कर उसके महत्व की रक्षा करती है। इसलिये धर्म और राजनीति एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं।

भौतिक दृष्टि से क्षण-प्रतिक्षण नष्ट होने वाले इस नश्वर संसार में मानव का मूल्य ही क्या है? पानी के बुलबुले और सूखे रजकण के तुल्य कितने ही लोग प्रतिपल ही जन्म लेते हैं और चिरनिद्रा में मग्न भी हो जाते हैं। मूल्य होता है तो मानव के विचार और कर्तव्य का ही। ऐसी स्थिति में यह सोच उभरता है कि मनुष्य अपने किस विचार के प्रति अर्पित है और उसका कर्तव्य अपने उस विचार का अनुवर्ती है या नहीं। महात्मा वेदभिक्षु: का जीवन इस विचारपरक जीवन का न केवल अनुवर्ती रहा था, वरन् उसका प्रतीक भी बना था। वे अपनी अक्षय कीर्ति और अपना महान तथा महत्वपूर्ण कार्य "दयानन्द सस्थान' और "जनज्ञान" एवं हिन्दू रक्षा समिति' की स्थापना कर दर्शा गए हैं। वह हमारे मध्य नहीं हैं, तथापि उनके सिद्धान्त, उनके अभियान, उनके आदर्श, उनका शौर्य और लक्ष्य जिसके हेतु उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, उन्हें सागर की लहरों के तुल्य देश के कोने-कोने में विस्तारित करने का दायित्व हम सबका है, जो उनके विचारों के प्रति आस्थावान हैं। उनके पुण्य स्मरण की बेला में मेरा जनज्ञान के प्रत्येक पाठक से आह्वान है कि वह उनके हिन्दू राष्ट्र-निर्माण के महान अभियान को साफल्यमंडित करने में मनसा-वाचा-कर्मणा योगदान प्रदान करें। जिससे महात्मा वेदभिक्षु: द्वारा स्थापित "वेद मन्दिर" एक भव्य रूप पा सके। दयानन्द संस्थान सत्-साहित्यप्रचार के माध्यम से जन-जन में स्वधर्म, स्वसंस्कृति और स्वदेश के प्रति निष्ठा के वह उत्कट भाव जगा सके जो महात्मा वेदभिक्षु: का सपना था। जनज्ञान एक ऐसा सशक्त माध्यम बन सके जिससे सहस्रों-लाखों पाठक उस पावन संस्कृति का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाश पा सकें जो जन-जन-कल्याणकारी और भय-तापसन्तापहारिणी है एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" जिसका पावन लक्ष्य है। उस महान आत्मा का पुण्य स्मरण करते हुए जनज्ञान के प्रत्येक पाठक से मैं यही आह्वान करती हूँ कि वह यथाशक्ति सहयोग प्रदान करने हेतु अपना मानस बनायें तथा "जनज्ञान" और "दयानन्द संस्थान" को वित्तीय दृष्टि से सर्वथा सुदृढ़ बनायें जो महात्मा वेदभिक्षु: के सपनों को साकार करने के लिये संकल्पबद्ध है।

उन्हें हमसे बिछड़े हुए पांच वर्ष हो चुके हैं। किन्तु मुझे तो अभी भी ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि वह पावन ओ३म् ध्वजा को कर में संभाले समस्त भारत के हिन्दू जन का आह्वान कर रहे हैं कि 'उठो' जागो और अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करो। उन्होंने जहाँ आध्यात्मिक तत्व-ज्ञान चिन्तन को अनुगमनीय माना था वहीं व्यावहारिक तत्वज्ञान पर भी पर्याप्त बल दिया था। क्योंकि उनका यह विश्वास था कि हिन्दू जगत में व्यावहारिक एकता के अभाव के कारण ही देश में दुख और दैन्य व्याप्त रहा है। इसे दूर करने का एक मात्र उपाय प्रबल हिन्दु संगठन ही है। सबल हिन्दु समाज ही अन्य मतावलम्बियों को भी पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने में समर्थ हो सकता है। आज महात्मा वेदभिक्षु: जी का नाम इतिहास शेष है, किन्तु उनके आदर्श उनकी सेवायें, उनकी अक्षय कीर्ति उनकी प्रभावोत्पादक महिमामंडित दृढ़ राष्ट्र निष्ठा और सेवावृत्ति के भाव से पूर्ण व्यक्तित्व हमारी स्मृतियों में प्रत्यक्ष है। वे एक महान कर्मयोगी और कालजयी प्रज्ञापुरुष थे। उनकी भौतिक काया तो नहीं रही परन्तु उनकी यशोकाया तो सदा अमर रहेगी। उनके आदर्शों पर चलकर ही इस देश और हिन्दू जाति का कल्याण संभव है। उनकी स्मृति में शतशः नमन।

—राकेश रानी

लाखों वर्ष पुरातन संस्कृति-जग में जिसकी उन्नत थी।
'आत्म प्रगति ही सर्वश्रेष्ठ है', सदा यही जिसकी गति थी॥
जिसके सम्मुख नत होते थे, सिन्धु गहन उत्तुंग नगेश।
धरती का है स्वाभिमान जो, वही हमारा भारत देश॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी—

मरघट में शहनाइयां न बजाओ

जीवन केवल एक कल्पना है, क्योंकि लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए मैं पंगु हो चुका हूं। साधनों के अभाव ने मेरी महती कल्पनाओं पर रोक लगा दी है, इसलिए मैं मरना चाहता हूं।

तुम अपने में व्यस्त राष्ट्र-धर्म-भावना को भूल केवल अपनी सज्जा में लीन, बोलो मैं किसे पुकारूं ? किसे कहूं कि कुछ ऐसा करो कि कुछ नया हो जाए। पर हीनता की भाषा खोज रही है।

इतनी बड़ी धरा पर कौन है मेरा, जो मुझमें आत्मसात हो सके ? मेरे चिंतन तो गीत के भरोसे बैठे किसी की मनुहार करना चाह रहे थे। पर मैंने तो ठोकरें ही खायी हैं, अपनों से, परायों से, मित्र से शत्रु से। फिर तुम ही बताओ मेरे जीवन का क्या उपयोग ?

काल की मारक रेखा मेरी निर्देशिका नहीं बन सकती। मेरा दर्द किसी की आहों का सर्द धुआं भी तो नहीं हो सकता। तुम जो भी सोचते हो वह ठीक है पर मेरे ठीक को तुम नया रूप कैसे दे पाओगे ?

पूंजी, शक्ति, साधना सब तुम्हारे पास होगी, पर मेरे पास तो केवल प्यार है, ठुकराया हुआ प्यार···जो अपनी अणिमा को बिसार धार से दूर काल की बीणा बजा रहा है।

मेरे प्राणों के सरगम गीत नहीं—महानाश के डमरू का आरम्भ करना चाहते हैं—पर क्या तुम में इतनी शक्ति है ?

समय के चक्र में सभी चक्कर देना चाहते हैं। मुझे विक्षिप्त सिद्ध करना चाहते हैं। किसी का स्नेह मुझ पर झरता नहीं। क्रांति के लिए कोई मरता नहीं ! तुम ही बताओ मैं क्या करूं ?

मैं सब कुछ सहूंगा, पर अपने गीत नहीं छोड़ूंगा। मेरे मन का स्पंदन तुम्हारी भाषा नहीं सुनेगा, पर यह न भूलो कि समय आएगा, जब मेरे सत्य को धरती प्रणाम करेगी। मैं तब अमर बनकर ध्रुव तारे के समीप विश्राम करूंगा।

और तब सभी कहेंगे वह महान् था पर तब मैं कुछ कर न सकूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाकिस्तान में दृश्य-परिवर्तन

कुछ माह पूर्व कौन जान सकता था कि राष्ट्रपति जिया के दृढ़ व्यक्तित्व ी छाया में कराहता पाकिस्तान चैन की सांस भी ले पाएगा। जिया ने सत्ता ं रहने के पुख्ता इन्तजाम कर लिए थे यानि भविष्य के चुनावों में पुनः सत्ता ीन होने के लिए वे सारे दांव-पेंच आजमा रहे थे। पर वही हश्र हुआ हजरत जिया का कि "सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं।" किसी को कल्पना क नहीं थी कि सतर्कता के मामले में नम्बर एक रहने वाले जिया जैसे खुर्राट ागामी चंद मिनटों की शहनशाह अपनी मौत को नहीं पहचान पाएँगे।

दिवगत जिया महोदय की मृत्यु के पश्चात् जनसमर्थन का उनका ढोंग बल्कुल खत्म हो गया। हालांकि यह तो संसार जानता था कि वे मुस्लिम ीति के अनुसार तलवार से शासन करना उचित समझते हैं, परन्तु हाल ही ं हुए चुनावों में पाकिस्तानी जनता ने बेनजीर को चुनकर वही किया, जिसे हते हैं, 'झूठे को घर तक पहुँचाना।' जिया की पार्टी ने जिया के साथ ही पनी लोकप्रियता को रुखसत कर दिया।

जिया की मौत में कुछ ने भारतीय षड्यन्त्र की बू सूँघी और कुछ ने ी० आई० ए० की कारस्तानी समझी। भड़ास निकालने वालों ने पाकिस्तानी ताओं और असंतुष्ट जनरलों को भी नहीं बख्शा। अस्तु, जिया गए, परन्तु हीद होकर नहीं जा पाए पाकिस्तानी परम्परानुसार—या तो कत्ल होते या ाँसी के तख्ते पर चढ़ते। लोग यह भी कहते रहे हैं कि पाकिस्तानी मोहरों शतरंज की बाजी सजाने वाले अमरीकी नेताओं की आँख से वे उतर चुके थे। कौल उनके 'कुत्ता ज्यादा ही भौंकने लगा था।" अगर यह अमरीकी षड्यन्त्र ा, तो फिर जल्दी ही जांच की कार्रवाई खत्म करके हाथ झाड़ लेने से सी० ाई० ए० ने कमाल का अन्दाज दिखाया है।

मरहूम भुट्टो की बेटी बेनजीर सत्ता में आ रही है। हिन्दुस्तान की जनता ो यद्यपि वे यह अहसास कराती रही है कि वे उसकी मित्र हैं और सत्ता में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
आने पर वे उससे दोस्ताना ताल्लुक रखेंगी, परन्तु क्या पाकिस्तान का आवा
उनकी इस तमन्ना या गुजारिश को कबूल कर सकेगा। हमें इस पर शक है
और आखिर वे उसी बाप की बेटी हैं जो घास खाकर जिन्दा रह कर भी
हिन्दुस्तान के खिलाफ 'एटम बम्ब' बनाना चाहते थे। क्या बेटी बाप के स्वप
को पड़ोसी की मित्रता की कीमत पर साकार करना चाहेगी ? यदि नहीं तो
खुशी की बात है। दो पड़ोसी मिलकर रहेंगे तो तीसरे (अमरीका) की चौध
राहट कभी नहीं चल सकेगी। काश ! बेनजीर हिन्दुस्तान की नीयत और
कीमत को समझ लें तो दोनों देशों का भला हो जाए।

'रूसो' राष्ट्रपति गोर्बाचोफ

श्रीमान् गोर्बाचोफ भारत आए और रूसी आवाज से प्रभावित कर गए। रूसी भाषा में शुरू से आखिर तक बोलने वाले उनके सामने हमारे राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री और छुटभैए नेता तक अँग्रेजी में बतियाते नजर आए। गोय चालीस साल से अधिक के समय में इस मुल्क ने मा[illegible] . सीखा है कि देश की भाषा-भूषा और तहजीब को अँग्रेज-अँग्रे[illegible] कुर्बान किया जा[illegible] देश की स्थिति को देखते हुए अब तो यही सही मालूम पड़ता है कि हमने अँग्रेजों को उनकी संस्कृति और विकृत मानसिकता के कारण इस देश से नहीं भगाया प्रत्युत मात्र इस कारण से भगाया कि वे जाएँ तो हम खाएँ, इस देश को लूटें और गरीबों के ऊपर काले अँग्रेजों का वही विकृत शासन थोप दें। (स्वतन्त्रता के सच्चे सेनानी माफ करें) आज के शासकों की नीयत से तो यही साफ जाहिर होता है।

चाहे कोई माने या न माने, परन्तु मैं तो यही कहना चाहूँगा कि राजीव जी जिस तरह रूसी मित्रता का ढोल पीट रहे हैं और इसे अपना शानदार कारनामा बता रहे हैं उसमें उनका वह अन्दाज नजर आता है जो उस महिला का जो किसी महान् पुरुष से विवाह करने पर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती है। भाई, यदि हमें रूस की दोस्ती चाहिए तो क्या रूस को नहीं चाहिए ! हम जैसे बल्लियों उछल रहे हैं, क्या रूस भी ऐसे ही उछला है ? हमें तो वही मसल याद आती है, 'अधजल गगरी, छलकत जाय।'' नेताओं को चाहिए कि थोड़ी गम्भीरता धारण करें, भलमनसाहत और राष्ट्रभक्ति भी !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक पत्र : हिन्दू नेता की व्यथा

हिन्दुत्वनिष्ठ नेताओं में अग्रगण्य रहे हैं श्री विशन चन्द्र सेठ। सक्रिय राजनीति से हटकर वह वानप्रस्थ जीवन बिता रहे हैं। परन्तु हिन्दु जाति और राष्ट्र के भविष्य के प्रति उनकी चिन्ता और चिन्तन यथावत कायम है। उनके द्वारा भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष श्री लालकृष्ण अडवानी को लिखा गया पत्र जहां राजनीति की ज्वलंत समस्या का परिचायक है वही श्री सेठ की मनोव्यथा का भी दिग्दर्शक है। हम यह पत्र अविकल प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्पादक

आदरणीय श्रीमान् अडवानी जी

सादर स्नेह

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। देश की वर्तमान स्थिति एवं राजनैतिक उथल-पुथल का जितना निकट से आपको परिचय है उतना १७ वर्ष से वृन्दावन—वास एवं राजनीतिक कार्यकलापों से दूर होने के कारण मुझे नहीं होना चाहिये फिर भी सामान्य गति से जो कुछ मुझे जानकारी मिलतीं है उसी आधार पर यह नितान्त आवश्यक पत्र सेवार्थ भेज रहा हूँ। इस पत्र को आप केवल मेरी भावना न समझें बल्कि अनेकों बुद्धिवादी सज्जनों की आन्तरिक चिन्ता को मैं इस पत्र में अंकित कर रहा हूँ। आप ऐसे सम्माननीय एवं उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर विराजमान हैं जिस पर सारे देश की निगाहें आज भी केन्द्रित हैं। अत ऐसा स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि आपके द्वारा हिन्दू हितों की निश्चय रक्षा होगी। ऐसी स्थिति में आप हिन्दू मात्र की श्रद्धा एवं आन्तरिक भावनाका तिरस्कार न करें, ऐसा मेरा सादर अनुरोध है।

आदरणीय पूज्यवर श्री देवरस जी सरसंघ संचालक के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विभिन्न शाखाएं जैसे विश्व हिन्दू परिषद्, सरस्वती विद्या मन्दिर तथा इसी प्रकार की कई सामाजिक संस्थाओं का पूरे देश में लाखों कार्यकर्त्ताओं का अनेकों क्षेत्रों में जाल बिछा है। किसी अन्य पार्टी तो क्या कांग्रेस के पास भी इतनी बड़ी मात्रा में ऐसे चरित्रवान निष्ठापूर्ण, जिन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना पूरा जीवन राष्ट्र एवं हिन्दू—मात्र की सेवा में लगाने का व्रत लिया है अन्यत्र नहीं हैं। वे सभी कार्यकर्ता इस पत्र में अंकित भावना के पक्के सहयोगी हैं, ऐसी समर्थवान राष्ट्रीय संस्था के राजनैतिक मंच पर आप प्रमुख पद पर विराजमान हैं।

सम्भव है आपको ज्ञात होगा कि पूज्यवर वीरसावर कर जी के पूज्यवर डा० हैडगवार जी जीवन पर्यन्त अभिन्न मित्र रहे तथा जीवन की अंतिम बेला तक डा० साहब अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के सम्माननीय उपाध्यक्ष पद की शोभा बढ़ाते रहे। उन्होंने राष्ट्रीय सेवक संघ की रचना हिन्दू—मात्र की रक्षा हेतु की थी।

पूज्य डा० हैडगवार जी की पुण्य स्मृति में शताब्दी का विशाल आयोजन संघ द्वारा पूरे भारत में होने जा रहा है। ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर आप भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के संकल्प की घोषणा कर महान यश के भागी बनिये।

देश के सभी प्रान्तों एवं उनके अंचलों में असंख्य मात्रा में छोटी बड़ी हिन्दू हितों की रक्षा करने वाली धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाएं अपने-अपने स्तर पर कार्य कर रही हैं। संघ के कार्यकर्ता पूरे देश में फैले हुए हैं। आपको उन सभी संस्थाओं का स्नेह-सम्मान से आह्वान कर अनायास विशाल शक्ति का प्रदर्शन करने का यह स्वर्ण अवसर है।

हिन्दू मात्र की भावनाओं का केन्द्र भारतीय जनता पार्टी का जो खुला तिरस्कार, विशेषतः इन्हीं दिनों अन्य राजनैतिक दलों ने किया है, मैं उसे अनायास भगवत-कृपा का महत्वपूर्ण शुभ चिन्ह मानता हूँ। भारतीय जनता पार्टी और कम्यूनिष्टों को छोड़ सभी राजनैतिक दल कांग्रेस से निकले हुए ही तो हैं। उन्हीं दलों द्वारा जो नवीन जनमोर्चा बना है, यद्यपि यह अभी शैशव अवस्था में है, फिर भी श्री बहुगुणा, श्री चन्द्रशेखर, श्री देवीलाल आदि सज्जनों द्वारा उसका विरोध जन्म से ही हो रहा है। क्या समाज यह भूल जायेगा कि श्री मोरार जी भाई एवं श्री चरणसिंह द्वारा अल्प समय हेतु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासन-तन्त्र उनके हाथों में आने पर भी आपसी वैमनस्य एवं प्रधानमन्त्री की कुर्सी की होड़ के मौलिक कारण से उन्हें पदच्युत होना पड़ा था। फिर जिस जन मोर्चा के जन्म से हीं विरोध की ज्वाला प्रकट हो रही है, वह भारतीय शासन हिन्दू मात्र की उपेक्षा करते हुए क्या सुगमता से चल सकेगा ?

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को उनके इलाहाबाद चुनाव से पूर्व उन्हें भी पत्र भेजा था, जो सज्जन दिल्ली जामा मस्जिद के श्री बुखारी अथवा मुसलमान व ईसाइयों के चरणों में विनती किये बगैर निस्तार न होने की भावना लिए बैठे हैं, क्या वे भारत जैसे धर्म-प्रधान देश का वास्तविक विश्वास कभी प्राप्त कर सकेंगे ? कैसी दुःखद विडम्बना है कि देश के सभी राजनैतिक दलों के हिन्दू नेता हिन्दू हितों हेतु एक भी शब्द बोलने का साहस नहीं करते।

विचारणीय प्रश्न है कि मुसलमान व ईसाई जिस पार्टी अथवा स्थान पर बैठे हैं, खुलकर अपनी राष्ट्र विरोधी भावना प्रकट करने पर भी पार्टी के सदस्य एवं सैक्यूलर बने रहते हैं पर सभी हिन्दू नेता सैकूलर बनने हेतु हिन्दू विरोध को रामवाण औषधि समझ मृगतृष्णा में पड़कर राष्ट्रीय हित को देखना नहीं चाहते। अपनी पार्टी के हित में वे यह भी भूल जाते हैं कि जनसंख्या-वृद्धि के प्रभाव से भारत का हिन्दू समाज अल्पमत में होने जा रहा है।

भारतीय जनता पार्टी हेतु इससे उत्तम व सुनहरा अवसर फिर शायद न मिले, आपकी पार्टी को सच्ची भावना एवं निष्ठा से हिन्दू मात्र की महान शक्ति पर विश्वास कर, हिन्दू-हितों की स्पष्ट घोषणा कर आगामी चुनावों में ऐतिहासिक सफलता का वरण करना चाहिये। सभी राजनैतिक पार्टियों ने विभिन्न अवसरों पर हिन्दू-हितों की उपेक्षा कर मुसलमानों एवं ईसाइयों का खुला हीन भावना से पक्ष लिया पर स्वराज्य उपरान्त का लम्बा इतिहास प्रत्यक्ष साक्षी है कि उसका फल राष्ट्र हेतु घातक सिद्ध हुआ।

सूचनार्थ निवेदन है कि सन् १९४८ से १९७१ तक मैंने छः पार्लियामेंटों के सफल चुनाव केवल हिन्दू मात्र की शक्ति पर लड़े थे। फिर आपकी संस्था की सहयोगी विभिन्न शाखाओं का तो पूरे देश में जाल बिछा है। केवल हिन्दू मात्र की विशाल शक्ति पर सच्चा विश्वास स्थापित करना आपका सामयिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्तव्य है।

आज रूस, चीन आदि देशों को अपना शासन-तन्त्र अन्य प्रजातन्त्रवादी देशों के समान बनाने पर बाध्य होना पड़ रहा है। बहुत कुछ परिवर्तन इस दिशा में वहाँ किया भी जा चुका है। कारण जिन मौलिक सिद्धान्तों पर कम्युनिस्ट शासन पद्धति का जन्म हुआ था, मानव की स्वाभाविक जीवन शैली विचारों एवं अधिकारों का खुला विरोध है, बन्दूक के सहारे भला कब तक शासन तन्त्र चलाते ? विवश होकर उन्हें अपनी शासन-पद्धति एवं पालिसी में मौलिक परिवर्तनों को अपनाना पड़ा। उसके कारण भारतीय कम्युनिष्ट बड़े असमजस में पड़ गये हैं कि वे अपनी विचारधारा को कौन सा नवीन रूप देकर भारतीय समाज के समक्ष रखें ताकि उनकी लोकप्रियता को क्षति न पहुंचे।

मेरी अन्तरात्मा का विश्वास है यदि आपने श्री राम जन्मभूमि, श्री कृष्ण जन्म स्थान, श्री काशी विश्वनाथ आदि ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण एवं हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान देना, धारा ३७० की समाप्ति। हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न साकार करना आदि विभिन्न ज्वलन्त प्रश्नो का हिन्दू भावना के अनुकूल शासनतन्त्र द्वारा पूर्ण करने की घोषणा की तो श्री राजीव गांधी, कम्युनिस्ट पार्टी, जनमोर्चा, सभी दल पीछे रह जायेंगे और आपकी पार्टी का, निश्चय ही भारत पर सफल शासन चलेगा।

प्रियवर, अडवानी जी, यह केवल मेरा पत्र नहीं अनेकों बुद्धिवादियों की भावना का सामूहिक चित्रण है। यदि आपने इस पत्र मे अंकित भावना को मान्य किया तो सहस्रों वर्षों से अपमानित हिन्दू जाति पुनः सम्मानित बन भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाकर आप तथा आपकी पार्टी ऐतिहासिक महान यश की भागी बनेगी।

सेवा में,
श्रीमान लालकृष्ण जी अडवानी
अध्य. भारतीय जनता पार्टी
११. अशोक रोड नई दिल्ली।

शुभचिन्तक

(विशनचन्द्र सेठ)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शोक समाचार

सनातन धर्मी नेता गिरधारी लाल गोस्वामी का निधन

जाने माने सनातन धर्म नेता एवं संस्कृत विद्वान डा. गिरधारी लाल गोस्वामी का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह ६६ वर्ष के थे।

डा० गोस्वामी को मस्तिष्क की गांठ के आपरेशन के लिए दो महीने पूर्व खिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया था।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी डा. गोस्वामी एक अच्छे शिक्षाविद और माजिक कार्यकर्ता के अलावा ज्योतिष के पडित भी थे। डा. गोस्वामी का न्म पश्चिम पंजाब के चिनियत जो अब पाकिस्तान में है, में २४ अगस्त ६१९ को हुआ था। डा. गोस्वामी को देश में अच्छे ज्योतिषि के रूप में याति प्राप्त थी। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय 'राज पण्डित' के में उन्होंने अनेक बार राष्ट्रपति भवन और भारत सरकार के अन्य समा-हों में पूजा पाठ कराई। अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद के अध्यक्ष होने साथ-साथ डा. गोस्वामी अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के कार्य री अध्यक्ष भी थे।

वे एक प्रकांड पडित थे जिन्होंने हमारी समृद्ध तथा प्राचीन संस्कृति की रासत को बढ़ाने में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

गोस्वामी ने सनातन हिन्दू समाज के लिए निःस्वार्थ भाव से काम किया सके लिए उन्हें हमेशा याद किया जायेगा।

महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, अलीगढ़ का देहावसान ५.११.८८ हो गया। आर्य समाज के सभासदों ने दिवगत स्वामी जी के जीवन पर काश डाला, श्रद्धांजलि अर्पित की।

मन्त्री
आर्य समाज कायमगंज

आर्य समाज, बहराइच के उपप्रधान श्री प्रेमगुप्त जी की माता जी का वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे धर्मनिष्ठ आर्य महिला थी। की स्मृति में 'सरस्वती आर्य बालिका विद्यालय' चलाया जा रहा है। आर्य ाज बहराइच के समस्त सदस्यों ने दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के प्रति दना प्रकट की।

मन्त्री, आर्य समाज बहराइच

धन्यवाद

मेरी माता स्वर्गीय लीलावती जी के निधन पर शोक-संवेदना [illegible] ा हुए हैं शुभेच्छुओं के प्रति धन्यवाद प्रकट करती हूँ। [illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

● नवीनतम

१. वैदिक भजन सिन्धु — २५ रूपये
गायक - श्री सत्यपाल "सरल"

२. प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रूपये
गीतकार - स्व. प्रकाशचन्दजी कविरत्न, गायक - श्री महेशचन्द संगीतरत्न

३-४. विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रूपये
(कन्या-पक्ष एवं वर पक्ष) गीत एवं गायन-माता लज्जारानी गोयल एवं श्रीमती सरोज गोयल। विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त नये कॅसेट।

५-६. वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कॅसेट) — ५० रूपये
मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७. वेद भारती — ३० रूपये
शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन - श्री सत्यकाम विद्यालंकार,वेदपाठ एवं संगीत - अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सत्यशील देशपाण्डे।

● हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रूपये

८. पथिक भजनसिन्धु ९. मुसाफिर भजन सिन्धु १०.श्रद्धा
११. आर्य भजनावली १२. वेदगीताञ्जलि १३. भजनसुधा।

● हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रूपये

१४. वैदिक सन्ध्याहवन १५. गायत्री महिमा १६. भक्तिभजनावलि
१७. महर्षि दयानन्द सरस्वती १८. आर्यभजनमाला १९. आर्यसंगीतिका
२०. योगासन प्राणायाम स्वयं शिक्षक २१-२२. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कॅसेट) स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मंगाने के लिये

● कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये। चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रूपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
● वी. पी. पी. के आदेश पर डाक एवं पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार : १२ कैसेट मंगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्वरूप दिये जायेंगे।

सूचना - व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

संसार साहित्य मण्डल
१४१, कृष्णकुञ्ज कालोनी, बम्बई - 400 082.
फोन : ५६१ ७१ ३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

20 दिसम्बर, पुण्य तिथि है जिनकी—

ऊर्जा के अक्षय भंडार थे महात्मा वेदभिक्षु

—धर्मपाल शर्मा

महात्मा वेदभिक्षु जी का नामोल्लेख आते ही मुझे एक ऐसे व्यक्तित्व का स्मरण आ जाता है जिसका पल-पल एक महान लक्ष्य के लिए समर्पित था। जिसके जीवन में निजीपन जैसी मानों कोई बात ही न बची थी, सब कुछ एक महान लक्ष्य के साथ एकाकार हो गया था।

वे क्या थे, उन्होंने वैदिक धर्म, हिन्दू समाज और इस राष्ट्र के लिये क्या-क्या किया, इस विषय पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि आखिर इस चुम्बकीय व्यक्तित्व में ऐसी कौन सी ऊर्जा थी, कौन सा जादू था और कौन सा तूफान था जिसने अल्प समय में इतना विराट कार्य कर दिखाया और जो राष्ट्रक्षितिज पर एक धूमकेतु की तरह चमककर विलीन हो गया ?

उस महामानव के उस व्यक्तित्व पर दृष्टि डालता हूँ तो स्मृति के वातायन से अनेक चित्र उभरने लगते हैं; कोई भी प्रियजन उनके कक्ष तक पहुँचने से पहले द्वार पर ही उन्हें दीखता तो वे हर्षातिरेक से लगभग चीख उठते, उनका रोम-रोम मानों उसके स्वागत के लिये व्याकुल हो उठता, "अरे आया, दीपू ! देखो तो कौन आया है, इसके लिए चाय लाओ, अरे कहां हो !" वे अपनी पुत्रियों को इस व्यग्रता से पुकारते उस अतिथि के सत्कार के लिए मानों उन्हें अतिथि के स्वागत के लिए एक क्षण का भी विलम्ब असह्य हो रहा है। और उनका यह हार्दिक सत्कार ही उस आगन्तुक के हृदय को जीत लेता। भला, वह व्यक्ति उन्हें छोड़कर फिर कहां जा सकता था। सदैव के लिए उनका हो जाता ! लोक संग्रहकर्ता के उनके इसी गुण के कारण उनके साथ देश में हजारों लोग जुड़ते गए। इनमें केन्द्रिय मंत्रीगण, विदेशों के राष्ट्राध्यक्ष और देश के मूर्धन्य विद्वान थे तो दैनिक जीवन से जुड़े सामान्य व्यापारी और कर्मचारी भी थे। सबके साथ उनकी एक जैसी अन्तरंगता उनकी सामंजस्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षमता का प्रतीक थी। किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलने के बाद वे दर्प से दिपदिपाते नहीं थे, उसके बाद वे बड़ी ही सहज मुद्रा में अपने अन्य प्रियजनों से मिलते। ऐसा इसलिए हो पाता क्योंकि वे व्यक्ति के बड़प्पन से आक्रान्त नहीं होते थे, अभिभूत नहीं होते थे, वे जानते थे कि बड़प्पन पद, सत्ता, साधन और सामर्थ्य में नहीं होता बल्कि व्यक्ति के हृदय की निर्मलता, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा में होता है और ये सद्‌गुण किसी सामर्थ्य के दास नहीं होते।

किन्तु मैंने देखा कि उन्हें निरर्थक बहसें पसन्द नहीं थे। वाकशूरों से वे बचते थे लेकिन वाद-विवाद को वे आलोचना से नहीं, कर्मदिशा से प्रभावित करते। बहस को एक ऐसा मोड़ दे देते कि बहस करने वाले व्यक्ति को भी किसी काम में उलझा देते। एक बार मैंने पूछा, आप राष्ट्रीय महत्व की बहसों और चर्चाओं को भी कुशलतापूर्वक उड़ा क्यों देते हैं भला! उनका उत्तर था, वाकशूरता के कारण ही हमारा देश इतने लम्बे समय तक पराधीन रहा था। इस देश में प्रतिभा, विद्वता, और वाकचातुर्य की कमी कभी नहीं रही। कमी रही तो कर्मनिष्ठा की ही रही। और आज तो खास तौर से कार्य की ही जरूरत है, इसलिए लोगों को कार्य में जुटने-जुटाने की ही जरूरत अधिक है।

उनकी जीवनचर्या और दिनचर्या को जितने ही अधिक निकट से देखा उन्हें समझने का अधिक अवसर मिलता गया। उनमें अद्‌भुत ऊर्जा कहां से आई जिसके कारण वे अल्पकाल में इतना विराट कार्य कर पाए, इसका उत्तर मुझे उनकी जीवनचर्या और दिनचर्या देखकर स्वयं ही मिलता गया।

उनके जीवन में एक क्षण भी निजीपन या मनोरंजन के लिए नहीं था। वे चौबीसों घण्टे लक्ष्य के प्रति ही समर्पित रहते, खाते, पीते, उठते-बैठते यहां तक कि स्वप्न में भी वे हिन्दुत्व और राष्ट्र के बारे में ही सोचते। कभी-कभी जब वे अपने स्वप्ने की बात सुनाते तब इसकी पुष्टि होती। वे कुछ ऐसे ही स्वप्न देखते जिनका सम्बन्ध राष्ट्रहित के चिंतन से होता। सचमुच

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसका जीवन राष्ट्रमय हो गया हो, उसका मनोरंजन भला और क्या होगा ?

वे सम्बन्धों को प्रिय पक्षी की तरह पाल कर रखते थे। इसलिए उनसे बड़े व्यक्ति कभी दूर न हो पाते। उनके साथ रहने वाला व्यक्ति चाहे घर का हो, अतिथि हो या प्रवास का साथी हो उसके बारे में वे असीमित चिंता करते। उन्होंने खाना खाया कि नहीं खाया, वे सोयेंगे तो कहां सोयेंगे, कोई असुविधा तो नहीं रह जायेगी, वे गंभीर है तो क्यों है, कोई चिंता तो नहीं है, जैसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान रखते। निकट रहने वाला व्यक्ति चकित और अभभूत हो जाता कि वे एक मां से भी अधिक वत्सल कैसे हो जाते थे।

अक्सर देखा गया है कि विवाह, उत्सव, समारोह अथवा किसी अन्य व्यस्तता के बीच घिरे व्यक्ति तनाव के कारण असंतुलित हो जाते हैं। व्यस्तताओं के बोझ उन्हें असहज बना देते हैं लेकिन वेदभिक्षु जी ऐसी किसी भी व्यस्तता में सहज बने रहते। वे घोर व्यस्तता के बीच भी हर व्यक्ति की सुधि रखते कि उसे कोई कष्ट तो नहीं है, कोई उदास तो नहीं है, कोई नाराज तो नहीं है। भीड़भाड़ और व्यस्तताओं के बीच भी वे हरेक को उचित सम्मान देना न भूलते। कार्य व्यस्तता के तनाव को वे दूसरों पर न लादते। उन्हें इतनी व्यस्तताओं के बीच सहज देखकर सचमुच अद्भुत आलौकिक लगता। किस तरह यह महामानव सहजता से इतने दायित्वों और कार्यों का वहन कर लेता है। जैसे सब कुछ उसके जीवन का सहज हिस्सा ही है। जबकि सामान्य तो क्या विशिष्ट व्यक्ति भी जरा सी परेशानियों के बोझ से बिलबिला उठते हैं जैसे वे पहाड़ ढो रहे हों। थोड़े से पदों का भार भी उन्हें दर्व से दमका जाता है, थोड़ा-सा सम्मान भी उन्हें असहन बना देता है, लेकिन इन सबसे असंपृक्त बने रहते।

यही गुण थे उनकी असमानता के कारण। इन्हीं गुणों ने उन्हें महामानव बनाया था। यही ऊर्जा उन्हें कर्मवान बनाये रखती थी। इसी ऊर्जा ने उनमें तूफान सी गति कर दी थी। काश, यह तूफानी ऊर्जा कुछ समय और हमारे बीच रहती तो कितने ही व्यक्तियों को ऊर्जावान कर देती। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः

—दिव्येन्दु

सृष्टि के निरन्तर गतिमान् चक्र में न जाने कितने मर्त्यधर्मा पुरुष आए और चले गये, संसार ने उनको विस्मृत कर दिया, किन्तु अपनी नश्वर देह के मिट जाने पर भी जो समय से पादाक्रान्त नहीं किये गये; ऐसे सपूत भी इस भारत भूमि ने उत्पन्न किये हैं। ये वे लोग थे, जिन्होंने स्वयं को नगण्य मान कर देश-धर्म-जाति की सेवा की त्रिपथगा में अपना अस्तित्व समाहित कर दिया। वे क्रान्ति पुरुष बनकर जिये और जब वे गए तो राष्ट्र के लिये सुख-शान्ति और उत्थान का मनमोहक सौरभ छोड़ गये।

उनके जन्म-दिवसों या पुण्यतिथियों पर उनका स्मरण करते हुये हम नवीन स्फूर्ति प्राप्त करते हैं और ऐसा अनुभव करते हैं मानो उनकी पुण्यात्मा हमें देश-धर्म-मानवता की सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रही है। आदरणीय महात्मा वेदभिक्षुः जी (पूर्व पं० भारतेन्द्र नाथ जी) ऐसे ही देश-भक्तों और मिशनरियों में से थे। उन्होंने अपने अभावग्रस्त तथा अस्थिर जीवन को बहुमुखी उन्नति से परिपुष्ट किया, किन्तु यह उन्नति व्यक्तिगत जीवन के लाभ के लिए नहीं, सार्वजनिक जीवन-हेतु थी। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि अभाव मनुष्य को झुका नहीं सकते, भीषण झंझावातों में भी क्रान्ति पुरुष की मशाल बुझती नहीं और मिशनरी स्पिरिट वाले को कोई शक्ति रोक नहीं सकती। वे इन सब सद्गुणों को धारण करने वाले सदुद्यमी महापुरुष थे। उन्होंने जिस कार्य को हाथ में लिया, उसकी सफलता को आकाश की ऊँचाईयों तक पहुंचाया।

उनका व्यक्तित्व अद्भुत था। विद्वता, सहिष्णुता, सौहार्द्र, वात्सल्य और लगन का उनमें अपूर्व संयोग हुआ था। उनसे मिलने वाला प्रत्येक जन एक सम्मोहन-सा अनुभव करता था, जो उनकी मृत्यु के पश्चात् भी समाप्त नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुआ। जो भी उनसे मिला. सदा के लिए उनका मित्र बन गया। सही अर्थों में वे अजात शत्रु बन चुके थे। वे किन्हीं के लिए संपूज्य थे, तो किन्हीं के लिए प्रेरणा-स्रोत, किन्हीं के लिए वात्सल्य की मूर्ति थे, तो किन्हीं के लिए मित्रता के आदर्श ! न जाने कहां-कहां उन्होंने अपने प्रेम की सुगन्धि को प्रसारित कर दिया था। वे जहां जाते, वहीं उनके समर्थकों व प्रशंसकों का समूह उन्हें घेर लेता।

आर्यसमाज ने अपने जन्म से ही देश क्या, सम्पूर्ण विश्व के लिये अद्वितीय विभूतियां प्रदान कीं। उन सबने मानव-हित के लिये अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये और अपने श्रम-सीकर से मानवधर्म के वृक्ष को पालित-पोषित किया। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त ध्वजा उनके सुदृढ़ हाथों में सुरक्षित रही। पं० भारतेन्द्र नाथ जी ने भी अपने अग्रगामी महापुरुषों का अनुसरण किया। समाजोत्थान की अनेक योजनाओं के निर्माता और कर्ता बने। दयानन्द संस्थान के अन्तर्गत चलने वाले 'जन-ज्ञान' प्रकाशन द्वारा उन्होंने आर्यजगत् में क्रान्ति ला दी। नित नवीन व सार्थक उद्घोष, धर्मज्योति प्रदीप्त करने वाली उच्चस्तरीय पुस्तकें व अन्य दुर्लभ साहित्य आर्यजनों की सेवा में पहुँचने लगा। लोग 'जन-ज्ञान' प्रकाशन की पुस्तकों को उसकी उत्तम साज-सज्जा के कारण पहचानने लग गए। जो कार्य आर्यसमाज के दशाब्दियों के इतिहास में नहीं हुआ, वह भारतेन्द्र जी ने एकाकी रहकर भी अल्प समय से 'जन ज्ञान' प्रकाशन से कर दिखाया। छोटी-छोटी पुस्तकों से लेकर वृहदाकार वेद भाष्यादि ग्रन्थों का एक साथ प्रकाशन करना उन्हीं के बस की बात थी। अनेक पुस्तकें तो ऐसी थीं, जिन्हें कोई भी प्रकाशन दसों वर्षों से छापने का साहस नहीं कर सका था, महात्मा जी ने उनकी महत्ता व उपयोगिता को समझा और अभावों तथा कष्टों की चिन्ता किये बिना उन्हें सर्वसुलभ कराया। वे सदैव ऐसी पुस्तकों की खोज में रहते थे।

वे लगन के पक्के तो थे ही, ऊर्जा के अथाह सागर भी थे। महर्षि के सिद्धांतों का समर्थन करने वाली जो भी पुस्तक उन्हें सर्वहितकारी लगी, उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने अवश्य प्रकाशित कराया। "वैदिक सम्पत्ति", "हत्यारों का इतिहास" (History of the Assassins), वेदांजलि (वैदिक विनय) "वेदों का यथार्थ स्वरूप" इत्यादि ग्रन्थ उनकी ग्रन्थ-प्रेम की उपर्युक्त उच्च धारणा के प्रबल प्रमाण हैं।

वे अपने जीवन को हिन्दू जाति के उत्थान के लिये अर्पण कर चुके थे। मन, वचन और कर्म से वे आजीवन हिन्दूस्थान के लिये प्रयत्न करते रहे। पिता के क्रांतिकारी विचार और माता की लोक सेवा एवं त्याग की भावना के साथ ऋषि दयानन्द की आदर्श छवि उनकी दृष्टि में रही। जीवन को देश-धर्म-जाति के लिये अर्पण करना उन्होंने माँ की गोद में ही सीख लिया था। उन्होंने अपने उपर्युक्त संस्कारों को पुष्ट किया अपने गुरुकुलीय जीवन में, उनकी प्रखर कार्यशक्ति ने उन्हें हस्तलिखित पत्रिका निकालने को प्रेरित किया। पश्चात् उन्होंने अपने जीवन को सरकारी चाकरी में लगाने करने के स्थान पर आर्य सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में लगाने का निश्चय किया। ईश्वर ने उनको अभिलषित जीवनसंगीनी (पं० राकेशरानी जी) प्रदान कर उनके मार्ग को सरल बनाने का उपाय करके मानों उन्हें वरदान दिया, किन्तु वे तो उन दुर्धर्ष योद्धाओं में से थे, जो अधिक उपायों से अधिक-तर भीषण संग्राम जीतने का प्रयत्न करते हैं। अपने सम्पूर्ण परिवार को जनसेवा के कार्य में झोंक देने पर भी उन्हें सन्तोष न हुआ। वे और अधिक कार्य करना चाहते थे। प्राप्त हुई सफलता उनके लिये लक्ष्य न होकर लक्ष्य की ओर एक पग बढ़ाना था। जिसे लोग मंजिल समझते हैं और जहां पहुँचकर विश्राम करना चाहते हैं, वह उनके लिये आदर्श शिखर की प्रथम सीढ़ी थी, जहां से आरोही अपनी मंजिल की अधिकतम ऊँचाई परखने का प्रयत्न करता है।

उन्होंने सदैव अद्वितीय कार्य करने का ही निर्णय लिया। और जब निर्णय ले ही लिया तो उसे पूरा करना ही है, चाहे कितनी ही बाधाएं क्यों न आयें। अभाव और रुग्णता जैसे प्रबल कारक भी उन्हें रोक नहीं सकते थे। कैसी अप्रतिम प्रतिज्ञा थी कि पैंतीस रुपये में चारों वेदों का हिन्दी भाष्य आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता को सुलभ कराऊँगा ! लोग सुनकर दंग रह गये। परन्तु वाह रे कर्मवीर ! तुमने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया, देवताओं की पुष्प वर्षा की भाँति विद्वत्मण्डल ने तुम पर प्रशंसा और अभिनन्दनों की वर्षा की।

कर्मयोगिन् ! तुम वाणी के ही धनी नहीं थे, प्रत्युत तुम्हारी कर्मशक्ति भी महान् थी। जिस कार्य को बड़ी-बड़ी संस्थाएँ नहीं कर सकीं, वह तुमने अकेले कर दिखाया। विद्वान् कहते हैं—'क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे।' तुम इसके ज्वलन्त उदाहरण थे। काल ने तुम पर भयंकर रोगों के आक्रमण कराये, परन्तु तुमने उसे दुत्कार दिया, तुम्हारी अप्रतिहत कर्मशक्ति की धारा को वह भी अवरुद्ध न कर सका। जब देश में हिन्दुओं पर भयंकर प्रहार हुये, सरकार नपुंसक हो जड़वत् बैठी रही, तब तुम्हारी आग उगलती वक्तृताओं ने हिन्दुओं में नई चेतना का संचार किया। हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना करके तुमने उन सभी संगठनों को चेतावनी दे डाली जो हिन्दू होने का ढोंग तो करते हैं, परन्तु लोकमंच पर तुष्टीकरण की नीति की ही अनुपालना करते नजर आते हैं। सरकार और देशद्रोहियों की वक्रदृष्टि की चिन्ता न करके तुमने षड़यन्त्रकारियों के विरूद्ध आवाज उठाई और इसी क्रम में षड़यन्त्रकारियों का पर्दाफाश करने वाली एवं उनके कानों में चुनौती का स्वर गुंजित करने वाली पुस्तकों की जो श्रृंखला प्रकाशित की, वह अद्वितीय है।

अभावों और कष्टों में जीकर भी तुम झुके नहीं, दुःखों के क्षणों में भी तुम मुस्कराते रहे। तुम्हें कभी अपनी चिन्ता नहीं हुई; तुम्हें सदैव धर्मप्रचार की चिन्ता रही। रगड़ खा-खाकर तुम 'शालिग्राम' बन गए, जिसके सम्मुख विशाल जनसमूह नतमस्तक होता था।

महात्मन् ! आपके आदर्श धर्म मार्ग के पथिकों को सदैव बलिदान पथ पर चलने की प्रेरणा करते रहेंगे। आपकी यशःसुरभि सदैव जनमानस को चैतन्य प्रदान कर देश द्रोहियों और षड़यन्त्रकारियों से जूझने की सामर्थ्य व साहस प्रदान करेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः जी : वे एक अच्छे विचारक भी थे

—सत्यपाल शास्त्री

दिवंगत महात्मा वेदभिक्षुः जी (पंडित भारतेन्द्र नाथ जी) के जीवन के अनेक पहलुओं पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। स्वयं मैंने उनके जीवन के अनेक पक्षों को स्पर्श करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के संबंध में अपने विचार प्रकट किये हैं। लेकिन उनके जीवन का दार्शनिक पक्ष पूरी तरह प्रकट नहीं किया गया। जैसा मैंने इस रचना का शीर्षक दिया, वे एक अच्छे विचारक भी थे।

जब तक देश पराधीन था, भारतेन्द्र जी की जीवन दृष्टि विशुद्ध रूप से राजनैतिक रही। देश के स्वाधीन होने पर वे धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर मुड़े। इसका भी कारण है। कहते हैं कि पराधीन देश की राजनीति मिशन होती है, लेकिन जब कोई देश स्वाधीन हो जाता है और सत्ता के उपभोग का समय आता है, तब राजनीति मिशन न रहकर धन्धा बन जाती है।

भारत के स्वाधीन होने के कुछ ही महीने बाद जब फगवाड़ा (पंजाब) में, जहां हमारा पाकिस्तानवर्त्ती गुरुकुल जेहलम स्थानांतरित हो गया था, मेरा उनसे सम्पर्क हुआ तो मैंने पहली बार नोट किया कि वे राजनीति से हटकर धर्म और अध्यात्म की भाषा बोलने लगे हैं।

अनेक देशों में यह प्रचलन है कि यदि कोई अपराधी अपराध करके बच निकले तो उसे बुरा नहीं माना जाता, अपितु उसकी प्रशंसा की जाती है—यह कहकर कि "देखो, यह व्यक्ति कितना कुशल है कि अपने अपराधों की पोल नहीं खुलने देता और फलस्वरूप दंड भोगने से बच जाता है।" जबकि मैं बात कर रहा हूं, तब भारतेन्द्र जी की उम्र केवल १९ वर्ष थीं। लेकिन अध्ययन और मनने के फलस्वरूप उनके विचार इतने मंज चुके थे—परिपक्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो चुके थे कि उक्त प्रसंग उठाये जाने पर उन्होंने कहा कि "हमारे पापों और अपराधों का असली दंड वह नही, जो हमें कानून से मिलता है, असली दण्ड तो यह है कि हमारे पापों और अपराधों के बुरे संस्कार हमारे मन पर पड़ते है। वे अपने आप में सबसे बड़ा दंड हैं। उन्हीं संस्करों से हमारी अगली जन्म-शृंखला प्रभावित होती है।"

वे मानते थे कि विचारों में बहुत शक्ति है। वे कहते थे कि देश को सही अर्थों में स्वाधीनता का फल चखने योग्य बनाने के लिए वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है। उन्हीं दिनों से उन्होंने इस बात पर जोर देना शुरू किया कि शरीर को सजाने-संवारने से अधिक आत्मा को सजाने-संवारने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक चिन्तन के ये विचार और संस्कार उन्हें मुख्यतः स्वामी योगेश्वरानन्द जी (तब ब्रह्मचारी व्यास देव जी) से तब मिले। सन् १९४२ में, जब उनकी उम्र केवल १५ वर्ष थी। उन्होंने स्वामी जी के आश्रम में रहकर योग साधना की। वे बताया करते थे कि स्वामी जी के आश्रम में भोजन बनाने का जिम्मा स्वामी जी का था और बर्तन मांजने का जिम्मा उनका (भारतेन्द्र जी)। उनके माता-पिता के संस्कार भी अत्यन्त शुद्ध थे।

कहा जाता है कि प्रत्येक समाजसेवी को समाज सेवा के क्षेत्र में कदम रखने से पहले आध्यात्मिक साधना अवश्य करनी चाहिये। अन्यथा उसके पथ-भ्रष्ट होने की संभावना बनी रहेगी। स्वामी योगेश्वरानन्दजी के आश्रम में योग साधना करने के बाद भारतेन्द्र जी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरुकुल जेहलम गये। वहाँ दोनों समय हवन-संध्या होती थी। गुरुकुल में रहकर भारतेन्द्र जी ने अपना सर्वस्व देश और समाज को अर्पित करने का व्रत लिया।

गुरुकुल से निकलकर उन्होंने युवकों को केवल वाणी से आध्यात्मिक शिक्षा देना ही प्रारम्भ नहीं किया, अपितु उन्हें आसान, प्राणायाम, व्यायाम आदि का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ उनका धर्म प्रचार का कार्यक्रम भी चलता रहा। फिर जब उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया, तब भी वे समाज को क्रांतिकारी विचार देते रहे। उनका चिन्तन लोक से हटकर—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मौलिक था। लेकिन मुक्त चिन्तन के नाम पर उन्होंने कभी अनंगल विचारों का प्रचार नहीं किया। उनके विचार वेदानुकूल थे। इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए उन्होंने वेदभाष्य और सत्साहित्य के प्रकाशन का व्यापक कार्यक्रम अपने हाथ में लिया।

वे जीवन में भोग की अपेक्षा त्याग को अधिक महत्व देने के पक्षधर थे।

हमारे धर्मग्रन्थों में देवियों को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। बीच में एक ऐसा अंधकार युग आया जब देवियों का तिरस्कार किया जाने लगा। भारतेन्द्र जी ने जो भी अच्छे काम किये—चाहे वे सत्साहित्य का प्रकाशन हो और चाहे दैनिक हवन यज्ञ, उनकी धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी जी ने सदैव आगे बढ़कर उनका साथ दिया। इसे भी उनकी सफलता का मुख्य कारण कहा जा सकता है।

भारतेन्द्र जी के विचार, उनका चिन्तन अबाधगति से चलता रहता था। अब यह बात मान ली गई है कि विचारों की जड़ता जिसे कभी-कभी विचारों की स्थिरता का नाम दे दिया जाता है कोई अच्छी बात नहीं। भारतेन्द्र जी पहले कट्टर कांग्रेसी थे। लेकिन पाकिस्तांन के भारत-द्वेष को देखकर उनके विचार बदले और वे हिन्दू समाज के प्रखर योद्धा के रूप में आगे आये।

२० दिसम्बर को उनकी पांचवीं बरसी पर उन्हें दी जाने वाली सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके अधूरे कार्य को पूरा करें। ★

पूज्य महात्मा वेदभिक्षु: की याद नहीं विस्मृत होती है।

नहीं ढूंढ़ने से मिलता इस आर्य सरोवर का मोती है।
पूज्य महात्मा वेदभिक्षु: की याद नहीं विस्मृत होती है।
दयानन्द संस्थान बनाकर था तुमने जनज्ञान निकाला।
हिन्दू रक्षा समिति तुम्हारी स्मृति की जगमग ज्योति है।।

—सत्यव्रत चौहान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य का उपदेश

प्राचीन काल में विद्या प्राप्त करने के पश्चात् जब ब्रह्मचारी द्विज बनकर अपने घर प्रत्यागमन करता था, तो आचार्य-गण उनको दीक्षान्त—उपदेश करते थे। यह उपदेश तैत्तिरीय उपनिषद् में पाया जाता है—

वेदमनूच्याचार्योऽन्ते वासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्र जातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयं सा ब्राह्मणास्तेयां त्वयासनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रध्दया देयम्। श्रिया देयम् ह्रिया देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणाः समदर्शिनो युक्ता अयुक्ता अलूक्षा धर्मकामाः स्युर्यथा ते तत्र वर्त्तेरन्। तथा तत्र वर्त्तेथाः। एष आदेश एष उपदेश एषा वेदोपनिषद्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्॥

अर्थ—आचार्य अन्तेवासी अर्थात् अपने शिष्य और शिष्याओं को इस प्रकार उपदेश करते हैं कि तू सदा सत्य बोल, धर्माचार कर, प्रमाद रहित होके पढ़पढ़ा, पूर्ण ब्रह्मचर्य से समस्त विद्याओं को ग्रहण कर और आचार्य के लिए प्रिय धन देकर विवाह करके सन्तानोत्पत्ति कर, प्रमाद से सत्य को कभी मत छोड़, प्रमाद से धर्म का त्याग मत कर, प्रमाद से आरोग्य और चतुराई को मत छोड़ा प्रमाद से पढ़ने और पढ़ाने को कभी मत छोड़। देव, विद्वान् और माता-पितादि की सेवा में प्रमाद मत कर। जैसे विद्वान् का सत्कार करे उसी प्रकार माता-पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा सदा किया कर। जो आनन्दित धर्मयुक्त कर्म हैं उन सत्यभाषणादि को किया कर, उनसे भिन्न मिथ्याभाषणादि कभी मत कर। जो हमारे सुचरित्र अर्थात् धर्म युक्त कर्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हों उनका ग्रहण कर और जो हमारे पापाचरण हैं उनको कभी मत कर। जो कोई हमारे मध्य में उत्तम विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मण हैं, उन्हीं के समीप बैठ और उन्हीं का विश्वास किया कर, श्रद्धा से देना, अश्रद्धा से देना, शोभा से देना, लज्जा से देना, भय से देना और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिए। जब कभी तुझको कर्म वा शील तथा उपासना-ज्ञान में किसी प्रकार का संशय उत्पन्न हो, तो जो वे समदर्शी, पक्षपात रहित योगी अयोगी आर्द्र चित्त धर्म की कामना करने वाले धर्मात्मा जन हों, जैसे वे धर्म मार्ग में वर्तें वैसे तू भी उसमें वर्ता कर। यही आदेश यही उपदेश, यही वेद की उपनिषद और यही शिक्षा है। इसी प्रकार वर्तना और अपना चाल-चलन सुधारना चाहिए। ★

साधना

बहिन राकेश रानी जी की कविता "आज ऋषि की साधना का अन्त होता जा रहा क्यों' के सन्दर्भ में।)

साधना का अन्त क्या होता कहीं है ?
चिर निरन्तर साधना की गति यहीं है ।।

एक लम्बी राह पर जब जब चले हैं।
तब तब पथिक के पाँव में छाले पड़े हैं।

'गहन तप' ही 'ज्योति' का है जन्म दाता।
'क्रान्ति पथ' का 'पथिक' क्यों यह भूल जाता ?

एक दृढ़ चट्टान बनकर, आँधियों को टालना तुम।
बहिन तुम हो वीर बाला, मत निराशा पालना तुम ।।

'शक्ति' को 'संघर्ष' में पलना पड़ा है।
और 'दीपक' को सदा जलना पड़ा है ।।

प्रति सिसकते प्रश्न का उत्तर यही है।
चिर निरन्तर साधना जीवित रही है ।।

ऐसा दीप बनो तुम जग में, आंधी जिसको शीश झुकाये।
तूफानों की शक्ति, तुम्हारी ज्योति प्रभा तक पहुंच न पाये ।।

—हरि मोहन सिंह कोठिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुजफ्फरनगर व अलीगढ़ के दंगों की वास्तविकता

—शिवकुमार गोयल

फर्रूखाबाद में २१ अक्तूबर को भगवान राम की शोभा यात्रा पर बम फेंके जाने तथा मुजफ्फर नगर, खतौली और अलीगढ़ में आठ अक्तूबर को शुरू हुए साम्प्रदायिक दंगों के पीछे निश्चय ही पूर्व नियोजित साजिश थी। यह वहां की घटनाओं का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है। बावरी मस्जिद एक्सन कमेटी के कुछ सदस्य मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में पहुंच कर भोले-भाले लोगों की धार्मिक भावनाएँ भड़काने में महीनों से लगे हुए थे। वे उत्तर प्रदेश सरकार को यह दिखलाना चाहते थे कि यदि उनकी मनमानी मांगों को स्वीकार नहीं किया गया तो वे सड़कों पर भी उतरने तथा कुछ नगरों को हिंसा की आग में झोंकने का सामर्थ्य भी रखते हैं।

श्री रामजन्म भूमि मुक्ति समिति तथा अन्य संगठनों ने बावरी मस्जिद एक्शन कमेटी के १४ अक्तूबर के प्रस्तावित अयोध्या मार्च के विरोध में ८ अक्तूबर को शांतिपूर्ण बन्द के आयोजन का आह्वान किया था। शांतिपूर्ण बन्द के दौरान हिंसा और आगजनी की पूरी साजिश रची गई। मुजफ्फरनगर, खतौली तथा अलीगढ़ की घटनाओं का बारीकी से अध्ययन करने के बाद यह साफ हो जाता है कि प्रशिक्षित दंगाइयों ने पहले से ही छुरे, चाकू, तेजाब, पेट्रोल तथा अवैध शस्त्रास्त्र इक्ट्ठे कर लिए थे। मुजफ्फरनगर में तो खुल्लम-खुल्ला शाँतिपूर्ण बन्द कराने वालों पर हमला किया गया। देखते ही देखते दंगाई भीड़ के रूप में सड़कों पर उतर आए तथा उन्होंने बसों, रिक्शाओं तथा सड़क पर चलते लोगों को छुरे घोंपने शुरू कर दिए। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि राज्य के गृह राज्य मंत्री श्री सईददुज्जमा के मुजफ्फरनगर में रहते हुए उन्हीं के क्षेत्र खालापार में हत्याओं व आगजनी का दौरदोरा रहा।

मुजफ्फरनगर के दंगों के लिए प्रशासनिक अदूरदर्शिता भी कम जिम्मेदार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है। गृह राज्य मंत्री श्री सईदुज्जमा को प्रसन्न करने के लिए प्रशासन के अधिकारियों ने रामलीला का रिहर्सल कर रहे युवकों को ही गिरफ्तार कर लिया। शिवसेना के कुछ कार्यकर्ताओं को अकारण बन्दी बना लिया गया। इन गिरफ्तारियों से पूरे शहर में क्षोभ की लहर दौड़ गई। ११ अक्तूबर को सभी दलों ने, जिसमें इंका के नेता तथा कार्यकर्ता भी शामिल थे, गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा करने की माँग की। शांति मार्च भी निकाला गया। साथ ही प्रतीक्षा कर रहे दंगाइयों ने चारों ओर एक साथ आगजनी, छुरेबाजी तथा पथराव शुरू कर डाला।

शांत जुलूस पर हथगोला

११ अक्तूबर की दोपहर के समय खालापार तथा सरपट क्षेत्र में हजारों दंगाई हाथों में हथियार लेकर निकल पड़े। नावेल्टी सिनेमा के सामने की गली से शांत भीड़ पर पत्थर फेंके गए हथगोला फेंका गया तथा एक छत से दंगाइयों ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं। देखते ही देखते एक वर्ग विशेष के लोगों को पकड़कर खींचकर गलियों में ले जाया जाने लगा तथा उन्हें छुरे मारे जाने लगे। दुकानों को आग लगाई जाने लगी।

खालापार, मल्हपुरा, लज्जवाला आदि क्षेत्रों में दंगाई सामूहिक रूप से घूम-घूमकर लोगों पर हमले कर रहे थे। "किंग टेलर्स" के मालिक के १६ वर्षीय पुत्र नन्दू को दंगाइयों ने पकड़ लिया तथा छुरों के अनगिनत वार कर उसकी नृशंस हत्या कर डाली। वेद प्रकाश, मनोज तथा चन्द्रभान को दंगाइयों ने छुरों से गोद डाला। एक कागज कारखाने के कर्मचारी शिवकुमार की चाकुओं से हत्या कर डाली। दंगाइयों की भीड़ ने मल्लपुरा क्षेत्र से गुजरने वाले एन० सी० सी० विभाग के क्लर्क निरंजन स्वरूप तथा उनके भाई रघुनाथ को घेर लिया। निरंजन की छुरों से हत्या कर दी गई तथा रघुनाथ को गंभीर रूप से घायल कर दंगाई भाग गए।

दंगाइयों ने रास्ते चलती रिक्शाओं को रोक-रोक कर यात्रियों तथा रिक्शाचालकों को चाकू घोंपे। आधा दर्शन रिक्शाचालक दंगाइयों के शिकार बन गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोहल्ला खादखाला में एक हरिजन युवती के साथ दुर्व्यवहार किया गया तथा बाद में उसकी हत्या कर दी गई। सबसे ज्यादा दुर्भाग्य की बात तो यह हैं कि गृह राज्य मन्त्री के नगर में रहते ये सब वारदातें होती रहीं। प्रशासन गृह राज्य मन्त्री से पहले ही आँतकित था अतः उसने दगाइयों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने का साहस नहीं किया।

मैं स्वयं ११ अक्तूबर को हो रही इन वारदातों के दौरान दंगाइयों से घिर गया था। मैं पत्नी श्रीमती सत्या गोयल के साथ कार से ऋषिकेश-हरिद्वार से पिलखुआ लौट रहा था कि मुजफ्फरनगर को दिल्ली रोड सड़क पर हमें दंगाँइयों की भींड़ ने घेर लिया। उग्रवादियों ने हमारे सामने हमारी कार से आगे खड़ी बस से कई यात्रियों को उतार-उतार कर छुरे मारे। वे हमारी कार पर हमला करने ही वाले थे कि मेरठ की ओर से आ रही रोडवेज की बस उनके बीच में आ गई और हमें अपनी कार को कच्ची सड़क पर उतर कर भागने का मौका मिल गया। काश ! वह बस बीच में न आई होती तो हम दूसरे ही क्षण या तो जला डाले जाते या छुरों का शिकार बना दिये गये होते।

अलीगढ़ में भी दंगा

अलीगढ़ में भी मुस्लिम बहुल, मोहल्लों में हिन्दूओं को खींच-खींचकर छुरे घोंपे गए। जयगंज डाकखाने के सामने ५५ वर्षीय लक्ष्मी नारायण के पेट में छुरा घोंप दिया गया। सासनी गेट बाईपास पर एटा निवासी रघुवीर सिंह को घेरकर छुरों से "हलाल" कर डाला गया। छतारी कम्पाउंड के सामने गंगा स्नान कर लौट रहे रमेश कुमार को स्कूटर पर सवार तीन मुस्लिम गुण्डों ने घेर लिया तथा चाकुओं से वार कर हत्या कर डाली।

अलीगढ़ में खुले रूप में छुरे बाजी की वारदातें मुस्लिम उपद्रवियों ने की किन्तु प्रशासन ने भाजपा नेता श्री कृष्ण कुमार नवमान आदि को ही गिरफ्तार कर लिया। शायद प्रशासन निरपराध हिन्दुओं को ही गिरफ्तार करना "धर्मनिरपेक्षता" का सर्वोत्तम उदाहरण मानता है।

मुजफ्फरनगर जनपद के कस्वा खतौली में साम्प्रदायिक तत्वों ने वायुसेना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभाग के अनंगपाल सिंह दहिया को होली चौराहे पर धर दबोचा तथा मोटर साइकिल सवार तीन बदमाशों ने उन्हें छुरे के प्रहारों से मार डाला। पुलिस ने मौके पर ही परवेज जैदी तथा उनके साथियों को रंगे हाथों पकड़ लिया। इन वारदातों के बाद ११ अक्तूबर को मुजफ्फरनगर को सेना के हवाले किया गया।

मुजफ्फरनगर में उपद्रवियों के हौसले इतने बुलन्द थे कि उन्होंने पाँच सैनिकों को एक गली में घेर लिया तथा उनकी स्टेनगन छीनने का प्रयास किया। सेना को गोली चलानी पड़ी तब जाकर उन सैनिकों को बचाया जा सका। १३ तथा १४ अक्तूबर को उपद्रवियों ने कई जगह सेना तथा पी०ए०सी० पर हमले भी किए।

मैंने मुजफ्फर नगर के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया तो कई प्रत्यक्ष-दर्शियों ने बताया कि कुछ उपद्रवी खुले रूप में राष्ट्रविरोधी नारे लगाते घूम रहे थे। ११ अक्तूबर को तो मुजफ्फर नगर पर जैसे उपद्रवियों का ही नियंत्रण हो गया था।

सैयद शाहबुद्दीन, जामा मस्जिद के इमाम सैयद बुखारी तथा अन्य कट्टर पंथी तत्व वर्षों से अलगाववाद के जो बीज बो रहे थे, लगता है वे अब साम्प्रदायिक दंगों के रूप में फल देने लगे हैं। उन्हें रोकने के लिए यह आवश्यक है कि वोटों के लिए तुष्टीकरण की घातक नीति तुरन्त बन्द की जाये अन्यथा उत्तर प्रदेश भी कहीं पंजाब न बन जाये? ★

स्वामी श्रद्धानन्द जी का उत्कृष्ट उदाहरण युवक-पीढ़ियों के लिए स्फूर्ति का स्रोत होगा, जो सदा उनमें आत्म-त्याग, तपस्या और कष्ट-सहन की भावना का विकास करने वाला होगा। —पं. मदनमोहन मालवीय

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए सजीव मॉडल चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुंशीराम) की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेण्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना माँगेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा। —रेम्जे मैक्डानल्ड (भू. पू. ब्रिटिश प्रधानमन्त्री)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों में राष्ट्र-निर्माण की कल्पना

—हरि

वेदों में राष्ट्र के निर्माण, संवर्धन तथा उसकी सेवा और अभिवृद्धि से सम्बन्धित अनेक मंत्र हैं जो इस तथ्य के जीते जागते प्रमाण हैं कि हमारे पूर्वज ऋषि यह जानते थे कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक राष्ट्र की समृद्धि-अभिवृद्धि में सहायक हो सकता है। ये सारे मन्त्र आज भी हम हिन्दुओं को राष्ट्रनिष्ठ बनाकर, राष्ट्र की भारी सेवा करने की सतत प्रेरणा कर सकते हैं।

ऋग्वेद (१०,१७३.२) और अथर्ववेद (६.८७.२) के मन्त्रों में कहा गया है कि जिस प्रकार एक भवन के निर्माण में, वास्तुविद् से लेकर एक साधारण श्रमिक तक का समान महत्त्व है, उसी प्रकार राष्ट्र-निर्माण के कार्य में हर नागरिक का सहयोग समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। हर नागरिक अपनी-अपनी योग्यता, क्षमता और कर्मठता के आधार पर अपने राष्ट्र को एक आदर्श, और सर्वगुणसम्पन्न राष्ट्र बनाने में सहायक हो सकता है।'

प्रत्येक भारतीय को इन मत्रों की सीख को हृदयंगम कर लेना चाहिये, कारण कि वे आज भी उतने ही प्रासंगिक और उपयोगी हैं, जितने तब थे, जब हजारों वर्ष पूर्व उनकी रचना हुई थी। उदाहरणार्थ उपरोक्त मन्त्रों की सीख को यदि आज के भारतीय अमल में लाना आरम्भ कर दें, तो उन्हें अपने इस कर्तव्य का भली भाँति भान हो जायेगा कि जिस प्रकार एक परिवार के सब सदस्य मिल-जुल कर सारे परिवार के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र की प्रगति में प्रधान-मन्त्री से लेकर चपरासी तक सब अपना सार्थक योगदान दे सकते हैं।

ये वैदिक मन्त्र हम भारतीयों को यह सीख भी देते हैं कि राजनीति में—और कम-से-कम भारतीय राजनीति में—दलों की कोई आवश्यकता नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दलगत राजनीति ही प्रायः भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

ऋग्वेद के एक मन्त्र (५.५.२) में राष्ट्रनेताओं को राष्ट्रयज्ञ का नेता घोषित करते हुए, कहा गया है, राष्ट्रनेता राष्ट्रयज्ञ का सुसंचालन कर सकता है। इस मन्त्र में राष्ट्रनेता के लिए नराशंस (जो नरों में शंसनीय, प्रशंसनीय हो) कहा गया है। वर्तमान सदर्भ में नराशंस को राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री कहा जायेगा। मन्त्र में कहा गया है 'नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कवि हि मधुहस्त्यः।' इस राष्ट्रयज्ञको दंभरहित मेधावी नराशंस ही सुसंचालित करता है।)

राष्ट्रनेता का पहला गुण बताते हुए इस मन्त्र के रचनाकार ऋषि कहते हैं, 'उसे जनता के साथ दम्भ, छल, कपट, या धूर्तता के साथ पेश न आकर सत्य और सदाचार पर आधारित नीति से कार्य करना चाहिए।'

लेकिन राष्ट्र को शक्तिशाली और समृद्ध बनाने के कार्य में राष्ट्रनेता के अलावा जनता को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। जनता की इसी भूमिका का संकेत ऋग्वेद के इस मन्त्र में दिया गया है।

'मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम्।
इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्रणयता सखायः।'

(ऋ० .., १०१.२)

अर्थात 'नागरिकों! उत्साहवर्धक कर्म करो, और ऐसी योजनाओं का जो राष्ट्र को सुसंगठित, समुन्नत और शक्तिशाली बनाती हैं, विस्तार करो। शत्रु से रक्षा करके पार ले जाने वाली नौका बनाओ, अन्नभण्डार को भरो और बढ़ाओ।'

इस प्रेरक मन्त्र में यह भाव निहित है कि कोई भी नागरिक आत्मसुधार के बिना राष्ट्र की सर्वोन्नति में अपना योगदान नहीं दे सकता। और, इस सर्वोन्नति में सहायक होने के लिए, प्रत्येक नागरिक को अपने अन्दर साहस, नैतिक बल और आत्मविश्वास भरकर स्वसुधार करना होगा। राष्ट्रवर्धन की योजनाओं को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके प्रत्येक नाग-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क के मन में साहस, आत्मविश्वास और उत्साह का सागर हिलोरें मार
रहा हो।

आठ राष्ट्रविभूतियां

वेद में यह भी बताया गया है कि स्वयं राष्ट्र को किन आठ विभूतियों से
युक्त होना चाहिए। अथर्ववेद के एक मन्त्र (१ .५.८) में कहा गया है।

'ब्रह्म च क्षत्रं राष्ट्रं च विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्यश्च द्रविणं च।'

अर्थात् राष्ट्र की आठ विभूतियां हैं—शिक्षा व शक्ति, राष्ट्रभावना व
मानवीयता, ज्योति व यश, तथा तेज व धन।'

ब्रह्म (सुशिक्षा) जो राष्ट्र की प्रथम विभूति है, के सिद्ध होने पर ही,
अन्य विभूतियां सिद्ध हो सकती है; सच तो यह है कि तब वे सरलता से सिद्ध हो
सकती हैं। दूसरी विभूति है, क्षत्रम् (हिंसा से रक्षा करने वाली शक्ति), जो
उत्तम स्वास्थ्य और प्रभावशाली सैन्यबल पर जोर देती है। तीसरी विभूति
है—राष्ट्रभावना, जिसके अभाव में राष्ट्र का कोई भी नागरिक राष्ट्र के हित
में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को प्रेरित नहीं हो सकता। चौथी विभूति है—
विश (मानवता), जो राष्ट्र की प्रत्येक नीति को मानवीय बनाती है, और
उसे पाशविक नहीं होने देती। साथ ही, यह राष्ट्र के हर नागरिक को समान
अधिकार, अवसर, कर्तव्य व लाभ दिलाती है। पांचवीं विभूति है—(ज्योति),
जो राष्ट्र के हर नागरिक को ज्ञान-विज्ञान की ज्योति प्रदान करती है, जिसके
कारण राष्ट्र और विश्व की घटनाओं से परिचित रहता है। यश है, राष्ट्र की
छठी विभूति, जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राष्ट्र की व्यावसायिक, साम-
रिक, आर्थिक व सांस्कृतिक ख्याति बनी रहती है, और अन्य राष्ट्रों से उसके
सम्बन्ध मधुर बने रहते हैं।

राष्ट्र की सातवीं विभूति को वर्य की संज्ञा प्रदान की गयी है। वर्य के
अर्थ हैं—तेज और दीप्तिमय सौंदर्य। यह विभूति राष्ट्र के ग्रामों, नगरों, वनों
मार्गों आदि को स्वच्छ और आकर्षक रखने के अतिरिक्त, हर नागरिक को
स्वस्थ और तेजस्वी बनाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र की अन्तिम और आठवीं विभूति है—द्रविण (धन)। इस वि के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में राष्ट्र की साख बनी रहती है, और नागरिकों की आर्थिक स्थिति उत्तम होती है, जिसके कारण वे पूर्णतया चि रहित जीवन व्यतीत करते हैं।

राष्ट्रपति राष्ट्र की सुरक्षा के लिए समर्पित

वेद का कहना है कि राष्ट्रपति (प्राचीन काल का राजा, और आज प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति) शक्तिशाली, साहसी व नीतिनिपुण होना चाहि उसके कर्तव्य क्या हैं, और वह राष्ट्र के हितों के प्रति किस प्रकार सचेत सकता है, यह यजुर्वेद के इस मन्त्र (९.२३) में बड़े सुन्दर ढंग से ब गया है।

'वाज (ज्योति, शक्ति और संग्राम के तीनों परस्परपूरक व्यक्त करने वाला एक ही शब्द) का ऐश्वर्य में प्रथम, औषधि प्रजाओं इस सोम राजा को प्रसवता हूँ। वे प्रजाएँ हम पुरोहित नागरिकों के लिए हों, और हम पुरोहित स्वाहुतिपूर्वक राष्ट्र में जागते रहें।'

इस मन्त्र द्वारा राष्ट्र राष्ट्र-पुरोहितों और नागरिकों को सम्बोधित हुए कहता है, 'हे राष्ट्र-पुरोहितों और नागरिकों ! तुम पहले सोमरूप र पति (राजा) को प्रस्थापित करो, और बाद में प्रजाओं को मधुर और औ रूप बनाओ। और, अन्त में, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहते हुए राष्ट्र की में सदा जागते रहो।'

वेद का आदर्श राष्ट्रपति (राजा) सब कलाओं से कलाचित और पूर्ण के चन्द्र के समान निष्कलंक होना चाहिये। एक जीवित राष्ट्र ज्योति, श और संग्राम-क्षमता से युक्त होना आवश्यक है। ऐसे राष्ट्र की प्र आवश्यकता उत्तम राष्ट्रपति होती है। वेदों का आदेश है कि रा (राष्ट्रपति) का चुनाव प्रजा द्वारा होना चाहिए। और, जाग विवेकी और राष्ट्र के हितों को सर्वोपरि मानने वाली प्रजा सदा शक्तिशाली, निडर, व्यवहारकुशल राजा (राष्ट्रपति) का ही चु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रती है।

हमारे सामने, पुरोहित का नाम लेते ही, कर्मकाण्डी ब्राह्मण का चित्र आ ता है। किन्तु, वेदों में पुरोहित के अर्थ हैं—अग्रगामी और राष्ट्र की सेवा उन्नति में सदा उपस्थित रहने वाला व्यक्ति। ऐसे पुरोहितों में राष्ट्रप्रेम उत्कट भावना होती है, और वे सदा राष्ट्र के हितों की रक्षा के लिये सतर्क ते हैं। वे अपना सब कुछ राष्ट्र की खातिर होम करने के लिए तैयार रहते और सदा लोगों को ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं, जिनमें ट्र की उन्नति और प्रगति हो।

ऋग्वेद के एक मन्त्र (१.७३.३.) में भी अच्छे राजा के गुणों और लक्षणों वर्णन किया गया है।

मन्त्र में राजा उसे कहा गया है, जो राज्य का रंजन करता हो, र जिसके हाथों में राज्य की बागडोर हो। प्रजातन्त्र में राजा उसे ा जाता है, जो राजतन्त्र का सूत्रधार हो। संक्षेप में, राजा वह जो ज्यनेता हो।

आदर्श राजा निष्पक्ष रहकर अपनी प्रजा के लोगों के साथ न्यायपूर्वक और ता का व्यवहार करता है, और अपनी प्रजा के पालनपोषण और उसकी द्धि को अपनी समृद्धि मानता है। वह सब नागरिकों का हितैषी, मित्र और वास पात्र होता है। अपनी प्रजा और अपने देश की रक्षा के लिए, वह ा आगे बढ़कर लड़ता है, पीछे से अपने सेनाध्यक्षों को आदेश नहीं देता। जितेन्द्रिय होता है, और इसलिए परम वीर भी। दाम्पत्य पवित्रता उसका अनिवार्य गुण है।

ऋग्वेद का एक अन्य मंत्र (१.४१.३) भी धर्मात्मा राजा के गुणों के षय में है। मंत्र के अनुसार, धर्मात्मा राजा वे होते हैं, जो राष्ट्र के शत्रुओं भस्मसात् कर डालते हैं, और अपनी प्रजा पर अत्याचार करने वालों का ाया कर देते हैं।

राजा को राष्ट्रघातियों को समाप्त करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाना हिए, यह बात ऋग्वेद के जिस मंत्र (१.१००.१८) में कही गई है, उसका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार यह है कि वह (राजा) ऐसे लोगों से सावधान रहे, जो ऊपर से राष्ट्र
बने रहते हैं, किन्तु अन्दर-ही-अन्दर राष्ट्र के शत्रुओं से मिले होते हैं, और
कों सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन जाते हैं।

दलबन्दी और भ्रष्टाचार का उन्मूलन—

राष्ट्रप्रेमियों को भ्रष्टाचार और दलबन्दी के कारण होने वाले राष्ट्र
अध:पतन के प्रति सावधान करते हुए दूरदर्शी वैदिक ऋषि ऋग्वेद के
मंत्र (८.३७.२१) में कहते हैं :

'वि षु द्वेषो व्यंहतिमादित्यासो विसंहितम्। विष्वग् वि वृहता रपः'।

इस मंत्र में मातृभूमि के पुत्रों को सम्बोधित करते हुए ऋषि कहते हैं
आदित्यो (मातृभूमि के सुपुत्रो) ! यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी मातृ
अदम्या, अदीना और सशक्ता बनी रहे, तो तुम्हें निम्नलिखित इन चार
कारणों को दूर करना होगा, जिनसे राष्ट्र का बल क्षीण होता है।

पहला मूल कारण है-द्वेषभाव। जिस राष्ट्र के नागरिक एक दूसरे से
करते हैं, वे कभी एक नहीं हो पाते, और अनेकता के भंवर में फँसकर
तो डूबते ही हैं, साथ में अपने राष्ट्र को भी ले डूबते हैं।

दूसरा मूल कारण है—अपराधवृत्ति। जिस राष्ट्र के नागरिक राष्ट्र
नियमों का उल्लंघन कर, अपराध करने लगते हैं, उसका पतन होते देर
लगती।

तीसरा मूल कारण है—दलबंदी। दलबंदी से राष्ट्रीय एकता भंग
है, और उसकी सुरक्षा और समृद्धि क्रमश: नष्ट होने लगती हैं।

चौथा मूल कारण है—भ्रष्टाचार। जिस राष्ट्र में भ्रष्टा
व्याप्त हो जाता है, वह घुन खायी लकड़ी की तरह बेकार और कम
हो जाता है।

राष्ट्र की कमजोरी सबकी कमजोरी

राष्ट्रसंपदा को राष्ट्र के साथ-साथ कैसे अक्षुण्ण रखा जाये, इसका
उत्तम उपाय ऋग्वेद के जिस मंत्र (७.३२.९) में वर्णित है, उसमें सब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेमियों से स्पष्ट कहा गया है कि वे इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि किसी राष्ट्र की कमजोरी, उस राष्ट्र के सब नागरिकों को कमजोर बना देती है।

और राष्ट्र कैसे कमजोर बनता है, इस प्रश्न का उत्तर मंत्र में इन शब्दों में दिया गया है :

'किसी भी राष्ट्र का जितना अहित आपस की फूट और स्वार्थी नागरिकों से होता है, उतना और किसी बात से नहीं होता।" यदि आप भारत के प्राचीन इतिहास की घटनाओं को याद करें, तो आपको विश्वास हो जायेगा कि भारत जब-जब पराधीन हुआ है, तब-तब उसका कारण आपसी फूट ही था जो नागरिक व्यसनी, भोग-विलासी, प्रमादी और स्वार्थी हो जाते हैं, वे स्वयं तो नष्ट होते ही हैं, अपने साथ-साथ अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी नष्ट कर देते हैं।

ऋग्वेद का यह मंत्र हमें यह सीख देता है कि देश की अखंडता, सर्वतोमुखी उन्नति और प्रगति के लिए सब देशवासियों को मिलजुलकर प्रयास करना होगा। यदि थोड़े से भी देशवासी देश को लूटने-खसोटने में लगे रहेंगे, तो देश कभी सुखी और समृद्ध नहीं बन सकता। सबकी समृद्धि में ही देश की समृद्धि है। राष्ट्र सुखी, संपन्न और शक्तिशाली तभी बनता है, जब देश के सब नागरिक अपने को सुखी, संपन्न और शक्तिशाली बनाने में व्यस्त रहते है।

स्वराष्ट्रोदय की सुयोजना

स्वराष्ट्र को सर्वगुणसम्पन्न, समुन्नत, समृद्ध और शक्तिशाली कैसे बनाया जा सकता है, इस बारे में भी वैदिक ऋषियों ने काफी चिंतन किया था। ऋग्वेद के इस मंत्र में स्वराष्ट्रोदय के जो सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं, उन्हें अमल में लाकर, आज भी हम भारतवासी अपने दुर्दिनों को सुदिनों में परिवर्तित कर सकते हैं. तथा भारत की सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक शक्तियों का पूर्णरूपेण वर्धन कर सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंत्र में कहा गया है :

"जातो जायते सुदितत्वे अह्नां समर्थ आ विदथे वर्धमानः ।
पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देवया विप्र उत्यर्ति वाचम् ॥"

(ऋ. ३.८.४)

अर्थात् "सामरिक क्षमता और यज्ञियता में बढ़ता हुआ कुलीन दिनों के सुदिनत्व में सर्वतः प्रकट होता है। धीर बुद्धि द्वारा कर्म, प्रजाओं को पवित्र करते है। ज्ञानी दिव्यता की उपासक वाणी को उच्चारता है।"

सज्जन वर्ग का नेतृत्व ही राष्ट्र की विविध क्षमताओं और नैतिक बल को बढ़ाकर, राष्ट्र में कुशल शासन की स्थापना कर सकता है। जहां तक प्रजा राष्ट्र के नागरिकों का प्रश्न है, मंत्र कहता है, यथा कर्म तथा प्रजा, यथा प्रजा तथा कर्म। सज्जन वर्ग का नेतृत्व मेधावी, सिद्ध पुरुषों (विप्रों) का सम्मान करता है, और इस प्रकार समाज के वातावरण को पवित्र बनाता है। संक्षेप में, स्वराष्ट्रोदय की त्रिसाधना सज्जन वर्ग के नेतृत्व, विप्रों द्वारा धर्म-प्रचार और कामनारहित, शांत और धैर्यवान व्यक्तियों द्वारा प्रजा को पवित्र बनाने का प्रयास, इन तीनों के बल पर ही संभव हैं। भ्रष्ट नेतृत्व और स्वार्थी-बुद्धिजीवी पंडित तो देश को विनाश के गड्ढे में ले जाकर डाल सकते हैं।

आदर्श राष्ट्र

आदर्श राष्ट्र की जो कल्पना हमारे पूर्वजों के मन में थी, इसका आभास यजुर्वेद के एक मंत्र (२२.२२) से मिलता है, जिसका भावार्थ इस प्रकार है, 'हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ज्ञान-दीप्ति से युक्त हो, क्षत्रिय शूर, शस्त्रधारी और शत्रुओं को परास्त करने वाला हो, गौ दूध देने वाली हों, बैल वहनसामर्थ्य से युक्त हों, अश्व शीघ्रगामी हों, युवती पुरधारिका हो, युवक विजयशील वीर और सभाकुशल हों, पर्याप्त वर्षा हो, औषधियां हमारे लिए फलवती होकर तैयार हों, तथा हमारा योगक्षेम हो।'

शिष्ट नागरिक बनने के आदेश

अथर्ववेद का एक मंत्र (३,३०,४) राष्ट्रीय शील के बारे में उपयोगी सीख प्रदान करता है। इस मंत्र का अर्थ है। 'समृद्धि संपादन करते हुए, धुर-युक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्य करते हुए, बड़ों का सम्मान करने वाले चेतनावान तुम आपस में मत लड़ो। एक दूसरे के लिए अच्छी बात बोलते हुए आगे बढ़ो।'

यह मंत्र भारत राष्ट्र के हर नागरिक को आज भी यह शिक्षा देता है कि उसे सदा अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए, और दूसरों के साथ शालीनता के साथ पेश आना चाहिये। किसी की आलोचना भी करनी हो, तो वह भी शालीनता के साथ ही करे। जो कार्य करे, सहृदयता और राष्ट्र के हित को ध्यान में रखते हुए करे। तथा, अन्य नागरिकों के साथ कटुता, हिंसा और विद्वेषपूर्ण ढंग से पेश न आयें। हर नागरिक को अभिव्यक्ति की पूरी स्वतन्त्रता है, लेकिन इस स्वतंत्रता पर शालीनता और शीलवत्ता की जो मर्यादाएं हैं, उनका उल्लघन किसी भी हालत में नहीं होना चाहिये।

शक्तिशाली राष्ट्र

अथर्ववेद के एक मंत्र में यह बताया गया है कि सुरक्षा के लिए राष्ट्र को कितना शक्तिशाली होना आवश्यक है। इसमें यह शिक्षा भी निहित है कि राष्ट्र के नेताओं को उन देशों की ओर से सदैव सतर्क और सावधान रहना चाहिये, जो उनसे वैर करते हैं, और सदा उस पर आक्रमण करने की घात में रहते हैं। उन्हें यह मान लेना चाहिये कि ऐसा देश उन पर कभी-न-कभी हमला करेगा ही। इससे पूर्व कि वह उन पर आक्रमण करे, उन्हें उसकी शक्ति को नष्ट करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए, ताकि वह आक्रमण हो ही न सके।

यह मंत्र राष्ट्र के नेताओं को नेक सलाह भी देता है कि वे प्रत्येक नागरिक को सैनिक शिक्षा प्रदान कर उसे आवश्यकतानुसार सशस्त्र करें, ताकि वह युद्ध के समय अपने शौर्य और साहस का प्रदर्शन कर सके।

वेदों में युद्ध-निषेध की पूर्व कल्पना

वेद में सर्वत्र दूसरों पर आक्रमण करने का निषेध किया गया है। वेद के अनुसार, युद्ध तभी स्वीकार्य है, जब वह आत्म-रक्षार्थ लड़ा जाये। वेद की सीख है कि सब राष्ट्रों को सारे विवाद विमर्श तथा सौहार्दपूर्ण बातचीत के द्वारा निपटाने चाहिये। वेद रक्षार्थ किये गये युद्ध को अंतिम साधन मानता है, और यह भी मानता है कि युद्ध सदा विनाशकारी है।

यद्यपि हमें युद्धों को टालने का भरसक प्रयास करना चाहिए, तथापि कभी-कभी परिस्थितियां इतनी विकट हो जाती हैं कि अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा करने और हमलावरों से अपने देश के विजित क्षेत्रों को पुन: अपने अधिकार में लेने लिए युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग्वेद का यह मंत्र (६.६६.१) हमें बताता है कि अपने देश की स्वतं की रक्षा के लिए हमें सदव सनिक दृष्टि से तैयार रहना चाहिये, चाहे की संभावना हो या न हो।

प्रजातंत्र, साम्यतंत्र, समाजतंत्र और धर्मतंत्र

यह एक आम खयाल है कि साम्यवाद, समाजवाद और प्रजातं आस्था रखने वाले राष्ट्रों का प्रादुर्भाव वर्तमान काल और सभ्यता की ही है। लेकिन अथर्ववेद के एक मंत्र (१६.४१.१) के पारायण से ज्ञात हो जा है कि प्राचीन भारत में जो धर्मतन्त्र प्रचलित था, उसमें शासन के आठों तन्त्रों का समावेश था, जो आजकल प्रचलित हैं—एकतन्त्र, सीमि एकतन्त्र, प्रजातन्त्र, सर्वाधिकारतन्त्र, समाजतन्त्र, साम्यतन्त्र, संघतन्त्र अ विश्वशासनतन्त्र। इसका कारण यह है कि हर तंत्र की सफलता उसके संचाल (राष्ट्रपति या राजा) के सदाचार पर निर्भर करती है। जो शासन-पद्ध धर्मात्मा और सदाचारी शासकों द्वारा संचालित नहीं होती, उसमें निरंकुश आ जाती है, और अधिकारी वर्ग अधिनायक बनकर असहाय नागरिकों अत्याचार करना आरम्भ कर देते हैं। सदाचारविहीन राजनीति द्वारा शासि राज्य में नागरिक सदैव त्रस्त और आतंकित रहते हैं, और शासन-तन्त्र धी धीरे सर्वाधिकारतन्त्र में बदल जाता है।

तीन प्रकार के राष्ट्र

अथर्ववेद के एक मंत्र (१२.१.८) में बताया गया है कि राष्ट्र तीन प्र के होते हैं—उत्, उत्तर और उत्तम। उन्नत राष्ट्र को उत् कहा जाता विश्व के सर्वाधिक उन्नत राष्ट्र को उत्तम माना जाता था।

वेद के अनुसार, आर्यावर्त वैदिक काल में केवल (भारतवर्ष) को उ राष्ट्र माना जाता था।

वेद की शिक्षाएं सारे विश्व के लिए हैं

अंत में, यह याद दिलाना आवश्यक है कि वेदों के उपरोक्त मन्त्रों शिक्षाएँ सिर्फ भारतवर्ष को ध्यान में रखकर नहीं दी गयी हैं, कारण ये शिक्ष सब देशों, राष्ट्रों और वर्गों के लिए हैं। यही कारण है कि इन मन्त्रों में कहीं राष्ट्र या समुदाय का नाम नहीं है। कोई भी राष्ट्र या समुदाय इन शिक्ष से लाभान्वित होकर तेजी से प्रगति-पथ पर अग्रसर हो सकता है।

आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि लाभान्वित होने के लिए राष्ट्र समुदाय को इन शिक्षाओं के अनुरूप आचरण करना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षक प्रचार साहित्य

1.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2.	भारत के मुसलमानों का क्या करें?—महात्मा वेदभिक्षु :	60 पैसे
3.	हिन्दुओं को चेतावनी—महात्मा वेदभिक्षु:	60 पैसे
4.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	6 रु०
5.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1) 20 पसे
7.	इस्लाम में क्या है ?--पंडिता राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
11.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का सन्देश—पंडिता राकेशरानी	60 पैसे
12.	A Challenge to the Christian Faith	30 P.
13.	पोप की सेना का भारत पर हमला—महात्मा वेदभिक्षु:	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15.	बाइबिल को चुनौती	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था !	60 पैसे
17.	···और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 R.
19.	The Clorion Call	60 P.
20.	न-ज्ञान मासिक का "जय हिन्दू विशेषांक"	6 रु०
21.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पसे
22.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा देश का संकट भागेगा	60 पैसे

हिन्दू रक्षक साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 51 प्रतिशत और 100 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम 1/4 धन अग्रिम अवश्य भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चों से आप कैसे बोलते हैं

—निशा व्यास

सलीका चाहिए फूलों से गुफ्तगू के लिए···और बच्चे फूल ही तो होते हैं। उनसे या उनके सामने आप जिस प्रकार की या जिस लहजे में बात करेंगे वे वैसा ही सीखेंगे। यानी बड़ों पर निर्भर हैं कि अपने व्यवहार से छोटों को क्या सिखाते हैं। यह बड़ों के लिए ज्यादा मुश्किल भी नहीं है। कुछ बातों को ध्यान में रख कर किस तरह आप बच्चों को "बदतमीज" होने से बचा सकते हैं ?

इस बच्चे के मारे तो मेरा नाक में दम है। ज़रा भी अक्ल नहीं सामने वाले बच्चों को देख कितने समझदार हैं।

हे भगवान, यह बच्चा है या मुसीबत, ऐसे बच्चों से तो बच्चे का न होना ही अच्छा, इसकी उम्र के बच्चे को देखो और इसे देखो।

आये दिन इस तरह के शब्द हमें हर घर में सुनाई देते रहते हैं। अनपढ़ या अर्द्धशिक्षित मां-बाप ही ऐसा बोलते हैं, ऐसी बात नहीं। अच्छे पढ़े-लिखे मनोविज्ञान लेकर एम० ए० पास करके भी कितने ही मां-बाप ऐसे मिल जायेंगे जो हरदम अपने बच्चों के आगे अपने आस-पड़ोस के बच्चों को देख उनके उदाहरण रखते हैं···फलां के बच्चों को देखो कैसे पढ़ते हैं, कैसे काम करते हैं, आदि-आदि।

भोले-भाले मासूम बच्चों पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है, यह कोई नहीं सोचता। पहले तो बच्चों के दिमाग में यही बात आती है कि आप भी फलां-फलां के मां-बाप को देखिये, कैसे उनके लिए उपहार लाते हैं, कैसे प्रेम से बात करते हैं और वहीं से बच्चों के दिल में मां-बाप के प्रति विद्रोह के बीज फूटते हैं, यहीं से विरोधाभास उठता है जो रेल की समानान्तर पटरियों की तरह कभी कम नहीं होता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मां-बाप समझते हैं कि हम उदाहरण देंगे तो बच्चा जल्दी सीखेगा मगर यहीं वे भूलते हैं, इस तरह से कुछ सिखाया नहीं जा सकता। ऐसे उदाहरण से तो बच्चों के मन में केवल विरोध, नफरत व ईर्ष्या ही पैदा होती है।

इस सन्दर्भ मैंने कितने ही बारह वर्ष तक की उम्र वाले बच्चों से मुलाकात की। अधिकतर बच्चे प्रश्न का उत्तर अच्छी तरह नहीं दे पाये, मगर इतना जरूर सबने कहा—कि उन्हें दूसरे बच्चों की तारीफ, उनके उदाहरण कभी अच्छे नहीं लगते। अमीर, गरीब सभी बच्चों ने यह कबूल किया कि जिन-जिन बच्चों की तारीफ मां-बाप करते हैं, वे योग्य होने पर भी उन्हें अच्छे नहीं लगते। उनसे ईर्ष्या व नफरत ही होती है जबकि कक्षा में प्रथम आये सहपाठी पर गर्व होता है। अन्तर क्यों, यह कोई बच्चा समझ नहीं पाया, मगर कारणों से स्पष्ट है कि उस बच्चे से घर में तुलना नहीं की जाती है।

इसीलिए आवश्यक है कि बच्चों के सामने कभी इस तरह के उदाहरण नहीं दिए जायें, उनमें इर्ष्या या नफरत या हीन भावना उत्पन्न न हो। पड़ोस के बच्चे की तारीफ करने की बजाय हम खुद अपने बच्चे के लिए ऐसा वातावरण बनायें कि वह अपने आप पड़ोस के बच्चों के गुणों के प्रति आकर्षित होने लगे, उसमें रुचि लें व उसका अनुकरण कर अच्छी बातें सीखने का प्रयास करें।

बच्चे की उपेक्षा न करें :—

१. बारह वर्षीय रोहित बड़ी ही तल्लीनता के साथ एक पुस्तक पढ़ रहा था। मैंने उसके पास जाकर देखा तो अन्दर तक कांप गयी। बड़ी ही घटिया किस्म की किताब थी वह। मारधाड़ व हिंसा, फिल्मी प्यार और उत्तेजक संवाद। क्या आप जानते हैं कि साहित्य के नाम पर आज के बच्चे क्या पढ़ रहे हैं?

२. पिछवाड़े की गली में अचानक शोर होने लगा है। मैं दरवाजे के समीप जा पहुंचती हूं। मां-बहन की गाली देते हुए बच्चे झगड़ रहे हैं, झगड़े का कारण है जुआ। जी हां, चौंकिये मत। ये दस, बारह, चौदह वर्ष की आयु के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चे जुआ खेल रहे थे। बातचीत में फूहड़ हरकतें। फिल्मी डायलागबाजी, गाली-गलौज, बीच-बीच में बीड़ी-सिगरेट के कश! यह सारा वर्णन किसी खास गली, नगर या महानगर का नहीं है। आपके आसपास ही यह सब घटित हो रहा है। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है?

३. चार वर्ष का सोनू मुंह पर काजल पोते, हाथ में बंदूक उठाये, डाकू बना अपनी मां को धमका रहा है-पैसे निकाल, जरा भी चूं हुई तो पसलियों का चूरा बन जायेगा।

४. चौदह वर्षीय राजू चुपके से घर में घुसता है और तीस रुपये अपने पिता के पर्स से निकाल लेता है। पकड़े जाने पर पता चलता है कि उसे ऋण चुकाने थे। सिगरेट एवं फिल्मों के लिए पैसे उधार लिए थे उसने।

५. ग्यारह वर्ष का एक बालक स्कूल की किताब बेच रहा है, क्योंकि फिल्म देखना है।

६. सोलह साल की किशोरी घर के काम के बहाने स्कूल से छुट्टी लेती है। बाद में पता चलता है कि वह स्कूल से घर नहीं गयी, बल्कि अपने प्रेमी के साथ कहीं चली गयी है।

यह सब आपके आसपास, आपके घरों में घटित होता है आप और हम आंख मीचकर बैठे हैं।

कभी आपने गंभीरता से कुछ सोचा है कि यह सब क्यों हो रहा है, इन्हें रोकने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

बच्चे की प्रथम पाठशाला उसका अपना घर है जहां वह प्रथम पाठ पढ़ता है। क्या वह पाठशाला, इसके गुरु इतने सक्षम हैं कि बच्चे सही ढंग से अपने पाठ पढ़े, समझें। पहले संयुक्त परिवार थे। बच्चों पर दादा-दादी, चाचा, बुआ आदि का प्रभाव रहता था। आज केवल मां-बाप ही होते हैं। पति के आफिस जाने के बाद जब औरतें इकट्ठा होती हैं तो उनकी बातचीत का मुख्य विषय फिल्में होती हैं या एक दूसरे की बुराई। फलां की बहू घूंघट काढ़े बगैर बरामदे पर खड़ी थी, फलां के यहां कोई आया था आदि आदि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन महिलाओं को ध्यान नहीं रहता कि वे क्या बातें कर रही हैं और उन बातों का बच्चों के मानसपटल पर क्या असर पड़ेगा। कुछ महिलाएं तो अपने बच्चों से जासूसी भी करवाती हैं।

आवश्यकता है कि आप बच्चों को, उनकी मानसिकता को समझें। खेल-कूद और पढ़ाई में उनकी रुचि बढ़ायें। घर का वातावरण स्वच्छ रखें। बच्चों को समय पर खाना या कपड़े देना और उनके लिए स्कूल का प्रबन्ध कर देना ही अभिभावकों के कर्तव्य की इतिश्री नहीं है, उनकी मानसिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति होनी चाहिए।

बच्चों में पनप रही गन्दगी को, जड़मूल से उखाड़ फेंकना चाहिए। महिलाओं की आदत होती है कि वे अपने बच्चों की गलत बातों को भी हंसी में टाल देती हैं और यह तर्क देती हैं कि अभी तो बच्चा छोटा है, समय आने पर ठीक हो जायेगा। समय आने पर ठीक होने के बारे में अभिभावकों की यह छूट बच्चों के लिए खतरनाक है।

बच्चों के भावनात्मक विकास के लिए वात्सल्य जरूरी होता है किन्तु अत्यधिक लाड़ बच्चों की आदतें बिगाड़ देता है। अब यह मां-बाप के ऊपर है कि वे वात्सल्य और अतिरिक्त लाड़ के बीच की सीमा-रेखा को पहचानते हैं या नहीं। जिन बच्चों को मां-बाप का उचित प्यार नहीं मिलता उनमें हीन भावना अधिक पाई जाती है। ऐसे बच्चे परिवार में अपने आपको ठीक ढंग से नहीं ढाल पाते और जिद्दी तथा उद्दंड बन जाते हैं। पढ़ाई-लिखाई में भी पिछड़े रहते हैं।

बच्चों के पूर्ण विकास के लिए माता-पिता को चाहिए कि वे उन्हें ठीक से समझें उनकी रुचियों/आदतों/पसंदों का ध्यान रखें और निरंतर उनमें आत्मविश्वास जगायें। यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि बच्चों के सही विकास तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए पति-पत्नी के बीच संबंध भी अच्छे होने चाहिए। यदि माता-पिता के बीच तनावपूर्ण संबंध होगें तो उनका प्रभाव भी बच्चों पर पड़ेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंत्र गीत १

—देवनारायण भारद्वाज

न: पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये (१५) यजु० ३/

प्यारे प्यारे पिता हमारे, तुम सुनो हमारा विनय गान।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याणवान॥
हम सेवक पुत्र तुम्हारे हैं, करुणामय पिता हमारे है,
अपने साधन सुन्दर उपाय, ये जगत पिता विस्तारे है।
प्रभु हमको उपाय बतलाबो, हम सभी बने जग स्वस्तिवान।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याणवान॥
जो पिता जगत में कहलाता, निज पुत्र जन्म । जो दाता,
जग पिता पुत्र पालन करता, किन्तु हमारा शाश्वत नाता।
हे पिता कृपा की किरणों से, दो सुख दायक विज्ञानदाता।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याणवान॥
विज्ञान वेदविद् पण्डित हैं, धन धान्य श्रेष्ठ से मण्डित हैं,
हमको धन साधन रक्षा दो, हे पिता धर्म बल चण्डित हैं।
सारे दुख दूर पिता कर दो, हमको कर दो निज त्राणदान।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याणवान॥

---

५०१ रुपया भेज कर

जनज्ञान "मासिक"

के आजीवन सदस्य बनिये।

और १०१ रु० का अमूल्य ग्रंथ वैदिक सम्पत्ति तथा ५० रु० मू
का संक्षिप्त महाभारत (हिन्दी भाष्य सहित) उपहार प्राप्त कीजि

२२८६, आर्य समाज मार्ग करौलबाग, दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक शिक्षा प्रणाली का महत्व

—अमरनाथ आर्य

वैदिक शिक्षापद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है जो सुदूर अतीत से महाभारत-पर्यन्त अबाध रूप से प्रचलित रही। इसी कारण हमारी संस्कृति सर्वोत्तम मानी गई है। इसकी विशेषताएं इस प्रकार रही।—अनिवार्य शिक्षा धनवान् तथा निर्धन में कोई भेदभाव नहीं, निःशुल्क शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा, गुरु विद्यार्थी का साक्षात् सम्पर्क तथा छात्र-छात्राओं के पृथक् शिक्षणालय।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

वेद भगवान् का यह सनातन उद्घोष मानवता को चेताता रहा है कि जो मानव विद्या और अविद्या अर्थात् ज्ञान और कर्म, इन दोनों के रहस्यों को एक साथ जान लेता है, वह कर्मानुष्ठान द्वारा मृत्यु को पार कर विद्या से अमरत्व प्राप्त कर लेता है।

वेद सत्यविद्याओं का अजस्र स्रोत है और आज इस स्रोत का मुख्य संचालक और प्रचारक है—आर्य समाज। इसलिए जहां कहीं भी इसका कोई आयोजन या सम्मेलनादि होता है वहां प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में विद्या-प्रसारण-सम्बन्धी विचार अवश्य किया जाता है। दूसरे शब्दों में—वह कार्यक्रम ही अधूरा समझा जाता है, जहां विद्या-प्रकाशन की चर्चा न हो।

अतः पिछले दिनों जब गुरुवर ब्रह्मर्षि विरजानन्द की पुण्यस्थली करतारपुर में गुरुकुल का वार्षिकोत्सव हुआ, तो वहाँ 'शिक्षा-सम्मेलन' नामक विद्या-गोष्ठी का आयोजन भी हुआ। जिसमें आर्यजगत् और शिक्षा-संसार की महान् साहित्य-विभूतियों ने भागलिया। इसके परिणामों से प्रभावित होकर उन्होंने इसे प्रोत्साहित करते हुए कहा कि पंजाब के कतिपय गुरुकुलों में गुरुकुल करतारपुर अपना विशेष और उच्च स्थान रखता है। उन्होंने अपने अमूल्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुभव और सुझाव प्रस्तुत किए कि गुरुकुल प्रणाली को कैसे लोकप्रिय बनाना है।

उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ उन सरस्वती-पुत्रों के अमृतोपदेश से लाभ उठाया, वहीं मैं आवश्यक समझता हूं कि अन्य भी उसका रसास्वादन कर प्रेरणा प्राप्त कर सकें। अत: निम्नलिखित पंक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं—

वैदिक शिक्षापद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है जो सुदूर अतीत से महाभारत-पर्यन्त अबाध रूप से प्रचलित रही। इसी कारण हमारी संस्कृति सर्वोत्तम मानी गई है। इसकी विशेषताएं इस प्रकार रही।—अनिवार्य शिक्षा धनवान् तथा निर्धन में कोई भेदभाव नहीं, निःशुल्क शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा, गुरु-विद्यार्थी का साक्षात् सम्पर्क तथा छात्र-छात्राओं के पृथक् शिक्षणालय।

उपर्युक्त विशेषताओं के सन्दर्भ से सिद्ध होता है कि उस युग में शिक्षा सुलभ थी और नर-नारी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। अत: विद्वान पुरुषों के साथ-साथ गार्गी, मैत्रेयी और उद्घोषा आदि विदुषियों का भी पता चलता है। यह समस्त शिक्षा पावन अरण्यस्थित गुरुकुलों में ही हुआ करती थी जो समयानुसार बालक-बालिकाओं के लिए पृथक् पृथक् होते थे जहाँ श्रीकृष्ण जैसे सम्पन्न और सुदामा जैसे विपन्न छात्र समान रूप से निःशुल्क विद्यार्जन करते थे। यह रीति इतनी पावन तथा सफल मानी गई कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम शिक्षा-हेतु गुरुगृह जाते दर्शाए गए हैं—

गुरुगृह पठन गए रघुराई। अल्पकाल विद्या सब पाई॥

सारांश यह कि रामायण-युग में जहाँ राम ऋषि वशिष्ठ और विश्वामित्र के पुनीत आश्रमों मे विद्या पाते हैं वहाँ महाभारत के श्रीकृष्ण ऋषि सन्दीपनि और घोर अंगिरस के संरक्षण में विद्यारत रहे हैं।

हमारी यह पुरातन सम्पदा ऐसी है कि जहाँ गुरुशिष्य का पिता-पुत्रवत् सम्बन्ध है और जहाँ गुरु अपने शुद्धाचरण के ग्रहण का परामर्श शिष्य को देता है, वहीं वह अपनी त्रुटियों से छात्रों को बचाना भी आवश्यक समझता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। इसीलिए उपनिषद् का आचार्य दीक्षान्त समारोह पर यह उद्घोष करता है—

'यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि ।' अर्थात् मेरे अच्छे गुण ग्रहण कर लेना और मेरे अवगुणों को मेरे पास ही छोड़ देना।

जब तक यह व्यवस्था रही, आर्य-संस्कृति को राम तथा कृष्ण जैसे महापुरुष मिलते रहे और आर्यावर्त्त सगर्व भुजा उठाए यह घोषणा करता रहा—

एतद्देशस्य प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

अर्थात् इस देश में उत्पन्न विद्वानों से पृथिवी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने कर्त्तव्यों की शिक्षा ग्रहण करें।

इस पद्धति को महाभारत युग में भीष्मपितामह ने अपने कौरव-पांण्डवादि पौत्रों के शिक्षण-हेतु बदल डाला। उन्होंने व्यवस्था दी कि भूपति (राजा) विष्णु का अंश होता है और उसके पुत्र समाज में विशेष स्थान रखते हैं। अतः उनकी शिक्षा का प्रबन्ध अरण्यों के बदले राजप्रासादों में होना चाहिए। इस भांति यह शिक्षा-ज्योति ऋषि निवासों से निकलकर नृप-निकेतों में प्रतिष्ठित हुई। जिसके प्रथम वेतनभोगी आचार्य हुए द्रोणाचार्य और उनके विद्यालय की प्रथम उपलब्धि रहा दुर्योधन जिसकी अदूरदर्शिता से अनुपम विध्वंस हुआ और सर्वशासी आर्यावर्त को स्वयं शताब्दियों तक दासता के गर्त में बिलखना पड़ा था। तब उन्नीसवीं शताब्दी में आशा की किरण आई।

गुरु विरजानन्द की शिक्षापद्धतिः गुरुकुल—

ऋषि—मुनियों की साधना-स्थली पंजाब के करतारपुर जनपदान्तर्गत एक विभूति का जन्म हुआ जो आगे चलकर स्वामी विरजानन्द दण्डी के नाम से विख्यात हुए। ये योगी, अनुपम साधक, महान् शिक्षाशास्त्री और व्याकरण के सूर्य थे। उन्होंने उस युग में, जबकि स्वाधीनता की बात दूर स्वतन्त्र विचारों के प्रकाशन तक को अक्षम्य अपराध समझा जाता था सोचा कि यदि भारत को दासता से मुक्त होना है तो ... नागरिक क्रांति, राष्ट्रीय चेतना और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानसिक जागरूकता की आवश्यकता है और सोती हुई पीढ़ियों को ये यो-
ताएँ वैदिक शिक्षा-पद्धति से ही प्राप्त हो सकती हैं ।

उपर्युक्त विचार-विद्युत् से अनुप्राणित होकर उन्होंने मथुरा में अ-
कुटी को गुरुकुल का रूप दिया और स्वयं प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी पुरातन प-
से विद्या-प्रसारण में जुट गए । कालान्तर में उनका यह गुरुकुल व्या-
भारतीयता का आकाशदीप सिद्ध हुआ । उनकी शिक्षा-सुरभि से आकृष्ट हो-
सौभाग्यवश १८६० ई० में, तैंतीस वर्ष की वय में स्वामी दयानन्द उनके -
पर पहुंचे और कठिनता से उनका शिष्यत्व पाया । श्रद्धापूर्वक प्रायः पौने -
वर्ष तक व्याकरणीय सच्छास्त्रों की विद्या प्राप्त की और वेदविद्या में पार-
हुए । तदनन्तर दक्षिणास्वरूप गुरुवर को स्वजीवन अर्पण करके, उनकी आ-
नुसार वे संसार का अज्ञानान्धकार मिटाने निकले । तब विश्व ने देखा
स्वामी विरजानन्द ने दयानन्द को क्या बनाया और दयानन्द ने हमें -
बनाया ।

कहने की आवश्यकता नहीं कि आर्ष ज्ञान-निष्णात गुरु विरजानन्द -
कुटिया में पठित विद्यार्थी—दयानन्द—जब मानवता को सौंपा गया, तो उ-
जो ज्ञानालोक और शिक्षा-सौरभ फैलाया, वह सर्वविदित है, वह सुग-
समयानुसार उत्तरोत्तर प्रसारित होती रही है ।

गुरु के आश्रम से शक्ति, प्रेरणा और योजना लेकर वह जब आ-
पहुंचे तो वहां दो वर्ष तक कार्यान्वयन पर विचार करते रहे । एक दिन -
भक्त ने पूछा, "महाराज, गुरुवर ने आपके कंधों पर संस्कृति-उद्धार और वि-
जागरण का जो गुरुभार डाला है, उसके सम्बन्ध में अभी कुछ दिखाई न-
देता ।" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं अभी योजना बना रहा हूं । सीमित स-
और साधनों से इस बृहद् योजना को कैसे कार्यान्वित करना है—यही सोच-
चिन्तित हूँ ।"

उन्हें तब शीघ्र ही मार्ग मिला और उन्होंने पाया कि यदि देश-
डगमग डोलती नैय्या को समुचित दिशा देनी है तो सुशिक्षा के माध्यम-
देशवासियों की प्रसुप्त आत्म को जगाना आवश्यक है । इसके लिए वर्त-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शिक्षा-ढांचे में परिवर्तन आवश्यक जान पड़ा। परिणामतः अपने प्रचार, लेखन और भ्रमण द्वारा उन्होंने उसका शुभारम्भ किया। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दो समुल्लासों में शिक्षा-सम्बन्धी भ्रान्तियां दूर की, छात्रापयोगी साहित्य रचा, संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार किया और आगे भी लेखन और सम्भाषण-कार्य बन्द न हो, इसलिए आर्यसमाज जैसे जागरूक प्रहरी की स्थापना की और अन्तिम सांस तक निज लेखनी-कलश से ज्ञान-सुधा पिलाते रहे।

इस प्रकार जिस शिक्षा-प्रणाली-माधुरी-लता का बीजवपन गुरु विरजानन्द की कुटी में हुआ वह आर्यसमाज का आधार पाकर और दयानन्द के श्रम-जल से सिञ्चित हो उत्तरोत्तर पल्लवित हुई और आज वह न केवल स्वदेश बल्कि विश्व के शताधिक देशों में प्रफुल्लित हो रही है जहाँ विश्वविद्यालय तक की उच्च श्रेणियों में न केवल वेद और शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता है, वरन् संस्कृत-समाचार तक प्रसारित होते हैं। परिणामतः भारतीय संस्कृति और संस्कृत के प्रेमस्वरूप मारीशस जैसे देश को 'छोटा भारत' की उपाधि से विभूषित किया जाता है। अब जगत् पुनः स्वीकारने लगा है कि भारत वास्तव में ही जगदगुरु रहा है और रहेगा।

वैदिक शिक्षा से सम्पुष्ट भारतीय संस्कृति की यह परम विशेषता रही है कि यह आशावादी है—जिसकी मान्यता है कि 'मानव का आना भी मधुमय हो और जाना भी। यह संस्कृति पुकार-पुकार कर कह रही है कि जीवन अनन्त है अतः निराशा की आवश्यकता नहीं।

स्पष्ट है कि यह मानवता की चतुर्दिक् उन्नति चाहती है और सद्घोषणा करती है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्योद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। चूंकि शारीरिक स्वास्थ्य ही सभी प्रगतियों का मूल है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। वही संस्कृत आत्मा जब बुद्धिपूर्वक अपनी क्षमताओं का बहुजनहिताय विनियोग करती है तो उसे सामाजिक उन्नति कहते हैं। इसी लिए वैदिक संस्कृतिनिष्ठ देश का अधिपति कभी भुजा उठाये यह घोषणा किया करता था—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न मे स्तेनो जनपदे कदर्यो न मद्यपः ।
न नाहिताग्निर्नाविद्वान स्वैरी स्वैरिणी कुतः ।।

मेरे राज्य में न कहीं चोरी होती है, न कोई कृपण और मद्यप है । हर घर में हवन-यज्ञ होता है । कोई कदाचारी नहीं, फिर कदाचारिणी कहां से हो सकती है ।

विद्वानों ने आगे बताया कि इसके विपरीत, धरातल पर जो अन्य कतिपय मत-मतान्तर उभरे, उन्होंने प्राकृत संस्कृति, राजडगर को छोड़ मनमाना पथ अपनाया और हर क्षेत्र में गम्भीर भ्रान्तियां फैलाई । उदाहरणत 'मदनमोहन' बड़ा सुन्दर और सार्थक नाम है । यह दो पदों— मदन और मोहन से बना है। मदन का अर्थ है जिसे मद या घमण्डन न हो और मोहन का कि जिसमें मोहन हो परन्तु अवैदिक मतावलम्बियों ने इस शब्द का इच्छानुसार बिगाड़कर 'मोह-मद' यानि मोहम्मद बना दिया जिसका अर्थ है—वह जिसमें मोह और मद दोनों मौजूद हों । इसी प्रकार 'हवन' धर्म-परायण वेद-संस्कृति का प्राण है। और 'हवनकुण्ड' उसका प्रतीक । किन्तु, विधर्मियों ने इसे भी उल्टा और हुक्का बना दिया । अब कोई भी विचारशील हवन-कुण्ड से उठती सुगन्धि और हुक्के से निकलती दुर्गन्धि के भेद को समझ सकता है ।

तात्पर्य यह कि वैदिक संस्कृति जहां स्वस्थ और वैज्ञानिक जीवन-दर्शन प्रस्तुत करती है वहां वेदेतर मतवाद मानवता को अज्ञान-तिमिर में भटकाते चले आए हैं । अतः शिक्षा के क्षेत्र में आज जो उच्छृंखलता, बौद्धिक ह्रास, चरित्रपतन और असन्तोष व्याप्त है वह विदेशियों के अन्धानुकरण के कारण है । क्योंकि जो अपने विवेक को ठीक नहीं रख सकता वह जीवन-संग्राम में विजयी कैसे हो सकता है ! जय के साधन तो राम के शब्दों में ये हैं---

बल विवेक अरु परहित छोटे । छमा कृपा समता रजु डोटे ।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहँ न कहु रिपु ताके ।।

भावतः विजय-हेतु तो क्षमा और दया की रस्सियों से बँधे, बल और विवेक के घोड़ों से युक्त धर्म-रथ ही अपेक्षित है । ऐसी रथारूढ़ हमारी संस्कृति मानव-विजयगान गाती हुई सदैव संसार को अभयदान देती रही है—

सत्यमेव जयते नाऽनृतम् सत्येन पन्था विततो देवयानः

असत्य की नहीं वरन् सत्य की ही जीत होती है और सत्य-साधक सत्य-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नौका से ही भवार्णव पार करते हैं। निष्कर्ष यह निकलता है कि उन शिक्षाविदो के कहे-अनकहे विचार-विन्दुओं से लगता है कि वे सामूहिक रूप से सम्भवतः यही कहना चाहते थे कि गुरुकुल शिक्षाप्रणाली आज की दुःखद स्थितियों के लिए रामबाण है जो मानवता को निराशा-गर्त से उबार कर अमरत्व प्रदान करती हुई 'विधयाऽमृतमश्नुते' का दिव्य सन्देश देती रही है और सदैव देती रहेगी। अतः संस्कृतिसापेक्ष संरक्षण-हेतु 'गुरुकुल-प्रणाली को अक्षुण्ण बनाए रखना अनिवार्य है।

प्रतिक्रिया

मेरा संन्यासि-धर्म : दयानन्द

"भाई, हमारा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूँ और हमारे भारत में पच्चीस कोटि आर्य हैं। कई-कई बातों में किसी-किसी में कुछ भेद हैं जो विचार करने से आप ही आप छूट जाएगा। मैं संन्यासी हूँ और मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूँ इसके बदले में जो सत्य समझता हूँ उसका निर्भयता से उपदेश करता हूँ। मैं कुछ कीर्ति का रागी नहीं हूँ। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे, मैं अपना कर्त्तव्य समझकर धर्म-बोध कराता हूँ। चाहे कोई माने या न माने, इसमें मेरा कोई हानि-लाभ नहीं है।"

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर
परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य ५०० रु०। साथ में २५१ रु० का बढ़िया वैदिक साहित्य
वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य सहित
तथा अन्य उपयोगी साहित्य उपहार में प्राप्त करें।
साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य ३७५ रुपये में
आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन
दयानन्द संस्थान के नाम अवश्य भेजें। प्रबन्धक—वेद मन्दिर
मुखमेलपुर, दिल्ली ११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राष्ट्रीय मंच

—प्रेमनाथ जोशी-प्रधान

आदरणीय मिहराव !

प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलों के नेताओं से पंजाब की पेचीदा समस्या के समाधान हेतु वार्तालाप करने के लिए आपकी अध्यक्षता में एक मंत्री समिति का गठन किया है, यह एक शुभ समाचार है। देश के सभी शान्तिप्रिय नागरिक इस कदम का स्वागत करते हैं। इस समस्या के कुछ अन्य महत्वपूर्ण एवं सम्बन्धित पहलू भी हैं, जिन्हें यदि ध्यान में रखा जाये तो समस्या के स्थायी हल ढूढ़ने में सहायक होंगे।

अभी तक सरकार, राजनैतिक दलों व समाचार-पत्रों का कुछ ऐसा मत रहा है कि सिखों की कुछ गभीर शिकायते हैं, जिनका राजनैतिक हल होना चाहिए। आज के पंजाब में हो रहे उपद्रवों का एक कारण यह बताया जाता है कि सिखों में बेरोजगारी है, रोजगार की सुविधाएं प्राप्त कराने के लिए सरकार ने उद्योग लगाये हैं और अन्य उद्योग लगा रही है तथा पंजाब के किसानों को अधिक सुविधाएं दी जा रही हैं। परन्तु इससे भी शायद समस्या का समाधान न हो, क्योंकि बेरोजगारी उपद्रवों का कारण नहीं है। वास्तविकता यह है कि सिख देश में एक समृद्ध समुदाय है। सिखों में बेरोजगारी नगण्य है। वस्तुत: सिख किसानों व उद्योगपतियों की अत्यधिक समृद्धि भी वर्तमान परिस्थितियों को बढ़ाने का एक कारण हो सकती है।

सिखों में अशांति का एक कारण यह भी बताया जाता है कि ब्लू-स्टार अभियान में हरमिन्दर साहिब को अपवित्र कर दिया गया, जिससे सिखों की भावनाओं को ठेस पहुची है और दूसरा कारण यह बताया जाता है कि सरकार ने १९८४ के दगों के दोषी लोगों को सजा देने के बारे में कोई कदम नहीं उठाया।

यह बात स्पष्ट है कि सिखों में अशांति के ये कारण नहीं हैं। इन दोनों घटनाओं से बहुत समय पहले १९८१ में सिख उग्रवादियों ने हिन्दुओं की हत्याएं प्रारम्भ कर दी थीं। ब्लू-स्टार अभियान से पहले ही सिख उग्र-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वादियों व अन्य संस्थाओं की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियां चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी। यहां तक कि खालिस्तान का झंडा हरमिन्दर साहिब में भी फहराया जा चुका था। वर्तमान अशांति के कारण सिखों की मानसिकता में ही ढूंढ़ने होंगे न कि किसी बाह्य घटना में, अथवा वातावरण में। गत सौ वर्षो से सिखों के धार्मिक व राजनैतिक नेता हिन्दुओं से अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर वे अपने धर्म को सभी धर्मों के ढाचें में ढालते आ रहे हैं। इस प्रयत्न में उन्होंने कुछ ऐसी विशेषताओं को अपना लिया है जो सभी धर्मों में ही पायी जाती हैं। उनकी तरह सिखों ने समस्त विश्व को केशधारी सिख व अन्य दो भागों में विभाजित कर लिया है। उन्होंने अपने आप में पृथकता पैदा कर ली है, जैसे सब कुछ सिखों का ही हो, सिख ही उसे चलाएं, सिखों के लिए ही हो। उनके अन्दर असहिष्णुता चरम सीमा तक पहुंच गई हैं। वे निरंकारियों का मूल नाश करने पर तुल गए हैं। वे इतना भी सहन नहीं कर सकते कि पंजाब में हिन्दू रामायण धारावाहिक देंगे अथवा सार्वजनिक रूप से भजन गायें तथा कीर्तन व जागरण का आयोजन करें। वे पंजाब में हिन्दुओं को होली जलाते तथा अन्य इसी प्रकार खुशी मनाते हुए नही देख सकते।

ऐसा प्रतीत होता है कि सिखों ने समानता को तिलांजलि दे दी है और हिन्दुओं को अपना समकक्ष माननें को तैयार नहीं हैं। उन्होंने हिन्दुओं को द्वितीय स्तर का नागरिक बना दिया है। पंजाब में हिन्दू ४६% हैं। परन्तु नौकरियों में उनका हिस्सा घटाकर केवल १०% कर दिया गया है। हिन्दुओं के बच्चों को तकनीकी व अन्य संस्थाओं में प्रवेश की सुविधा से किसी न किसी आधार पर वंचित किया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सिख अब सह-अस्तित्व के सिद्धांत में विश्वास नहीं रखते। आतंक, हिंसा और हत्या को पंजाब से हिन्दुओं को भगाने तथा खालिस्तान बनाने की राजनीति का एक अंग बना लिया है। हाल ही में हिन्दू महिलाओं के अपहरण की धमकियों के अलावा कुछ अन्य घटित होना सम्भव है। यह एक भयावह परिस्थिति है। यह सब बातें महान गुरुओं की शिक्षाओं के विपरीत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। यह मानना गलत होगा कि यह सब गतिविधियां सिख उग्रवादी दलो तक ही सीमित है। असहिष्णुता, समानता व सह अस्तित्व में अविश्वास व जत्थेबन्दी की शक्ति से काम निकालने की मान्यता तथा कानून की अवमानना प्रायः सिख मानसिकता के अंग बन गये हैं। यह सब युक्तियां लाभप्रद हो रही हैं। इसलिए सिखों में उग्रवाद पनप रहा है। आज पंजाब में जो कुछ हो रहा है उस वातावरण को बनाने में सिख समुदाय का हाथ है। इसलिए सिख देश के अन्य नागरिकों के प्रति इस सब के प्रति उत्तरदायी हैं।

वे यह कहकर अपने आपको उत्तरदायित्व से नहीं बचा सकते कि सिखों की शिकायतों को दूर करने में सरकार की निष्क्रियता के खिलाफ ये हत्याएं कुछ सिख नौजवानों का विरोध मात्र है। वास्तव में सरकार ने सिखों की युक्तिसंगत मांगों को ही नहीं अपितु जो एकदम असंगत मांगे भी थीं उनको भी स्वीकार करने के लिए यथासम्भव सभी कुछ किया है। सत्य यह है कि तुष्टीकरण की नीति असफल हो चुका है। हमे सिखों को यह अनुभव कराना चाहिए कि हिन्दुओं की हत्याओं को, सरकार से अधिक रियायतें लेने के लिए हथियार बनाना लाभप्रद न होगा। भोले-भाले लोगों की हत्याओं से समस्त वर्गों में सिखों के प्रति घृणा बढ़ रही है। जब तक हम सिखों के सोचने के तरीकों में पविर्तन नहीं लायेंगे तब तब समस्या का समाधान सम्भव नहीं। सिख पृथकतावादियों की गतिविधियों के बारे जितने भी तथ्य हैं, कितने भी अरुचिकर क्यों न हों, उन्हें उनके नग्न स्वरूप में जनता के सामने रख।

हम सिखों को यह सब देखने में सहायता करें कि गत वर्ष में वे हिन्दुओं के साथ कितना अन्याय करते रहे हैं तथा पंजाव के एवं देश के और जो उनके ही सगे सम्बन्धी हैं, उनके जीवन व सम्मान के साथ कितना भद्दा खेल खेलते रहे हैं। किसलिए ? देश के राजनैतिक तंत्र में सिखों के एक अतिविशिष्ट स्थान प्राप्त करने के लिए। क्या पहले से ही देश के राजनैतिक जीवन में उनका यह स्थान नहीं है ? क्या यह इतना खराबा आवश्यक है ? हम जनता के दर्पण में सिखों को अपना वास्तविक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वरूप दिखाएं कि उनके साथी नागरिक उनकी गतिविधियों को पसंद नहीं करते और अब उनसे दूर रहने लगे हैं कि वे अपने स्वरूप को सुधारे तथा देश के नागरिको में विश्वास जागृत करे। ऐसा होने से ही सिखो को यह अनुभव होगा कि कुछ एक सिखों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के कारण सम्पूर्ण सिख, समाज बदनाम हो रहा है। ऐसा करने से ही सिखों में एक स्वस्थ व उचित प्रतिक्रिया आयेगी, यह एक तरीका है जिससे सिखों के चिन्तन में परिवर्तन सम्भव है।

आपने विरोधी पार्टियों के नेताओं को इस विषय पर बातचीत के लिए बुलाया है। मूलतः यह समस्या साम्प्रदायिक है और सरकार के सामने जो भी समाधान हैं, वे भी साम्प्रदायिकता के आधार पर ही है। पंजाब में दो मुख्य समुदाय हैं १—सिख, २—हिन्दू। कोई भी रियायत जो एक समुदाय को दी जाती है उसका प्रभाव अवश्य ही दूसरे समुदाय के सामाजिक स्थिति पर पड़ता है। राजनैतिक दल, जिन्हें आमंत्रित किया गया है उन्हें दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है, १—अकाली, जो सिख दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करेंगे। २—अन्य राजनैतिक दल जैसे: कांग्रेस, जनता, साम्यवादी व भारतीय जनता पार्टी ये सब अपने कहे के अनुसार, धर्मनिरपेक्षतावादी दल हैं। इस अवस्था में हिन्दू दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कौन करेगा ? वास्तव में इस समस्या के संदर्भ मे राष्ट्रीय राजनैतिक दल असंगत हो चुके हैं। इस सम्बन्ध में क्या ये उचित नहीं होगा कि हिन्दू दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने के लिए आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, हिन्दु सुरक्षा समिति तथा अन्य हिन्दू नेताओं को आमंत्रित किया जाये। देश के किसी भी भाग में जैसे दार्जिलिंग, मिजोरम व नागालैंड में इस प्रकार की समस्या के समाधान हेतु, किसी सार्थक बातचीत से पहले सरकार इस बात पर जोर देती रही है कि बातचीत से पहले हत्याएं बन्द हों। वर्तमान संदर्भ में क्या यह उचित नहीं होगा कि सरकार इस बात पर जोर दे कि सभी सिख नेता बातचीत में भाग लेने से पहले स्पष्ट शब्दों में पंजाब तथा देश के अन्य भागों में हो रही निरीह नागरिकों की हत्याओं तथा इन हत्याओं के प्रति उत्तरदायी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उग्रवादी दलों तथा व्यक्तियों की भर्त्सना करें। सिख नेता बतायें कि इन हत्याओं को बन्द करने तथा पंजाब में शांति स्थापित करने के लिए वे कौन से कदम उठाने को तैयार हैं। वे यह भी सूचित करें कि हिन्दुओं में सुरक्षा की भावना तथा उनका विश्वास प्राप्न करने के लिए वे क्या कुछ करने को तैयार हैं जिससे हिन्दू पंजाब में अपने घरों में शांतिपूर्ण तथा साधारण जीवन व्यतीत कर सके। क्या पंजाब में सिख हिन्दुओं के खिलाफ हो रहे सभी भेदभावों को समाप्त कर हिन्दुओं को समान दर्जा देकर, उन्हें सभी समान अवसर तथा सुविधाएं देने को तैयार है, जो उन्हें स्वयं प्राप्त है।

दिल्ली में १९८४ के दंगों में हुई दुखद दुर्भाग्यपूर्ण घटनायें तथा जो अभी साल में बीदार (कर्नाटक) में हुआ है, उसका सभी वर्गों के नागरिकों को न केवल दुख हुआ है अपितु भर्त्सना भी की है। क्या यह ठीक नहीं होगा कि बातचीत में भाग लेने के लिए आ रहे सभी सिख प्रतिनिधि इस बात की मांग करें कि पंजाब में गत सात वर्ष से हो रहे कत्ले आम के दोषी लोगों को शीघ्र सख्त सजा दी जाये।

सरकार को एक आयोग नियुक्त करना चाहिए, यह आयोग इस बात की जांच करे कि पंजाब में हिन्दुओं की वर्तमान दशा, विभिन्न सरकारों के शासन काल में हिन्दुओं के साथ नौकरियों में भर्ती, रोजगार सेवायें, पदोन्नति, शिक्षा विभिन्न लाईसेंस तथा सहायता के क्षेत्रों में बरते गये भेदभाव के बारे में रिपोर्ट करे तथा इस भेदभाव को समाप्त करने के लिए सुझाव दे।

इस रिपोर्ट के आने तक सरकार जल्दी ऐसे कदम उठाये कि सभी क्षेत्रों में यह भेदभाव समाप्त कर तत्काल सहायता प्रदान करे। सरकार हिन्दुओं में सुरक्षा की भावना पैदा करने के लिए उन्हें आत्मरक्षा तथा उनके पूजास्थलों की सुरक्षा के लिए उसी स्तर पर हथियारों के लाईसेंस दे, जैसे कि सिखों को दिये जा रहे हैं। सरकार पंजाब के १५ से ३५ वर्ष के सभी नागरिकों को अनिवार्य सैनिकशिक्षा देने के बारे में योजना बनाए। सरकार इस बात के लिए भी विचार करे कि विस्थापितों के लिए पंजाब में ही बड़े पैमाने पर शरणार्थी शिविर खोले जायें, जिससे पंजाब से हो रहे हिन्दुओं के पलायन को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोका जा सके। सरकार ऐसी योजना बनाये जिससे ऐसे सभी विस्थापित नागरिकों को पंजाब में ही नौकरी, रोजगार के अवसर तथा उनके बच्चों को शिक्षा की सुविधा हो।

भूभागों के अन्तरण की मांग व उसका समाधान जो ढूंढ़ा जा रहा, दोनों का आधार भी साम्प्रदायिक ही है। फाजिल्का व अबोहर में हिन्दू बहुसंख्या में हैं फिर भी इन्हें हरियाणा को नहीं दिया जा सकता, क्योंकि इससे जुड़ा एक कन्दूखेड़ा गांव है, जहां सिख बहुसंख्या में हैं। ऐसे ही चंडीगढ़ के नागरिक चाहते हैं कि यह केन्द्रशासित प्रदेश ही रहे और यदि ऐसा न हो सके तो हरियाणा का हिस्सा बना दिया जाये। परन्तु यह बात इसलिए नहीं नहीं हो सकती कि सिख इसका विरोध करते हैं। इसमें कोई तर्क नहीं हैं। नदियों के पानी के बंटवारे की मांग व उसके समाधान का आधार भी साम्प्रदायिक ही है। न तो नदियों के पानी बंटवारे की मांग और न ही उसका समाधान, विभिन्न राज्यों की आवश्यकता के अनुरूप है अपितु मांग व समाधान दोनों साम्प्रदायिक ही है। इन दोनों समस्याओं का समाधान न्याय के आधार पर ही होना चाहिए। भू-भागों का अन्तरण तथा नदियों के पानी के वितरण की समस्या को किसी आयोग को न देकर केवल सर्वोच्च न्यायालय को निर्णय देने में किसी भी पहले से ही हुए समझौते तथा आयोग की रिपोर्ट की पाबंदी नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार झगड़े का अन्त हो सकता है।

उग्रवाद को दबाने के लिए शक्ति के प्रयोग में इच्छा शक्ति का अभाव है जिससे आतंकवाद बढ़ रहा है और उग्रवादियों का मनोबल बढ़ रहा है। यदि उग्रवाद को समाप्त करना है तो उन सभी क्षेत्रों में पंजाब, राजस्थान में गंगा नगर तथा उत्तर प्रदेश के तराई के क्षेत्र में जहां उग्रवादी हो, वहाँ प्रत्येक गांव को घेर कर यदि उग्रवादियों को निकाला जाये तभी निकट भविष्य में उग्रवाद समाप्त हो सकता है यथा पंजाब के नागरिकों की व्यथा के दिन समाप्त हो सकते है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान दाताओं की सूची

२१) दान देने वाले

1. सर्वश्री हरवंश लाल दुआ-आगरा, 2. ईश्वर लाल भट्ट आर्य-यादगिरी, 3. आर० एस० बधवा-नई दिल्ली, 4. केशव प्रसाद आर्य-गाजीपुर, 5. रमेश चन्द्र प्रमोद कुमार - मेरठ, 7. प्रकाश चन्द्र अग्रवाल-सिलीगुड़ी, 8. आर्य समाज कतरासगढ़ - धनबाद, 9. जगदीश चन्द्र अग्रवाल-सासाराम, 10 नरपति लाल - फैजाबाद, 11. बी० पी० सोनी-बिमीमोड़ा, 12. बी० एल० मिश्रा-बम्बई, 13. ओमप्रकाश पारिख-अहमदाबाद, 14. द्वारकादास रामेश्वर पालरी वाला दुलहाना, 15. सत्येश पुस्तक भण्डार-नाथद्वारा, 16. विष्णुदत्त वैद्य-गुड़गांवा, 17. डा० मुरारीलाल गोयल-शाहदरा, 18. हिन्दी ज्ञान पीठ-अकोला, 19. विक्रमादित्य सिंह-फैजाबाद 20. मनोहरलाल रामकर णलाल, 21. लक्ष्मी नारायण-उज्जैन, 22. यदुनन्दन प्रा० खगरिया 23. धर्मपाल जी-चन्द्रपुर, 24. राम सुन्दर प्रसाद-सिक्किम, 25. ला० मुन्नालाल-बदायूँ 26. इन्दर सिंह-सोनीपत, 27. राम अवतार गुप्ता-बिजनौर, 28. सुरेन्द्र कुमार शर्मा-जयपुर, 29. मानसिंह यादव-अलवर, 30. कृष्णप्रसाद केशरी-खरगपुर, 31. रामवृक्षसिंह-नालन्दा, 32. बाबूराम प्रसाद-बदायूँ, 33. सुन्दर लाल आर्य-बस्ती, 34. एस० एन० खेतान-बम्बई, 35. टुनटूराम वर्मा-कुल्लू, 36. ब्रज गोपाल राठी-हैदराबाद, 37 पिहलस-गाहा, 38. विन्देशर-पटना, 39. ईश्वर देवी-सोनीपत, 40. राधाकिशन पुसा, 41. मोहन लाल रामचन्द्र शर्मा-नासिक, 42. सुखवीर सिंह-नई दिल्ली, 43. प्रो० किशोरी साह-सीतामढ़ी 44. के. पी.-पाणिग्रही-बस्तर, 45. रामनाथ सिंह-शहडोल, 46. खुशहाल चन्द्र आर्य-कलकत्ता, 47. सुधार हरदेव-शिवगंज, 48. यमुना नन्द मिश्र-पहर्ा 49. एफ. सी. रस्तोगी-नई दिल्ली, 50. सत्यदेव पासवान-पूर्णिया, 51. इन्द्रसैन रामकिशन-बहादुरगढ़, 52. श्री गोकर्ण नाथ वाजरे -जगदलपुर, 53. दशरथ प्रसाद लाठ-सम्बलपुर, 54. एम. आर. अग्रवाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूना, 55. देवेन्द्र रस्तोगी-सहारनपुर, 56. हनुमान दास जी-अलवर, 57. बद्री नाथ मदनलाल-मुजफ्फर नगर, 60. राजभूषण-मुजफ्फर नगर, 61. श्रद्धानन्द शर्मा-बुलन्दशहर, 62. शिवकरण द्वारका-शिलांग. 63. के० एल० आनन्द-नई दिल्ली, 64. राकेश कुमार शर्मा-आगरा, 65. रामबहादुर वर्मा-इलाहाबाद, 66. देवेन्द्र नाथ शास्त्री-दिल्ली 67. एस. के. पाठक-गुणा, 68. नन्दकिशोर गुना-दिल्ली, 69. पी. राज लाहोरी-शिव सागर।

११) दान देने वाले

1. सर्व श्री डा० जेगेश काले-गोंडा, 2. सुरेन्द्रनाथ मेहरोणा-लखीमपुर, 3. सन्तोष कुमार ओगर-फतेहपुर, 4. नन्दलाल-पालीलाना, 5. वी. एस. व्यास-बम्बई, 6. एन. एस. कोटबाल-जम्मू, 7. डा० डी० एम० आसमवार वर्धा, 8. रूद्र प्रसाद-गांधीनगर 9. आर्य समाज-चित्तौड़गढ़ 10. एस. एन. वर्मा-कानपुर, 11. मैं० बन्धु बोस-मद्रास, 12. परमय्याजी-निजामाबाद 13. अम्बिका प्रसाद-मुंगेर, 14. बालसिंह बाल-छत्तरपुर, 15. गणेश नाथ महादेव लाल, बम्बई 16. डा. ए. एल. सोनी-जबलपुर, 17. डा. बी. एन. शर्मा मुजफ्फरनगर 18. Gangn Ram Veldi-पुणे 19. श्री चन्द्र उमेश चन्द गुप्ता-मैनपुरी, 20. दयाल सिंह रावत — देहरादून, 21. बुद्धि बल्लभ जोशी-नैनीताल, 22. श्री कृष्ण-दिल्ली, 23. हेमन्त कुमार चौबे गिरीडीह 24. राधेश्याम शर्मा-वैशाली, 25. ओम प्रकाश-गोपाल गंज, 26. गोपाल कृष्ण गुप्ता-मुरैना, 27. गोविन्द सिंह-अहमदाबाद, 28. यू. डी. धुगे-परभणी 29. अभीनाथ चेरीटेबिल ट्रस्ट-बरेली, 30. वशीलाल आर्य-इटावा, 31. कामेश्वर प्रसाद-मूगेरे, 32. मनोहरलाल-दिल्ली, 33. करुणा शंकर-हीशंगाबाद, 34. मुरली मनोहर उपाध्याय-धार, 35. शिववरदान सिंह राय बरेली, 36. गजानन्द अग्रवाल-धनबाद 37. क्षत्रिय रघुनाथ-नासिक, 38. गोपाल प्रसाद मघपुरा, 39. एस. नारायण आर्य-नाकेड़, 40. खिलौनी राम महेश चन्द्र-फरीदाबाद 41. एच. एम. अग्रवाल-कलकत्ता 42. आर. पी. तिवारी-चन्देरी 43. पं. राम र मिश्र-सीतापुर 44. महावीर प्रसाद आर्य-[illegible], 45. [illegible]-दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

46. के. एस. कोहली-जबलपुर, 47. ओम प्रकाश-आगरा, 48. आर्य समाज हँसापुरी-नागपुर, 49. भगतसिंह-दुर्ग 50. जीवनसिंह सैन्धव-सीहोर, 51. कमला शंकर भट्ट-भरूच, 52. विजय लक्ष्मी-डी. एस. ठाकर-धनबाद 53. कार्तिक चन्द्र मण्डल-साहेबगंज 54. चद्रकान्त पुरोहित-बड़ौदा, 55. पुष्कर नाथ मिश्र-सहर्षा, 56. रघुवीर सिंह-कांगड़ा, 57. एस. एल. आर्य-जलपाईगुड़ी 58. बी. के. साहनी-नई दिल्ली, 59. जानकी नाथ मथुरा प्रसाद खरगौन 60. देवसी भाई पटेल-कच्छ, 61. प्रह्लाद प्र० राजकुमार-बुलन्दशहर, 62. राम लखनसिंह-जौनपुर, 63. रविचन्द्र सिंह-गोंडा, 64. रघुनन्दन प्रसाद आर्य हजारीबाग, ए-96 65. रामकिशन गुप्ता-हावड़ा 66. नक्कूसिंह आर्य-मिर्जापुर 67. वीरेन्द्र पाल सिंह-उदयपुर, 68 पातीराम शर्मा-मुरादाबाद 69. आर. के. शर्मा-कुरुक्षेत्र 70. दुश्चन्त कुमार-बिजनौर 71. क. प्र. चोटी-दुर्ग 72. बजरंग लाल अग्रवाल-उड़ीसा 73. एस. एन. यादव, लखनऊ, 74. रामपुरी गोस्वामी, उज्जैन 75. ब्रजकिशोर श्री वास्तव गोण्डा 76. कृष्ण चरण जयसवाल-सुल्तानपुर, 77. तेजराम वकील-हजारीबाग, 78. हरवंशलाल गोयल, फरीदाबाद, 79. गौरी शंकर प्रसाद भोजपुर, 80. रमेशचन्द्र गर्म गणित प्रवक्ता-गाजियाबाद 81. वी. डी. सेठी श्री गंगानगर, 82. लक्ष्मण भगवत्-अमरावती, 83. ज्ञानचन्द व्यास हैदराबाद 84. राधेलाल मित्तल-खुरजा, 85. जगदीश प्रसाद सिन्हा परागजलीसपुर, 86. डा. रामपाल शास्त्री-मेरठ, 87. श्रीनिवास शर्मा-गाजियाबाद, 88. समनलाल मोहनलाल-मोखी, 89. श्रवणसिंह लखनऊ, 90 गणेशप्रसाद-छतरपुर, 91. रामसेवक चौहान-जबलपुर, 92. रामेश्वर लाल विश्नोई-श्री गंगानगर 93. जयराम-बलिया, 94. रामवली कन्नौजिया-हरदोई 95. भगवती देवी-देहरादून 96. प्रभात जनरल स्टोर शिकारपुर-बुलन्दशहर 97. श्री रामदेव आर्य-लखनऊ 98. दयाशंकर-सुल्तानपुर, 99. दिनेश चन्द्र शर्मा 100. साधूराम आर्य-बिजनौर 101. छोटेलाल गुप्ता हरदोई 102. राजाराम मंत्री-चुदरी वाला, 103. रामशंकर गुप्ता-हरदोई 104 शंकरसिंह आर्य-इन्दौर, 105. श्रीमती हरिदत्त-मुरादाबाद ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीता का कर्मयोग ही ज्ञानयोग है

—परमानन्द पटेल

कर्मफल की कामना का त्याग कोई शारीरिक क्रिया नहीं है। वह तो एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और जब तक व्यक्ति पूरी तरह से सारी कामनाओं या प्रयोजनों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह कर्म-फल की कामना से भी मुक्त नहीं हो सकता। अतः अर्जुन को फल की कामना को त्याग कर ही कर्म करने का उपदेश देकर, श्रीकृष्ण भगवान, वास्तव में समत्व बुद्धि या आत्मज्ञान प्राप्त करने को ही कहते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति बिना आत्मज्ञान किये, कर्मफल की कामना को त्याग ही नहीं सकता।

पुरातन काल से श्रीमद्भगवद्गीता विश्व में एक महान धार्मिक ग्रंथ माना जाता है। न केवल भारत के करोड़ों हिन्दू वरन विश्व के विभिन्न देशों के दूसरे धर्मावलम्बी भी अपने संकट के समय में भगवद्गीता से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

भगवद्गीता में ७०० श्लोक हैं, जिनमें ७० से ७५ श्लोक ही ऐसे हैं, जिनके अर्थ में विद्वानों में मतभेद है। टीकाकारों और भाष्यकारों के सारे मतभेद इन्हीं श्लोकों के अर्थ पर आधारित हैं। गीता में मूलतः कितने श्लोक थे और कितने बाद में जोड़े गए, इस विषय पर भी विद्वानों में गहरा मतभेद है।

कुछ विद्वानों का मत है कि गीता दूसरे अध्याय के बाद समाप्त हो जाती है। अपने मत की पुष्टि में वे यह तर्क प्रस्तुत करते हैं, कि कौरवों और पांडवों की सेनाएं जब हथियारों से सुसज्जित हो लड़ने हेतु तत्पर थीं, तब श्रीकृष्ण भगवान के पास इतना समय उपलब्ध नहीं था कि वे गीता के अठारह अध्याय सम्पूर्ण कह सकें। इस तथ्य को कोई स्वीकार करे या न करे परन्तु इतना निर्विवाद है कि पूरी गीता का सार तत्व इस दूसरे अध्याय में कहा गया है। श्रीकृष्ण भगवान इस अध्याय में अर्जुन को सांख्य-योग का उपदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देते हैं। यह सांख्य-योग, षट्दर्शन का सांख्य नहीं है कि जिसमें प्रकृति और पुरुष की विवेचना कर, उनके पारस्परिक सम्बन्धों की चर्चा की गयी है। यहाँ तो समत्व बुद्धि योग को ही सांख्य योग कहा है। इस समत्व बुद्धि योग का अर्थ है कि व्यक्ति, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समता को प्राप्त हो जाता है, जिससे उसकी तृष्णा, कामना प्रयोजन समाप्त हो जाते हैं और वह लाभ-हानि, जय-पराजय, प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा, यश-अपयश इत्यादि द्वन्द्वों के परे चला जाता है, जिसके फलस्वरूप वह अपने आप का परिपूर्ण, संतुष्ट एवं आनन्दित अनुभव करने लगता है। वास्तव में, यह समत्व बुद्धि ही आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान है। अत: इस अध्याय में श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन को आत्मज्ञान प्राप्त करने का उपदेश देते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है चूंकि अर्जुन की पृष्ठभूमि क्षत्रिय की थी, संभवत: इस कारण वे श्रीकृष्ण भगवान की इस आत्मज्ञान की भाषा को समझ न सके।

इसीलिए श्रीकृष्ण भगवान ने कर्म मार्ग की जिस भाषा और शब्दावली से अर्जुन परिचित थे, उसी भाषा और शब्दावली में उन्होंने आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान के तत्वदर्शन को प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया था। श्रीकृष्ण भगवान न केवल तत्वज्ञानी थे वरन् एक बड़े मनोवैज्ञानिक भी थे। चूंकि अर्जुन जन्म से क्षत्रिय थे, अत: स्वभावत: बाह्य कर्मों से लिप्त रहते थे। इसीलिए उन्होंने अर्जुन के स्वभाव को देखते हुए उपदेशित किया, कि तुम कर्म ही करो, परन्तु साथ ही यह महत्वपूर्ण शर्त भी लगा दी कि उस कर्म के फल की कामना को त्याग दो। उन्होंने दूसरे अध्याय के ४७वें श्लोक में 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' कहकर स्पष्ट कर दिया कि 'कर्म पर तो तुम्हारा अधिकार हो परन्तु फल की कामना कभी नहीं होनी चाहिए।'

यह स्पष्ट है कि इस उपदेश में कर्मफल की कामना का त्याग मुख्य बात है न कि बाह्य कर्म का त्याग। यह कर्म-फल की कामना का त्याग कोई शारीरिक क्रिया नहीं है। वह तो एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और जब तक व्यक्ति पूरी तरह से सारी कामनाओं या प्रयोजनों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह कर्म-फल की कामना से भी मुक्त नहीं हो सकता। अत: अर्जुन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को फल की कामना को त्याग कर ही कर्म करने का उपदेश देकर, श्रीकृष्ण भगवान, वास्तव में समत्व बुद्धि या आत्मज्ञान प्राप्त करने को ही कहते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति बिना आत्मज्ञान प्राप्त किए, कर्म फल की कामना को त्याग ही नहीं सकता।

इसी अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो आत्मज्ञान को प्राप्त हो जाता है, वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। साथ में यह भी कहा है कि स्थित-प्रज्ञ की मुख्य विशेषता कामनामुक्त होना ही है। अतः यह कर्मयोग केवल वाह्य कर्म से सम्बन्धित न होकर, मुख्यतः मन या बुद्धि पर आधारित है, क्योंकि सारी कामनाओं का उद्गम स्थान मन है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ऐसा कर्ममार्ग वास्तव में ज्ञानमार्ग ही है। इसीलिए श्रीकृष्ण भगवान ५वें अध्याय के चौथे श्लोक में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि 'केवल बाल-बुद्धि वाले अर्थात् अज्ञानी ही ज्ञान और कर्म को भिन्न-भिन्न मानते हैं।' वास्तव में जो व्यक्ति किसी भी एक में स्थिर हो जाता है उसे दोनों का फल प्राप्त होता है।' वे ५वें अध्याय के पाँचवेश्लोक में पुनः कहते हैं कि जो स्थिति ज्ञानी प्राप्त करते हैं वही स्थिति कर्मयोगी भी प्राप्त करते हैं। वही यथार्थ देखता है जो ज्ञान और कर्म को एक देखता है। यह स्पष्ट है कि यहां कर्म का उल्लेख वाह्य कर्म के सन्दर्भ में न होकर कामनारहित कर्म के सन्दर्भ में है।

इस सन्दर्भ में यह तथ्य बड़ा रोचक है कि उपनिषदों के महान दार्शनिक याज्ञवल्क्य ज्ञानमार्गी थे, परन्तु उनके शिष्य राजा जनक कर्ममार्गी थे। जबकि कर्ममार्गी राजा जनक के शिष्य शुकदेव ज्ञानमार्गी थे। वास्तव में ज्ञानमार्ग और फल की इच्छारहित कर्ममार्ग आध्यात्मिक दृष्टि से एक ही है। दोनों मार्गों में इच्छा, तृष्णा, वासना एवं प्रयोजन से मुक्त हो जाना आवश्यक है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति शून्यता को प्राप्त हो जाता है। इसी मनोवैज्ञानिक शून्यावस्था को पूर्णावस्था भी कहा जा सकता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि वह शून्य नहीं हो जाता। इसी भांति जब तक वह पूर्ण नहीं हो जाता तब तक वह शून्य नहीं हो सकता। यथार्थ में व्यक्ति जब कुछ पाने की कामना, तृष्णा इत्यादि से मुक्त हो जाता है तब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शून्य हो जाता है, और ज्यों ही वह शून्य हुआ, वह पूर्ण हो जाता है और वह अखण्डता तथा आनन्द की अनुभूति करने लगता है। यह बड़े मजे की बात है कि गौतम बुद्ध के शून्यवाद के विरोध में जब आदि शंकराचार्य पूर्ण की बात करते हैं तब वास्तव में वे परोक्ष रूप से बुद्ध का ही समर्थन करते हैं। इसीलिये शंकराचार्य को उनके विरोधियों ने प्रच्छन्न बौद्ध की संज्ञा भी दे डाली थी।

ऐसे व्यक्ति में, जो व्यक्तिगत इच्छा, वासना, तृष्णा से मुक्त होकर शून्य हो गया हो, उसमें प्रेम और करुणा स्वयमेव प्रवाहित होने लगते हैं, फलस्वरूप वह दूसरों के दुखों को दूर करने के लिए तत्पर हो जाता है। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी ईसा मसीह, रमण महर्षि आदि शंकराचार्य इत्यादि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। गौतम बुद्ध और ईसा मसीह ने तो यहां तक कहा था कि वे मनुष्य जाति के दुःखों को दूर करने के लिए पुनः इस पृथ्वी पर अवतार धारण करेंगे।

यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ज्ञान-प्राप्ति के पहले किए हुए कर्मों में और ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् किए हुए कर्मों में आकाश-पाताल का अन्तर है। ज्ञान-प्राप्ति के पूर्व किये हुए कर्मों का सामाजिक स्तर पर तो मूल्य हो सकता है परन्तु आध्यात्मिक स्तर पर उस कर्म का अपने आप में कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि ज्ञान-प्राप्ति के पूर्व किये हुए कर्मों में स्वार्थगत इच्छा, कामना का कुछ-न-कुछ अंश अवश्य रहता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में धन, यश, सत्ता या निर्वाण की कामना में तत्वतः कोई अंतर नहीं होता। वास्तव में ईश्वर प्राप्ति की कामना भी ईश्वर प्राप्ति में बाधक है। कामना से प्रेरित कोई भी कार्य अंततोगत्वा बंधनपूर्ण है। केवल ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् किया कामनारहित कर्म ही पवित्र और बंधन रहित है।

महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है कि 'कर्म व्यक्ति को बांधता है और ज्ञान उसे मुक्त करता है।' उत्तर गीता में भी स्पष्ट शब्दों में कहा गया है 'ज्ञानरूपी अमृत का पान करने वाले ज्ञानयोगी के लिए कोई भी कर्तव्य शेष नहीं रहता यदि कोई कर्तव्य शेष रहता है तो वह सच्चा ज्ञानी नहीं है। यहां कर्तव्य का अर्थ सामाजिक बाध्य कर्मों से है, आत्मज्ञान हो जाने पर

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कर्म किया जाता है, वह प्रेम और करुणा से स्वस्फुरित हुआ स्वाभाविक कर्म है, जो कि बाध्य कर्म नहीं है। अत: ऐसे कर्मों का निषेध नहीं है। बल्कि ऐसा कर्म ही पवित्र और बंधन रहित है।

इसी प्रकार गीता के तीसरे अध्याय के १७वें श्लोक में कहा गया है कि 'जो व्यक्ति आत्मा में ही लीन, तृप्त एवं संतुष्ट हो उस व्यक्ति के लिए कोई कर्तव्य कर्म नहीं रहता।'

महाभारत के शांति पर्व में व्यास जी शुकदेव जी से कहते हैं कि 'बड़े प्राचीन काल से ब्राह्मण ज्ञान के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के पश्चात् ही कर्म में प्रवृत्त होते हैं।

इसी प्रकार गीता के १८वे अध्याय के १७वें श्लोक में कहा गया है 'जो व्यक्ति अहंकार से मुक्त हो गया और जिसकी बुद्धि निष्कपट हो गयी अर्थात् जो ज्ञानी हो गया यदि वह किसी का वध भी करे तो वह वध का दोषी नहीं माना जाएगा।'

इन उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि आध्यात्मिक क्षेत्र में वाह्य कर्मों का कोई मूल्य नहीं है। मूल्य केवल आत्मज्ञान का है जिसमें से कि कामनारहित कर्म स्वस्फुरित होते हैं।

श्रीकृष्ण भगवान के इस उपदेश से प्रेरित हो अर्जुन आत्मज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान को प्राप्त होने के पश्चात् ही युद्ध में तत्पर हुए थे। गीता के १८वें अध्याय के ७३वें श्लोक में युद्ध के पूर्व अर्जुन द्वारा प्रयुक्त 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा' कथन उनकी आत्मज्ञान की उपलब्धि प्रमाणित करता है।

अत: मेरी दृष्टि में गीता का कर्मयोग यथार्थ में ज्ञानयोग ही है। वास्तव में सम्पूर्ण गीता का सार-संदेश आत्मज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान ही है। ★

भविष्य में एक समय ऐसा आएगा कि खुले आम सिगरेट पीने पर प्रतिबंध होगा। धूम्रपान करने वालों के धुएँ से भी कैंसर फैलता है। इसमें बहुत से तत्व होते हैं, जो इनके पास बैठने वालों में अनचाहे ही श्वास द्वारा प्रसारित होते हैं। हम यूं जाने कब चेतेंगे ? मालूम नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषायी प्रदूषण : एक बहुत बड़ा खतरा

—डा. कृष्णलाल

सरकार ने नई शिक्षानीति में त्रिभाषा-सूत्र के बहाने अंग्रेजी की अनिवार्यता का आधार पुष्ट किया है। इस नीति के फलस्वरूप भारतीयता और संस्कृति का मूल आधार तथा सभी भारतीय भाषाओं का संयोजकसूत्र बनी हुई। संस्कृत को स्कूलों के सामान्य शिक्षाक्रम से निष्कासित कर दिया गया है। अच्छा तो यह होता कि अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके संस्कृत को अनिवार्य किया जाता। परन्तु राजनीतिक संतुष्टीकरण की दृष्टि से बनाई गई शिक्षानीति में इन सब विचारों के लिए कोई स्थान नहीं है। विद्यालयों में पढ़ने वाले हमारे बालक उस महान संस्कृतिरूपी धरोहर का जो थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर पाते थे, नई शिक्षानीति द्वारा उन्हें उससे भी वंचित कर दिया गया है। इसके बिना नई शिक्षा नीति में निर्धारित सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों को छात्र कैसे प्राप्त कर सकेंगे, यह विचारणीय है।

हम प्रायः महानगरों में गाड़ियों, कारखानों आदि से होने वाले शोर, धूल, विषैले धुएं और गैसों के प्रदूषण के विषय में सुनते-पढ़ते रहते है। ये सब प्रदूषण किसी न किसी रूप में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ये अन्ततोगत्वा मनुष्य के मन और बुद्धि को भी प्रभावित करते हैं। परन्तु कुछ सावधानी और विशेष उपकरणों के द्वारा इन प्रदूषणों से बचा जा सकता है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ भी इन प्रदूषणों से बचने का एक सशक्त साधन है।

चिंता का विषय एक और भयानक प्रदूषण है जो हमारे मानस और हमारे चिंतन को बड़ी तीव्रता से प्रभावित कर रहा है। क्या संसार में कोई देश ऐसा है जहां के निवासी अपने आपसे और अपने देश, अपनी भाषा से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
घृणा करते हों ? इस मानसिक प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण बढ़ता हुआ अंग्रेजी का दबदबा और बढ़ती हुई उसकी दासता है। मैंने भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्यटन करते हुए देखा है कि पर्यटक बस में मार्गदर्शक बिना पूछे अंग्रेजी में बोलता चला जाता है और हिन्दी भाषी प्रदेशों के लोग तथा अन्य प्रदेशों के लोग भी, जो हिन्दी को अंग्रजी की अपेक्षा अधिक अच्छा समझ सकते हैं, चुपचाप बैठे हुए सुनते रहते हैं। कोई भी मार्गदर्शक से हिन्दी में बोल कर सब कुछ समझाने का आग्रह नहीं करता। कुछ लोगों से बात करने पर ऐसा लगा कि अपना अंग्रेजी का अज्ञान अथवा अल्प-ज्ञान प्रकट करने में उन्हें लज्जा होती है। यह भी एक सत्य है कि बहुत बार यदि बस के आधे यात्री भी हिन्दी का आग्रह करें तो मार्गदर्शक हिन्दी में बोलेगा और उसे उसमें अधिक सुविधा भी होगी। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इस झूठी शान के प्रदूषण से बचने का हम कोई प्रयास नहीं करते।

माताजी, पिता जी कहलाना तो बच्चों को भुला ही दिया गया है, दादी नानी को भी अपने आपको दादी नानी कहलवाने में लज्जा आती है। वे बड़ी मम्मी कहलवाने में गर्व का अनुभव करती हैं। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में डालने के लिए लोग इतने दीवाने हो गए हैं कि उनकी माँग को देखते हुए गली-गली और मुहल्ले-मुहल्ले में (गाँवों में भी) शिक्षा की अंग्रेजी माध्यम की दुकानों की बाढ़ आ गई है। इसकी किसी को चिंता नहीं कि इन दुकानों पर शिक्षा का स्तर कैसा है। विषय समझ में आये न आये, अंग्रेजी के शब्द, वाक्य, कविताएं गीत आदि अवश्य रटे हुए होने चाहिएं। अंग्रेजी में गिनती, अंग्रेजी में पहाड़े समझे बिना रटकर गर्व का अनुभव करते हैं। मैंने बच्चों को कहते हुए सुना है कि "मेरे पास टेन (दस) पैसे हैं।" यही बात रंगों के विषय में है। आप किसी साड़ी की दुकान पर जाइये, वहां अल्पशिक्षित औरतें भी दुकानदार को अंग्रेजी रंग बताती हुई मिलेंगी—पिंक कलर, रेड कलर, औरेंज कलर, आदि। स्वाभाविक रूप से दुकानदार भी फिर इन्हीं रंगों में बात करता है। क्या आगे आने वाली पीढ़ियां हिन्दी के लुभावने रंगों के नाम यथा धानी, कत्थई, जामुनी, बैंगनी, तोतई, गुलाबी, उन्नावी, आदि नाम भूल जायेंगी ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषायी प्रदूषण : एक बहुत बड़ा खतरा

—डा. कृष्णलाल

सरकार ने नई शिक्षानीति में त्रिभाषा-सूत्र के बहाने अंग्रेजी की अनिवार्यता का आधार पुष्ट किया है। इस नीति के फलस्वरूप भारतीयता और संस्कृति का मूल आधार तथा सभी भारतीय भाषाओं का संयोजकसूत्र बनी हुई। संस्कृत को स्कूलों के सामान्य शिक्षाक्रम से निष्कासित कर दिया गया है। अच्छा तो यह होता कि अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके संस्कृत को अनिवार्य किया जाता। परन्तु राजनीतिक संतुष्टीकरण की दृष्टि से बनाई गई शिक्षानीति में इन सब विचारों के लिए कोई स्थान नहीं है। विद्यालयों में पढ़ने वाले हमारे बालक उस महान संस्कृतिरुपी धरोहर का जो थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर पाते थे, नई शिक्षानीति द्वारा उन्हें उससे भी वंचित कर दिया गया है। इसके बिना नई शिक्षा नीति में निर्धारित सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों को छात्र कैसे प्राप्त कर सकेंगे, यह विचारणीय है।

हम प्रायः महानगरों में गाड़ियों, कारखानों आदि से होने वाले शोर, धूल, विषैले धुएं और गैसों के प्रदूषण के विषय में सुनते-पढ़ते रहते है। ये सब प्रदूषण किसी न किसी रूप में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ये अन्ततोगत्वा मनुष्य के मन और बुद्धि को भी प्रभावित करते हैं। परन्तु कुछ सावधानी और विशेष उपकरणों के द्वारा इन प्रदूषणों से बचा जा सकता है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ भी इन प्रदूषणों से बचने का एक सशक्त साधन है।

चिंता का विषय एक और भयानक प्रदूषण है जो हमारे मानस और हमारे चिंतन को बड़ी तीव्रता से प्रभाविव कर रहा है। क्या संसार में कोई देश ऐसा है जहां के निवासी अपने आपसे और अपने देश, अपनी भाषा से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घृणा करते हों ? इस मानसिक प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण बढ़ता हुआ अंग्रेजी का दबदबा और बढ़ती हुई उसकी दासता है। मैंने भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्यटन करते हुए देखा है कि पर्यटक बस में मार्गदर्शक बिना पूछे अंग्रेजी में बोलता चला जाता है और हिन्दी भाषी प्रदेशों के लोग तथा अन्य प्रदेशों के लोग भी, जो हिन्दी को अंग्रजी की अपेक्षा अधिक अच्छा समझ सकते हैं, चुपचाप बैठे हुए सुनते रहते हैं। कोई भी मार्गदर्शक से हिन्दी में बोल कर सब कुछ समझाने का आग्रह नहीं करता। कुछ लोगों से बात करने पर ऐसा लगा कि अपना अंग्रेजी का अज्ञान अथवा अल्प-ज्ञान प्रकट करने में उन्हें लज्जा होती है। यह भी एक सत्य है कि बहुत बार यदि बस के आधे यात्री भी हिन्दी का आग्रह करें तो मार्गदर्शक हिन्दी में बोलेगा और उसे उसमें अधिक सुविधा भी होगी। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इस झूठा शान के प्रदूषण से बचने का हम कोई प्रयास नही करते।

माताजी, पिता जी कहलाना तो बच्चों को भुला ही दिया गया है, दादी नानी को भी अपने आपको दादी नानी कहलवाने में लज्जा आती है। वे बड़ी मम्मी कहलवाने में गर्व का अनुभव करती हैं। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में डालने के लिए लोग इतने दीवाने हो गए हैं कि उनकी माँग को देखते हुए गली-गली और मुहल्ले-मुहल्ले में (गांवों में भी) शिक्षा की अंग्रेजी माध्यम की दुकानों की बाढ़ आ गई है। इसकी किसी को चिंता नहीं कि इन दुकानों पर शिक्षा का स्तर कैसा है। विषय समझ में आये न आये, अंग्रेजी के शब्द, वाक्य, कविताएं गीत आदि अवश्य रटे हुए होने चाहिएं। अंग्रेजी में गिनती, अंग्रेजी में पहाड़े समझे बिना रटकर गर्व का अनुभव करते हैं। मैंने बच्चों को कहते हुए सुना है कि "मेरे पास टेन (दस) पैसे हैं।" यही बात रंगों के विषय में है। आप किसी साड़ी की दुकान पर जाइये, वहां अल्पशिक्षित औरतें भी दुकानदार को अंग्रेजी रंग बताती हुई मिलेंगी—पिंक कलर, रेड कलर, औरेंज कलर, आदि। स्वाभाविक रूप से दुकानदार भी फिर इन्हीं रंगों में बात करता है। क्या आगे आने वाली पीढ़ियां हिन्दी के लुभावने रंगों के नाम यथा धानी, कत्थई, जामुनी, बैंगनी, तोतई, गुलाबी, उन्नाबी, आदि नाम भूल जायेंगी ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इससे बड़ा मानसिक प्रदूषण और क्या होगा ?

अभी कुछ समय पूर्व तक कम से कम दिल्ली के सरकारी तथा सहायता प्राप्त विद्यालयों में प्रायः हिन्दी माध्यम ही चलता था। परन्तु अब पब्लिक स्कूलों की देखादेखी इन स्कूलों में भी बड़ी तीव्रता से अंग्रेजी माध्यम का चलन बढ़ता जा रहा हैं। दूसरी ओर सरकार से उच्च स्तर पर हिन्दी माध्यम की माँग भी की जा रही है। अनेक नौकरी सम्बन्धी तथा अन्य उच्चस्तरीय परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प हो भी गया है। आवश्यकता इस बात की है कि इस सुविधा का अधिक से अधिक लाभ उठाया जाये।

इस प्रदूषण का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। बड़ी-बड़ी दुकानों, उद्योगों,, व्यक्तियों आदि के नामपट्ट और कामकाज अब अधिकतर अंग्रेजी में किए जाने लगे हैं। अनेक पुस्तक-विक्रेता हिन्दी की पुस्तक आदि की रसीद भी रोमन अक्षरों में काट कर देते हैं। बहियां-खाते भी बहुत से दुकानदारों, उद्योग-पतियों ने अंग्रेजी में रखने आरम्भ कर दिये हैं। सरकार का इस विषय में कोई दबाव या अनिवार्यता नही है। इससे निजी क्षेत्र की समस्या और विकट बनती जा रही है। सरकार अपने कार्यालयों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों के लिए हिन्दी के विकल्प का नियम बना दे तो भी दासता की मनो-वृत्ति वाले निजी क्षेत्र में सरकार का कोई बंधन नहीं रहेगा। ये उद्योग तथा व्यापारिक प्रतिष्ठान भी नवयुवकों के लिए नौकरियों के बहुत बड़े स्रोत हैं। इस आकर्षण से भी अंग्रेजी की दासता सम्बन्धी मानसिक प्रदूषण बढ़ रहा हैं। आवश्यकता इस बात की हैं कि सरकार भाषा-सम्बन्धी अपने नियमों को सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के साथ-साथ निजी प्रतिष्ठानों के लिए भी अनिवार्य कर दे। इसका सब से पहला और सुगम उपाय यह है कि निजी प्रतिष्ठानों से दृढ़तापूर्वक हिन्दी में पत्र-व्यवहार करवाया जाये। टाटा-बिरला जैसे निजी उद्योगों ने स्वतन्त्रता संग्राम में बहुत योग दान किया, परन्तु दुःख की बात है कि ये उद्योग अब राष्ट्रभाषा के प्रयोग से पीछे हट कर अंग्रेजी और अंग्रेजियत को बढ़ावा दे रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुःख की पराकाष्ठा यह है कि सरकार द्वारा खोले गए कुछ आदर्श विद्यालयों और कुछ आदर्श हो या न हो, परन्तु उनका 'आदर्श' इस बात में अवश्य है कि वहाँ के बच्चे गले में टाई लगाकर और अंग्रेजी माध्यम से पढ़ कर अपने आपको साहब मानने लग जाते हैं और दूसरे साथियों को हेय दृष्टि से देखते हैं। स्वाभाविक भी है क्योंकि आगे चल कर इन्हीं में सरकार चलाने वाले, इंजीनियर तथा डाक्टर साहब तैयार होंगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि अंग्रेजी का शासन और अंग्रेजों के जाने के पश्चात् भी अंग्रेजियत का शासन हमारे मनों पर पूर्ववत् ही नहीं, उससे भी अधिक बना हुआ है।

यदि हम भारत को शुद्ध भारत रखना चाहते हैं और भारतीयता की भावना को जीवित रखना चाहते हैं, यदि हम चाहते हैं कि यहाँ सच्चे अर्थों में जन-जन का शासन हो तो तुरन्त सभी शिक्षा तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में हिन्दी को लाना होगा। कम से कम उसके प्रयोग की छूट सर्वत्र देनी होगी। इंजीनियरिंग, चिकित्साशास्त्र, वकालत आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षा और परीक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी का विकल्प दिया जाना समय की मांग है। अन्यथा कोई आश्चर्य नहीं कि वर्तमान परिस्थिति चिरकाल से शोषित हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ने वाले नवयुवकों को अपने अधिकार के लिए महाविप्लव की प्रेरणा दे। इस महाविप्लव का सारा दायित्व सरकार की अंग्रेजी-पोषण की नीति पर होगा। मैं समझता हूँ कि यदि भारतीय युवक अपने इस मौलिक अधिकार के लिए संघर्ष नहीं करता तो उसमें चेतना का अभाव है।

इस मानसिक प्रदूषण के लिए सरकार ने नई शिक्षा-नीति त्रिभाषा सूत्र के बहाने अंग्रेजी की अनिवार्यता का आधार पुष्ट किया है। इस नीति के फलस्वरूप भारतीयता और संस्कृति का मूल आधार तथा सभी भारतीय भाषाओं का संयोजकसूत्र बनी हुई संस्कृत को स्कूलों के सामान्य शिक्षाक्रम से निष्कासित कर दिया गया है। अच्छा तो यह होता कि अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके संस्कृत को अनिवार्य किया जाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु राजनीतिक संतुष्टिकरण की दृष्टि से बनाई गई शिक्षानीति में इन सब विचारों के लिए कोई स्थान नहीं है। विद्यालयों में पढ़ने वाले हमारे बालक उस महान संस्कृतरूपी धरोहर का जो थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त कर पाते थे, नई शिक्षानीति द्वारा उन्हें उससे भी वंचित कर दिया गया है। इसके बिना नई शिक्षानीति में निर्धारित सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों को छात्र कैसे प्राप्त कर सकेंगे, यह विचारणीय है। इस प्रकार निश्चय ही इस शिक्षानीति से अंग्रेजी और अंग्रेजियत के द्वारा और भारतीय सांस्कृतिक मूल्य के अभाव में यह दासता, मानसिक और बौद्धिक प्रदूषण बढ़ेगा।

इस प्रदूषण का क्षेत्र बढ़ाने में दूरदर्शन की भूमिका को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। नित्यप्रति भारतीय दूरदर्शन का आधे से अधिक समय अंग्रेजी के प्रसारणों में जाता है। सरकार की इस नीति को देख कर निजी उद्योगों ने भी अपने बहुत से विज्ञापन अंग्रेजी में प्रसारित करने प्रारम्भ कर दिये। यदि वह भारतीय दूरदर्शन है और भारतीय जनता के लिए है, तो केवल दो प्रतिशत अंग्रेजी समझने वालों के लिए इसके प्रसारण अंग्रेजी में नहीं होने चाहिए। क्या करोड़ों भारतीय जनता मूर्ख है जो बिना समझे केवल बैठी चित्र देखती रहती हैं? दूरदर्शन में कोई हिन्दीतर प्रादेशिक फिल्म अथवा अंग्रेजी से भिन्न विदेशी फिल्म दिखाई जाती है तो उसके संवाद आदि केवल अंग्रेजी में ही लिखे हुए दिखाये जाते हैं जब कि सारे देश में अस्सी प्रतिशत लोग हिन्दी समझ लेते हैं परन्तु अंग्रेजी समझने वाले मात्र दो प्रतिशत हैं। इसके पीछे हिन्दी वाक्यों को अनुपलब्धता एक थोथा बहाना है। यदि इच्छा हो तो सामान्य जनता की सेवा के लिए आधुनिक मशीनों के द्वारा सब कुछ किया जा सकता है।

स्वयं हिन्दी का प्रदूषण भी इस प्रदूषण का एक अन्य रूप है। दूरदर्शन, आकाशवाणी और समाचारपत्रों की हिन्दी में जानबूझ कर अंग्रेजी और उर्दू-फारसी शब्दों को घुसेड़ा जाता है। इसके कुछ उदाहरण हैं संसद् के लिए पार्लियामेंट, बहिर्गमन के लिए वाकआउट, सूची के लिये लिस्ट, प्रस्ताव के लिए पेशकश, अन्तर्गत के लिए तहत, विषय के लिए मुद्दा इत्यादि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी के एक प्रमुख दैनिक के केवल एक अंक के एक पृष्ठ पर निम्नलिखित शब्दों को देख कर आश्चर्य हुआ जो कि हिन्दी के अखिल भारतीय रूप के सर्वथा अनुकूल नहीं है। जवाबदेही, इस्तीफा, हालाँकि, खुफिया तौर, बावजूद, मसले, नामंजूर, तादाद, बतौर, सिर्फ, जरूरी, फोर्स, लवाज, मौजूदगी, एडवोकेट, नाकामयाब। यह देखकर और भी आश्चर्य होता है कि बहुत से व्यक्ति हिन्दी के समाचार पत्र में अंग्रेजी में विज्ञापन देते हैं।

हमारे नेताओं की स्थिति कितनी दयनीय है। हमें अंग्रेजी आती है, हम अंग्रेजी बोल सकते हैं, यह दिखाने के लिए हिन्दी भाषी प्रदेशों से चुने गए संसद्सदस्य एवं मंत्री हिन्दी में न बोलकर अंग्रेजी में बोलना अधिक अच्छा समझते हैं। यह उस जनता से कितना बड़ा छल है जिसके प्रतिनिधि बनकर वे संसद में बैठते हैं। जनता में यह जागरूकता होनी चाहिए कि इस प्रकार का छल करने वाले नेता को वह चुनाव क्षेत्र में आने पर अपमानित करें और उसे यह बोध कराये कि ऐसा आचरण करने पर उसका फिर से निर्वाचित होना असंभव है। अन्यथा ऐसे नेता इस प्रकार का भाषागत प्रदूषण फैलाते रहेंगे। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् कहा था कि भूल जाओ कि गाँधी अंग्रेजी जानता है। और दूसरी ओर ये नेता हैं जिन्हें अपनी भाषा बोलने में संकोच होता है।

इस मानसिक और बौद्धिक प्रदूषण से भारत की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा जैसा कि मैकाले चाहता था हम शरीर मात्र से भारतीय रह जायेंगे, मन और बुद्धि से अंग्रेज हो जायेंगे।

★ अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक दोषी है।

—डा० अम्बेडकर

★ परमात्मा पूजा का नहीं प्रेम का भूखा है। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ बड़प्पन सूट-बूट और ठाठ से नहीं, जिसकी आत्मा पवित्र है वही बड़ा कहलाने योग्य है। —प्रेमचन्द

★ यदि तुम्हारा हृदय ज्वालामुखी है तो तुम कैसे आशा करोगे कि तुम्हारे हाथों में फूल खिलेंगे। —खलील जिब्रान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वस्थ रहना हो तो संतुलित आहार लीजिए

—डा० ओ० पी० उपाध्याय

एक व्यक्ति जो शारीरिक श्रम अधिक करता है और दूसरा जो मानसिक श्रम अधिक करता है, इन दोनों ही दशाओं में रोग की संभावना बढ़ जाती है। अध्ययन से यह देखा गया है कि शारीरिक श्रम अधिक करने के कारण उत्पन्न थकान को मानसिक श्रम से दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार मानसिक थकान शारीरिक श्रम व्यायाम, व्रत, पूजा आदि द्वारा कम कर सकते हैं। शरीर और मन के नियंत्रण के साथ ही इन्द्रियों पर नियंत्रण और उसका अयोग, मिथ्यायोग, अतियोग न होने से अनेक रोगों से छुटकारा प्राप्त हो सकता है।

देहाती कहावत है, "प्रथम स्वर्ग है सुन्दर काया"। वास्तव में मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ सुख सुन्दर स्वास्थ्य है। इसके अभाव में विश्व की समस्त उपलब्धियां बेकार हैं। हमारे पूर्वजों ने इस बात को जोर देकर कहा कि "शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्"—शरीर की रक्षा करना मानव का प्रथम धर्म हैं। वेदों की सूक्तियों में भी कहा गया है कि "शरीररक्षण ही धर्मः"। इसी हेतु चिकित्सा-वैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर बल दिया है जिसके अंतर्गत व्यक्ति के लिए दिनचर्या, ऋतुचर्या आदि को महत्व दिया गया।

युगान्तर से मानव-समाज की सभ्यता का विकास उत्तरोत्तर होता जा रहा है। इस संदर्भ में उसका व्यवितगत स्वास्थ्य बड़ा ही महत्व रखता है। सचमुच मानवशरीर एक विचित्र यंत्र के समान है जिसमें मस्तिष्क एक कुशल जीवन-चालक है। जीवन की समस्त शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक गति-विधियां इसी पर निर्भर है। सामान्य लोग स्वास्थ्य का अर्थ शारीरिक स्वास्थ्य से लेते हैं परन्तु उत्तम स्वस्थ पुरुष वही है जिसका शरीर, मन, आत्मा, और इन्द्रियां प्रसन्न एवं स्वस्थ हों और इनके बीच आपसी सामंजस्य स्थापित हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसमें किसी भी प्रकार की असमानता या असहयोग व्यक्ति के लिए रोग का कारण है। ये रोग दो प्रकार के होते हैं—भूख, प्यास, इन्द्रिय विकार तथा आहार-विहार में हुए अनियन्त्रण के कारण उत्पन्न रोग को शारीरिक एवं काम, क्रोध, मद, लोभ एवं द्वेष से उत्पन्न विकारों को मानसिक रोग की संज्ञा दी गई हैं।

जीवन का अर्थ व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं अथवा शक्तियों के स्वाभाविक संचालन से है। स्मरणीय है कि व्यक्ति की समस्त क्रियाओं के संचालन हेतु जिस शक्ति की आवश्यकता है उसे ऊर्जा कहते हैं, जो उसके द्वारा ग्रहण किए गए भोजन पर निर्भर है। अतः भोजन व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता है। व्यक्ति की रूचि, जाति, भौगोलिक स्थिति आदि के अनुसार भोजन में भिन्नता होती है। एक व्यक्ति के लिए भोजन इसलिए भी आवश्यक है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ एवं प्रसन्न रखते हुए अपनी समस्त चेष्टाओं या शक्तियों का भरपूर उपयोग मानवीय गुणों के विकास हेतु कर सके। भारतीय शास्त्रों में भी इस बात पर भी जोर दिया गया है कि भोजन प्राणीमात्र के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है, जल विशेष आवश्यक है तथा वायु परम आवश्यक है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह उत्तम और पौष्टिक भोजन करे, शुद्ध स्वच्छ जल और शुद्ध वायु उपयोग में लाए। साथ ही प्रदूषणरहित वातावरण में जीवन व्यतीत करे।

आज भौतिकता एवं आधुनिकता के परिवेश में मनुष्य जितनी ही सुविधाएं प्राप्त करता जा रहा हैं उतना ही वह दुःखी है। यदि यह स्थिति अधिक काल तक बनी रही तो संभव है कि आने वाले दिनों में सामान्य स्वास्थ्य दुर्लभ हो जाएगा। आज समाज के एक वर्ग के लिए जहां निर्धनता, अशिक्षा अल्प एवं असंतुलित भोजन रोग का प्रमुख कारण है वहीं दूसरे वर्ग के लिए उनकी साधनसम्पन्नता अनेक रोगों की जननी है। आखिर ऐसा कब तक रहेगा ?

आधुनिक सभ्यता ने मानवीय संस्कारों का इस तरह हनन किया है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धनलोलुपता, वैमनस्य, आपसी कलह को प्रश्रय मिला है, समाज विभाजित हुआ है, उसकी क्षमताएं क्षीण हुई हैं जिसका परिणाम हुआ कि मनुष्य अपने को प्रकृति से दूर करता जा रहा है, लोगों में विश्वास का तो नाम नहीं रह गया। कृत्रिमता ने वास्तविकता का गला घोंट डाला, हर जगह मिलावट ने अच्छी से अच्छी गुणकारक उपयोगी वस्तुओं को प्राणनाशक बना डाला है, जीवनोपयोगी वस्तुएं लुप्तप्राय होती जा रही हैं। आज हमारे लिए प्रकृति प्रदत्त सुख-सुविधाएं, शक्तियों और मानवीय अधिकारों का उपयोग मानव जीवन की रक्षा के लिए करना आवश्यक है।

आहार-विहार का तात्पर्य उस संतुलित भोजन और व्यसन से है जो कि व्यक्ति की आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति बढ़ाने वाला हो। अब जहां तक संतुलित भोजन का प्रश्न है, ऐसा भोजन जिसमें शरीर के उतकों के पोषण हेतु आवश्यक तत्व, खनिज एवं विटामिन पाए जाते हैं। इसके लिए भोजन के घटकों की मात्रा विशेष महत्व रखती है। भोजन मात्रा में उतना ही लिया जाय जिससे पाचन क्रिया सामान्य रहे और स्वभावत: वह मन को प्रिय लगे। अधपका, अरुचिकर दुर्गन्धयुक्त, बासी और जूठा भोजन अस्वास्थ्यकर है। गाँवों में लोग कहते हैं—जैसा करो आहार, वैसा बने विचार। जैसा पियो पानी, वैसी बोलो वानी।

एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए उतना ही भोजन आवश्यक हैं जिसमें २०००-२५०० कैलोरी ऊर्जा प्राप्त हो। इसी प्रकार एक से दो वर्ष के बच्चे के लिए १०००, दो से तीन वर्ष के लिए १०००-१२५०, तीन से छह वर्ष के बच्चे को १५०० और छह वर्ष से अधिक उम्र वालों को २००० कैलोरी ऊर्जा के लिये भोजन प्रयोग में लाना चाहिए। वहां जानकारी के लिए २००० कैलोरी ऊर्जा वाले भोजन में आवश्यक घटकों की निश्चित मात्रा दी गई है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट ४४० ग्राम, प्रोटीन ६० ग्राम, कैल्शियम ०.८ ग्राम, फास्फोरस १.४ ग्राम, लौह तत्व ०.४० मिलीग्राम, विटामिन ए ७.३ माइक्रोग्राम, विटामिन बी १.८ मिलीग्राम और विटामिन सी की .२० मिलीग्राम की मात्रा होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त व्यक्ति की आवश्यकता और श्रम के अनुसार यह मात्रा घटायी-बढ़ायी जा सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज जनसंख्या की वृद्धि गरीबी का प्रमुख कारण है, जिससे अधिकाँश लोगों को संतुलित भोजन नहीं मिलता। लोग सस्ते कार्बोहाइड्रेट का अधिक प्रयोग करते हैं, भोजन में प्रोटीन, चर्बी और विटामिन तत्वों की मात्रा अल्प होने से रोग-प्रतिरोधक क्षमता घटी जा रही है। लोगों की आयु, बल और क्षमता क्षीण हो रही है और 'एड्स' जैसी घातक बीमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है। आज विश्व में औसत आयु ५६ वर्ष है। पहले लोगों की औसत आयु ६० वर्ष से अधिक थी और १०० वर्ष वाले व्यक्तियों की संख्या आज की अपेक्षा अधिक होती थी। आज भी सोवियत सरकार ने अपने सर्वेक्षण में बताया है कि "असुरा आभारोवा" में अनेक व्यक्ति १५६ वर्ष की आयु वाले हैं। जब उन व्यक्तियों के आहार-विहार और स्वास्थ्य के विषय में पूछा गया तो मालूम हुआ कि वे अपने भोजन में दूध और दूध के बने पदार्थ, हरी शाक-सब्जियाँ, फल और अन्य प्राकृतिक वस्तुओं का अधिक सेवन करते हैं। वे लोग चिकित्सा भी आसपास की औषधियों द्वारा स्वयं कर लेते हैं और माँस, मदिरा, धूम्रपान का सेवन तो बिल्कुल नहीं करते। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी रोगों की चिकित्सा में आहार-विहार की उपयोगिता पर बल दिया है। चिकित्सकों के अनुसार पशुओं के माँस, चर्बीयुक्त भोजन, अण्डे, धूम्रपान और मदिरापान से अनेक बीमारियां उत्पन्न होती हैं। आज अनेक रोगों जैसे, मधुमेह, हृदयरोग, गठिया, रक्तचाप आदि में आहार-विहार में नियंत्रण लाकर शीघ्र ही चिकित्सा की जा सकती हैं।

पूर्ण स्वस्थता के लिए शारीरिक एवं मानसिक श्रम में सामंजस्य लाना अधिक महत्व रखता है। एक व्यक्ति जो शारीरिक श्रम अधिक करता है और दूसरा जो मानसिक श्रम अधिक करता है, इन दोनों ही दशाओं में रोग की संभावना बढ़ जाती है। अध्ययन से यह देखा गया है कि शारीरिक श्रम अधिक करने के कारण उत्पन्न थकान को मानसिक श्रम से दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार मानसिक थकान शारीरिक श्रम, व्यायाम, व्रत, पूजा आदि द्वारा कम कर सकते हैं। शरीर और मन के नियंत्रण के साथ ही इन्द्रिय पर नियंत्रण और उसका अयोग, मिथ्यायोग, अतियोग न होने से अनेक रोगों से छुटकारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राप्त हो सकता है।

व्यक्ति की हीन भावना उसे कभी पनपने नहीं देती, इसलिए अपने को सदैव प्रसन्न रखना, थोड़े ही सुख-साधनों में अपने को सुखी महसूस करना उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। जीवन की बढ़ती आपाधापी से असंतोष और ईर्ष्या बढ़ती है और हीन भावना को बढ़ावा मिलता है। जो मानसिक रोगों की उत्पत्ति का प्रमुख कारण है। हमारे ऋषि महर्षियों ने अपने उपदेशों में मानव कल्याण हेतु स्पष्ट कहा है। कि संसार में सबसे बड़ा और प्रसन्न वही हैं जो दूसरों को दुःख नहीं देता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति अपने परिवार, समाज, राष्ट्र और समस्त प्राणी मात्र के प्रति श्रद्धा के साथ सेवाभाव रखे तो वह सांसारिक कष्टों से सर्वथा मुक्त रहेगा। इस कार्य के लिए "वसुधेव कुटुम्बकम्" सिद्धाँत का अक्षरशः पालन आवश्यक है।

मस्तिष्क जब अपने कार्यों से थक जाता है तो उसे विश्राम की आवश्यकता होती है। नियमित विश्राम न करने तथा अवयवों का लगातार कार्य करते रहने से बुद्धि, बल एवं आयु क्षीण होती है। अतः स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्देशों में स्पष्ट कहा गया है कि व्यक्ति को नियमित रूप से अवश्य विश्राम करना चाहिए। प्रकृति ने भी इसकी समुचित व्यवस्था कर रात और दिन बनाये हैं। व्यक्ति जब दिन भर कार्य करके थक जाता है तो वह रात्रि में विश्राम करता है। विश्राम से शरीर की थकान तो दूर होती ही है, साथ ही प्रसन्नता एवं शारीरिक स्फूर्ति भी मिलती है, व्यक्ति सुख का अनुभव करता है। हर व्यक्ति के लिए छह से आठ घंटे निद्रा की आवश्यकता होती है, किंतु बच्चों में यह मात्रा १२ से १८ घंटे की होती है।

आधुनिक सभ्यता से नशे की प्रवृत्ति बढ़ी है। इससे थोड़ी देर के लिए आत्मशक्ति भले ही मिलती होगी, परन्तु बाद में आदत सी बन जाती है जो छुड़ाने से नहीं छूटती। अधिक दिनों तक लगातार प्रयोग करने से हृदय-रोग, कैंसर, रक्तचाप जैसी भयंकर व्याधियां उत्पन्न होती हैं। इसलिए गांजा, भांग, तम्बाकू एवं मदिरापान नहीं करना चाहिए बल्कि मानसिक शाँति के लिए अन्य सुलभ साधन जैसे व्यायाम, प्रातः सायं टहलना, पूजा और व्रत आदि के द्वारा मानसिक सुख प्राप्त करना चाहिए। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

23 दिसम्बर, बलिदान-दिवस पर

स्वामी श्रद्धानन्द

—सिद्धार्थ

ऋषि दयानन्द ने संसार में अपनी जिस दिव्य वाणी को गुंजाया उसको आत्मसात करके आजीवन कठिन धर्ममार्ग पर चलने वाले महानुभावों में स्वामी श्रद्धानन्द का नाम आदर से लिया जाता है। ऐसा तो न्यूनाधिक सभी महापुरुषों के साथ होता है कि उनसे प्रभावित हुए जनों में अधिकांश भावुकतावश, एक लहर के साथ बहे हुए जैसे होते हैं, परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जो महापुरुषों के लक्ष्य-उद्देश्य को सम्यक् समझ-बूझकर उनका अनुकरण करते हैं। ऐसे ही (दयानन्दऋषि के) अनुयायियों में स्वामी श्रद्धानन्द की गणना की जाती है।

ऋषिवर के देहत्याग के पश्चात् आर्यजगत् में उच्छृंखलता और दिशा हीनता की जो स्थिति उत्पन्न हो गई थी, श्रद्धानन्द जी ने उसका नियमन किया। उन्होंने बरेली नगर में महर्षि दयानन्द का सान्निध्य प्राप्त किया था और तत्काल में उन्होंने जो कुछ उनसे प्राप्त किया था, उसे किस प्रकार सूद-व्याज समेत लोकार्पण किया; इसका साक्षी वह इतिहास है जो श्रद्धानन्द की श्रद्धा और रक्त-मसि से लिखा गया।

आज के इस राक्षसी युग में, जबकि 'गुरु-ऋण से उऋण होना' मजाक बन चुका है, मानवीय मूल्य अपना अस्तित्व विलुप्त कर चुके हैं और त्याग-तपस्या एवं सत्य जैसे शब्द मखौल और शक्ति-साधन हीन के सर्वस्व बनाये-वताये जा रहे हैं, जहाँ धार्मिकता ढकोसला बन चुकी है, तब दिव्यमूर्ति श्रद्धानन्द की श्रद्धा और भक्ति किसकी आँखों में आँसू नहीं लाएगी ! उस क्रान्ति-धर्मी पुरुष ने अपने गुरु की स्मृति को अक्षुण्ण रखते हुए निष्कपट और निष्काम भाव से अपना तन-मन-धन इस देश और धर्म की रक्षा में बलिदान कर दिया।

श्रद्धानन्द के पूर्व जीवन को देखकर कौन मनुष्य विश्वास कर सकता था कि यह व्यक्ति कभी मनुष्य जाति के इतिहास में अद्भुत स्थान प्राप्त कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकेगा और अनेक साहसिक निर्णय लेते हुए राष्ट्र-गगन में सूर्य की भाँति भास्वान् होगा ! महात्मा और आचार्य बनने से पूर्व मुंशीराम ने कुसंगति में पड़कर क्या-क्या दुष्कर्म किए; यह उन्होंने अपनी आत्मकथा में स्वयं स्पष्ट कर दिया। निष्कलंक मुंशीराम की पवित्र और निर्मल आत्मा पर कुछ काल तक मलावरण रहा और फिर परिवाट् दयानन्द के तेज की रगड़ ने उसकी आत्मा को ऐसा चमकाया कि मुंशीराम का तेज लोक में प्रखरता के चरम को पहुँचा।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन इस बात का प्रबल प्रमाण है कि सहस्रों वर्ष पश्चात् भारतवर्ष में अवतरित हुए देव दयानन्द ने कैसी-कैसी पतित आत्माओं का न केवल उद्धार किया प्रत्युत उन्हें इतिहास में उच्चासन प्राप्त कराया। मुंशीराम अपने उद्धारकर्त्ता गुरु को कभी नहीं भूल सके। अपनी आत्मकथा में शराव-त्याग के प्रसंग का वर्णन करते हुए उन्होंने गुरु के आध्यात्मिक प्रभाव का वर्णन करते हुए लिखा—

"पुराने अभ्यास के अनुसार यह सूझी कि शेष बोतल समाप्त करके सदा के लिए उसके प्रलोमन से मुक्त हो जाऊँ। इस विचार से पूरा बड़ा गिलास भरा ही था कि मानसिक दृष्टि के सामने से एक और पर्दा उठा और यति दयानन्द की विशाल मूर्ति कौपीन लगाए, शरीर में भभूत रमाए और हाथ में मोटा लट्ठ लिए सामने आ खड़ी हुई। ऐसा जचा मानो महात्मा कह रहे हैं—'क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा ?' मैंने आँखें मलीं, मूर्ति कहीं सामने न थी, परन्तु हृदय काँप उठा। गिलास उठाकर जो फेंका तो सामने की दीवार में लगकर चूर-चूर हो गया। फिर बोतल उठाकर जोर से फेंकी, वह भी दीवार से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गई।"

योगिराज दयानन्द की इसी छवि ने मुंशीराम को अनेक स्थानों पर पतन से बचाया। इसी उपकार का अनुभव करते हुए महात्मा मुंशीराम ने 'कल्याण-मार्ग का पथिक' में गुरुवर का सश्रद्ध स्मरण करते हुए भाव-भीने शब्द लिखे—

"ऋपिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे अब ४२ वर्ष हो चुके; परन्तु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[तुम्]हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे [नि]र्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी [ह]ी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने [कि]तनी ही गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी; इसकी गणना कौन मनुष्य [क]र सकता है, परमात्मा के बिना; जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर [र]हे हो। कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि से [सं]सार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया, परन्तु अपने विषय में मैं [क]ह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर [स]च्चा जीवन-लाभ करने योग्य बनाया।···भगवन ! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, [उस] ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद [में] तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे [तुम्]हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।"

गुरू-ऋण से उऋण होने की तीव्रेच्छा रखने वाले मुंशीराम ने आर्य-समाज [क]ा और मानवता के लिए जो किया उसे विचारशील लोग युगों-युगों तक [वि]स्मृत नहीं कर सकेंगे। आर्ष परम्परा के पुनर्जीवन-हेतु उन्होंने महदुद्योग [कि]ये। स्वयं को तो तपस्वी बनाया ही अपनी सन्तानों को भी उसी धर्म-तप-[मार्]गं पर चलाने के संकल्प को पूर्ण किया।

ऊपर कहा जा चुका है कि मुंशीराम जी कैसी पतित अवस्था में रहकर [के] पश्चात् आत्मिक उन्नति को प्राप्त कर सके। यह उनके पूर्वजन्म के उत्तम [सं]स्कारों का ही परिणाम था। आर्य समाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् मद्य-[मां]स का सेवन, धूम्रपान इत्यादि दुर्व्यसनों को तिलांजलि दे दी। एक बार [ध]र्म-संस्कृति के मार्ग के पथिक हुए तो फिर उन्हें दिन-रात यही चिन्ता सताने [ल]गी कि किस प्रकार अपनी संस्कृति के अनुकूल शिक्षा बच्चों को दी जाए। [नि]श्चय हुआ कि इसके लिए 'गुरुकुल' पद्धति को अपनाना आवश्यक है। [मु]ंशीराम ने प्रतिज्ञा की कि जब तक गुरूकुल-स्थापना के लिए तीस हजार [रु]पया एकत्र न कर लूंगा, घर में प्रवेश न करूंगा। अन्ततोगत्वा वे कृतकार्य [हु]ए और गंगा के तट पर 'गुरुकुल' कांगड़ी की स्थापना हुई। प्रथम अधिष्ठाता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुये आचार्य मुंशीराम और उनके शिष्य हुए उनके दो सुपुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र ! कैसा दृढ़ निश्चय था उनका उस अंग्रेजी शिक्षा के युग में कि मैं अपने देश के बालकों को मातृभाषा—हिन्दी में स्वसंस्कृति के अनुकूल उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कराऊँगा ! इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरुकुल कांगड़ी अपने उद्देश्य में सफल हुआ था।

वास्तव में वे लोकोत्तर महामानव बने और अपनी अद्भुत क्षमताओं के कारण उन्होंने वे कार्य किये जिन्हें सामान्य जन नहीं कर सकते। जब देश को शिक्षा के क्षेत्र में सही दिशा की खोज थी, वे आगे बढ़े और जब देश को स्वतन्त्रता संग्राम के लिए सेनानी चाहिये था, उन्होंने अपनी हुंकार से ब्रिटिश साम्राज्य को कम्पायमान किया, जब धर्म को सुधारक चाहिये था, वे श्रद्धानंद बनकर सामने आ गए।

२३ दिसम्बर १९२६ को रोगशय्या पर स्वास्थ्यलाभ करते हुये वे स्वामी एक मतान्ध मुसलमान की गोलियों का शिकार हुए। क्या ही नियति है कि जिस पुरुष ने लोगों को उत्थान के लिए आजीवन निःस्वार्थभाव से कार्य किया उसी को एक सामान्य मनुष्य ने उत्पीड़ित किया। शायद इन्हीं निकृष्ट लक्षणों से ज्ञात होता है कि मनुष्यरूप में पशु भी होते हैं।

हे श्रद्धानन्द ! तुम्हारे बलिदान-दिवस पर हम श्रद्धा और गर्व से आपका स्मरण करते हैं। आपके दिखाये हुये मार्ग पर चलने की शक्ति और साहस पाने के लिए जगत्पिता से प्रार्थना करते हैं। शायद ईशकृपा से इस देश की आज की दुखवस्था को सुधारने हेतु आप जैसा कोई बलिदानी व्यक्ति फिर आ जाए जो हमें जगा दे। ★

इस जीवन में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें मैं उतना प्रेम करता हूँ जितना स्वामी श्रद्धानन्द जी को करता था। हमारी स्वच्छ, निर्मल तथा प्रगाढ़ मैत्री में कदाचित् ही धुंधलापन आया हो। उनके उच्च चरित्र की ही महत्ता थी जिसने उनके प्रति मेरे प्रेम को सच्चा और गहरा बनाया था। यह जानकर मैं बहुत प्रसन्न होता था कि स्वामी जी मुझसे प्रेम करते हैं।

—दीनबन्धु सी. एफ. एण्ड्रूज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या तीसरे नेत्र के अस्तित्व का कोई वैज्ञानिक आधार है ?

—विवेकी

वैज्ञानिकों ने अपनी खोजों में पाया है कि मनुष्येतर कितने जीव-जन्तु ऐसे हैं जिनमें तीसरे नेत्र का अस्तित्व स्थूल रूप से भी विद्यमान है। अपने दैनन्दिन कार्यों में वे उस नेत्र का उपयोग उसी प्रकार करते हैं जैसे कि सामान्य मनुष्य आँखों का करता है। न केवल देखने बल्कि समय, दिशा, मौसम इत्यादि प्रकृति की घटनाओं का भी अनुमान वे अपने तृतीय नेत्र से लगा लेते हैं। यह मात्र उनका स्थूल स्वरूप है जिसका उपयोग जीव-जन्तु कर पाते हैं। मनुष्य के लिए तो अनेकों सम्भावनाएँ छिपी पड़ी हैं।

यों तो मानव शरीर के हर अंग, अवयव का महत्व है। शरीर के विभिन्न क्रिया-कलापों में उनकी छोटी-बड़ी भूमिका है। पर उन सबमें मस्तिष्क का अपना अलग स्थान है। वह न केवल मूर्धा पर अवस्थित है वरन् मूर्धन्य गतिविधियों का संचालक भी है। आमतौर पर उससे सोचने—विचार करने, स्मृति रखने, निर्णय लेने जैसे काम लिये जाते हैं पर मस्तिष्क की सामर्थ्य उतने तक ही सीमित नहीं है। सूक्ष्म शक्तियों का वह एक ऐसा भण्डार है जिसका एक अत्यन्त छोटा भाग ही सामने आता तथा प्रयुक्त हो पाता है। अपने भीतर अद्भुत शक्तियों को दबाये एक ऐसे ही मानसिक केन्द्र की जानकारी वैज्ञानिकों को मिली है, जिसमें रहस्यमय शक्तियों के होने—उभरते रहने की सम्भावना वे व्यक्त करते हैं। जिसे योगविज्ञानी चिर पुरातन काल से आज्ञा चक्र—तृतीय नेत्र कहते रहे हैं तथा महान सम्भावनाओं से युक्त बताते रहे हैं, सम्भवतः वह केन्द्र यहीं कहीं स्थित हो।

दोनों भौहों के मध्य में स्थित कोश-समूह को योग-विज्ञान में आज्ञाचक्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कहा गया है। यह दिव्य दृष्टि का एक महत्वपूर्ण संयत्र है। यह रेडियो सेट के उस अतिसूक्ष्म क्रिस्टल या चुम्बक-घटक से कहीं अधिक सूक्ष्म और समर्थ है, जो अदृश्य तथा अश्रव्य ध्वनितरंगों को अपनी ओर खींचता है—उन्हें पकड़ता है और पुनः उन्हें दृश्य एवं श्रव्य कम्पनों में परिवर्तित कर देता है। अदृश्य को देखने तथा अश्रव्य को सुनने की अद्भुत सामर्थ्य इस आज्ञाचक्र में है। संजय ने इसी के माध्यम से महाभारत के विविध दृश्य देखे थे तथा गीता के उद्बोधनों को सुना था। इसे ही शिवनेत्र कहा गया है जिससे भगवान शिव ने कामदेव को भस्म किया था।

वेदों तथा उपनिषदों में आज्ञाचक्र को छठी इन्द्रिय अर्थात् अतीन्द्रिय क्षमताओं का समुच्चय कहा गया है। जागरण की स्थिति में इसके द्वारा दूरस्थ घटनाओं को देखा तथा सुना जा सकता है, मनोविज्ञानवेत्ता जिसे ई० एस० पी० नाम से पुकारते हैं।

मनः शास्त्रियों का मत है कि स्वप्नावस्था में सामान्य तथा आंखें बन्द रहती हैं, अन्य ज्ञानेन्द्रियाँ भी विश्राम की स्थिति में होती हैं। कामेन्द्रियां भी शिथिल हो जाती हैं। उस स्थिति में दोनों भौहों के बीच की आप्टिक चिआज्मा के आस-पास की कोशिकाएँ ही सक्रिय होतीं तथा विविध प्रकार के स्वप्नों की अनुभूति कराती हैं। स्वप्नों में मनुष्य का दायां मस्तिष्क सक्रिय होता है, वह विभिन्न प्रकार की बातें करता, सुनता तथा अन्य तरह की चेष्टाएँ भी करता है। यह तथ्य इस पक्ष पर प्रकाश डालता है कि हर व्यक्ति बिना आँख कान के भी देखने-सुनने की दिव्य सामर्थ्य रखता है। स्वप्नों के पूर्वाभास के माध्यम से उस क्षमता का छोटा-सा परिचय भर मिलता है।

स्नायु-विज्ञानियों ने अपने परीक्षणों में पाया है कि आज्ञाचक्र का जहाँ केन्द्र है, वहाँ स्थित आप्टिक चिआज्मा के समीप की कोशिकाओं से निरन्तर इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक तरंगे निकलती रहती हैं। इनकी क्षमता सामर्थ्य एक्सरे लेसर आदि किरणों से भी अधिक मानी जाती है। वे संकल्प से परिचालित तथा नियन्त्रित होती है। विविध स्थूल अवरोधों को पार करते हुए निर्दिष्ट स्थान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर जा पहुँचने की उनमें विलक्षण सामर्थ्य है। आज्ञाचक्र की सूक्ष्म विद्युत चुम्बकीय तरंगे ही परोक्ष जगत का दर्शन कराती हैं। इनकी सहायता से किसी भी व्यक्ति की मनःस्थिति—भावना, कल्पना, इच्छा, आकांक्षा आदि के विषय में सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अपनी ही नहीं दूसरों की अभिरुचि एवं प्रकृति को भी तृतीय नेत्र की सामर्थ्य के सहारे बदलना सम्भव है। अदृश्य सहायकों, एवं पितरों से भी सम्पर्क साधना इस यौगिक तृतीय नेत्र—आज्ञाचक्र के सहयोग से सम्भव है।

आज्ञाचक्र केन्द्र की सूक्ष्मग्राही सम्वेदनशीलता तथा विलक्षणता को योगशास्त्र में तो प्रतिपादित किया ही गया है, अब तो अगणित मनोविज्ञान के प्रयोगों से यह प्रमाणित भी हो चुका है कि यह वह केन्द्र है जिसके द्वारा दिव्य दर्शन, दिव्य श्रवण, दूरदर्शन, भूत-भविष्य का ज्ञान, पूर्वाभास, दूरानुभूति, विचारसम्प्रेषण जैसे कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उनका मत है कि इस केन्द्र से निकलने वाली सूक्ष्म किन्तु प्राणवान भाव-तरंगों के द्वारा सम्मोहन, मेस्मेरिज्म जैसे कार्यों को कर पाना भी सम्भव है।

ध्यानयोगियों का अभिमत है कि आत्म-साक्षात्कार, ईश्वरानुभूति, दिव्य अनुदानों के आदान-प्रदान जैसे महान प्रयोजन तीसरे नेत्र के जागरण से ही सम्भव होते हैं। सामान्य-सा दीखने वाला व्यक्ति भी इस केन्द्र के जागरण से परम सत्ता से एकाकार होने का परम लक्ष्य सिद्ध कर सकता है। ध्यानयोग के विविध प्रयोग इस केन्द्र के जागरण के लिए ही किये जाते हैं।

नूतन विकासवाद के प्रवक्ता कुछ विज्ञानिकों का अभिमत है कि बहुत समय पूर्व मस्तिष्क के मध्य दोनों भौंहों के बीच एक तीसरे नेत्र का अस्तित्व था, जो बाद में ग्रन्थि के रूप में बदल गया। पीनियल ग्रन्थि उस तीसरे नेत्र का ही अब बदला रूप है। जो अपने भीतर अगणित रहस्यों को छिपाये हुये है। मनुष्य में इसका वजन मुश्किल से एक या दो मिलीग्राम होता है। पर इस छोटी-सी रचना का शरीर के विकास एवं उसकी हलचलों में भारी योगदान है। एकमात्र यही ऐसी ग्रन्थि है जिसमें तन्त्रिका कोशिकाएँ विधिवत् मस्तिष्कीय कोशों की तरह पायी जाती हैं। यदि इस ग्रन्थि का सन्तुलन गड़बड़ा जाए तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अनेकों प्रकार की शारीरिक-मानसिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं। जाग्रत स्थिति में कुरेदने उभारने पर इससे अगणित उपलब्धियां भी हस्तगत होती हैं।

असन्तुलन की स्थिति में शारीरिक प्रौढ़ता शीघ्र आ धमकती है। जननांग तेजी से बढ़ने लगते हैं। ग्रन्थि के हारमोनों के असन्तुलन से विकास अवरुद्ध हो जाता है। जीवनपर्यन्त बचपन का अभिशाप लद जाता है। शरीर एवम् मस्तिष्क का विकास बन्द हो सकता है। कुछ विशेषज्ञों का यह भी मत है कि पीनियल ग्रन्थि रक्त में शकर की मात्रा के माध्यम से "ग्रोथ" को सन्तुलित बनाये रखने में पिट्यूटरी ग्रन्थि तथा पैन्क्रियाज की मदद करती है। इस ग्रन्थि का नियन्त्रण एड्रीनल तथा थायराइड ग्रन्थियों पर भ रहता है।

वैज्ञानिकों ने अपनी खोजों में पाया है कि मनुष्येतर कितने ही जीव-जन्तु ऐसे हैं जिनमें तीसरे नेत्र का अस्तित्व स्थूल रूप से भी विद्यमान है। अपने दैनन्दिन कार्यों में वे उस नेत्र का उपयोग उसी प्रकार करते हैं जैसे कि सामान्य मनुष्य आँखों का करता है। न केवल देखने बल्कि समय, दिशा, मौसम, प्रकृति की घटनाओं का भी अनुमान वे अपने तृतीय नेत्र से लगा लेते हैं। वह मात्र उसका स्थूल स्वरूप है जिसका उपयोग जीव-जन्तु कर पाते हैं। मनुष्य के लिए तो अनेकों सम्भावनाएँ छिपी पड़ी हैं।

वैज्ञानिकों की खोज से यह भी मालूम हुआ है कि ठण्डे खून वाले प्राणियों में इस क्षेत्र की कोशिकाएँ थर्मोस्टेट का काम करती हैं। उनके शरीर का तापक्रम एक-सा नहीं रहता, बदलता रहता है। गर्मी में गरम और ठण्ड में ठण्डा तापक्रम नियन्त्रण के लिए वे गर्मी में ठण्डे स्थानों पर रहते हैं तथा ठण्ड में गरम स्थानों पर। उनकी इस विलक्षणता के कारण उन्हें तापक्रम की पूरी खबर रहती है तथा समय-समय पर स्थान—परिवर्तन के लिए निर्देश देती रहती है।

प० जर्मनी में हुई खोजों का निष्कर्ष है कि तीसरी आँख कुतुबनुमा का भी काम करती है। दूसरे पशु-पक्षी दिशा का अनुमान अपने इसी चुम्बक के आधार पर लगा लेते हैं। पृथ्वी चुम्बकत्व एवं जैव चुम्बकत्व दोनों की तरंगों की गति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समान है, यह इससे सिद्ध होता है कि मनुष्यों में भी अपवाद रूप में किन्हीं-किन्हीं में यह कुतुबनुमा क्रियाशील बताया गया है। जिस प्रकार साइबेरिया से आने वाले आव्रजक पक्षी अपनी दिशा स्वयं ढूँढ़ते एवं आस्ट्रेलिया फिर वापस अपने स्थान पर पहुँच जाते हैं, मनुष्यों में भी यही बोध विद्यमान होता है।

मानवीय विलक्षणता के परिचायक किसी अंग का उपयोग न हो तो एनाटामी की दृष्टि से वेस्टीजियल ऑर्गन (निरर्थक अंग) ही कहा जाएगा। यही विडम्बना पीनियल—पीटुचरी एक्सिस एवं हाइपोथैलेमिक ऊतकों के साथ हुई है। सामान्य नजर आने वाले क्रिया-कलापों में असामान्य सामर्थ्य छुपी पड़ी है। किन्हीं-किन्हीं में यह फूट पड़ती है तो उन विभूतियों का परिचय मिलता है। वस्तुतः ये अपवाद नहीं है, ध्यान-धारणा द्वारा—योग अनुशासनों के माध्यम से इस केन्द्र को जगाकर असीम सामर्थ्यों को हस्तगतकर परोक्ष से सीधे सम्बन्ध जोड़ पाना सम्भव है। ★

सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

उदीयमान कवयित्री श्रीमती मृदुल कीर्त्ति द्वारा
प्रस्तुत सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद
अब पुस्तक रूप में उपलब्ध है।

मूल्य 51 रुपये।
जनज्ञान के सदस्यों को चालीस रुपये में।

सम्पर्क सूत्र — वेद मन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम)
डाकघर मुखमेलपुर, दिल्ली-36
डाक से मंगाने पर दस रुपये प्रेषण-व्यय पृथक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माइक्रो सर्जरी का चमत्कार

—अजय लुणावत

यह घटना ४ दिसम्बर १९८२ की है मसाच्यूसेट्स हॉस्पिटल, अमेरिका में वरमाउंट का २१ वर्षीय श्रमिक लाया गया। जिसके दोनों हाथों की अंगुलियां मेटल प्रेस में आने से बुरी तरह से क्षतिग्रस्त होकर कट गई थी। दुर्घटना के पांच घण्टे बाद ऑप्रेशन क्रिया आरम्भ हो गई और ४६ घण्टे के इस ऑपरेशन के दौरान मरीज को २५ बोतल रक्त दिया गया। कुछ महीनों पश्चात् ही वह श्रमिक उसी औद्योगिक इकाई में कार्यरत था। इस प्रकार यह एक वरदान था, उस श्रमिक के लिए सूक्ष्म शल्य क्रियाविज्ञान का।

जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, सूक्ष्म शल्यक्रिया (माइक्रो सर्जरी) सूक्ष्मदर्शी की सहायता से की गई शल्यक्रिया है। आधुनिक विज्ञान ने शल्य चिकित्सक को सूक्ष्मदर्शी के रूप में एक ऐसा हथियार दिया है, जिसके द्वारा उसकी क्षमता में कई गुणा वृद्धि हुई है, और वह पूर्व में असम्भव से दिखने वाले कार्यों को भी पूर्ण सफलता से कर सकता है, सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता ३ मि. मी. या कम व्यास की रक्तवाहिनियों व नसों के लिए होती है और १ मि. मी. या कम व्यास के लिए तो अत्यावश्यक है ही। इस प्रकार साधारण शल्य क्रिया के दौरान शल्य-चिकित्सक जिन तथ्यों को अनदेखा कर जाता था अब उन्हीं को महत्व का माना जा रहा है।

यद्यपि जीव विज्ञानी सैंकड़ों वर्षों से सूक्ष्मदर्शी का उपयोग करते आ रहे हैं, फिर भी शल्यक्रिया के दौरान इसका सर्वप्रथम उपयोग कान के ऑपरेशन में १९२० में स्वीडन के डॉ. निलॅन और हॉल्मग्रॅन ने किया। सन् १९५० में अमेरिकी डॉ. वेराक्वे और पैरीट ने आँखों की शल्यक्रिया में सूक्ष्मदर्शी का उपयोग कर माइक्रो सर्जरी के क्षेत्र को नई दिशा प्रदान की।

माइक्रो सर्जरी में जितना ज्यादा महत्व माइक्रोस्क्रोप का है उतना ही औजारों का भी है, सही तौर पर तो बारीक धागों के लिए जिस सुई का उपयोग होता है वह ठीक उसके लिए प्रयुक्त धागे के व्यास की ही होना चाहिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन यह लगभग असंभव ही है, फिर भी सुई एवं धागे का अनुपात कम से कम रखा जाता है। ताकि शल्यक्रिया के दौरान कम से कम क्षति हो। ०.५ से १ मि. मी. व्यास की रक्त वाहिनी के लिए ६० से ८० माइक्रो मी. सुई तथा २० माइक्रो मी. का नायलोन धागा प्रयोग किया जाता है। नायलोन धागे के सिरे पर सुई को धातु की सहायता से चिपका दिया जाता है, इन धागों की महीनता का अनुमान इस तथ्य से होता है कि वे मनुष्य के बालों के व्यास के हजारवें हिस्से से भी ज्यादा महीन होते हैं।

माइक्रो सर्जरी का उपयोग बहुत ही व्यापक है। प्रत्येक अंग की शल्य चिकित्सा के दौरान इसका उपयोग किया जा सकता है। लेकिन माइक्रो सर्जरी इकाई की स्थापना अपने आप में एक कठिन कार्य है। पूर्ण प्रशिक्षित स्टाफ, पूर्णत: सुसज्जित ऑपरेशन थियेटर तथा लगनशील शल्य चिकित्सक इस इकाई के प्रारंभिक आवश्यक तत्व हैं।

माइक्रो सर्जरी के विकास के लिए, जहां प्रशिक्षित स्टाफ एक महत्वपूर्ण इकाई है, वहीं मेडिकल, पैरामेडीकल एवं सामान्यजन की इसके प्रति जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक है। सभी को यह जानकारी होनी चाहिए कि कटे हुए अंग को प्लास्टिक बेग में बन्द करके बर्फ के पात्र' में रखना चाहिए, जिससे वह सुरक्षित रहे। कटे हुए अंग को सीधे बर्फ के संपर्क में आने से बचाना चाहिए, अन्यथा उसके ऊतक गलकर नष्ट हो जायेंगे और फिर शल्य क्रिया के लिए 'उपयोगी नहीं' रहेंगे। अधकटे अंग के स्थिरीकरण (स्प्लेटिंग) करने में थोड़ा भी समय नष्ट नहीं करना चाहिए। शीघ्रातिशीघ्र मरीज को अस्पताल स्थानांतरित करना चाहिए।

माइक्रो सर्जरी के क्षेत्र में सबसे पहले हॉपनर (१९०३) ने कुत्तों की भुजाओं पर पुनरारोपण के सफल प्रयोग किए। बाद में मनुष्य में बांहों के पुनरारोपण की शुरूआत १९६३ में चीन में हुई। सभी विकसित देशों में इस क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। भारत में बम्बई, मद्रास और जयपुर में एक दशक से माइक्रो सर्जरी की सुविधा सुलभ है।

अमेरिका के डॉ० बंकी ने एक मिलीमीटर व्यास की रक्तवाहिनियों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
जोड़ने का प्रयास किया, जबकि डॉ० रावर्ट एसलंड आधा मिलीमीटर व्यास की रक्तनलिकाओं को जोड़ने में सफल रहे। इस प्रकार अब क्षत-विक्षत अंगों का सफलतापूर्वक पुनरारोपण किया जा सकता है।

पश्चिमी जर्मनी स्थित म्युनिक में माइक्रो सर्जरी का उपयोग १९७५ में शुरू हुआ और अब प्रतिवर्ष लगभग २००-२२५ ऑपरेशन होते हैं। ९०-९५ प्रतिशत सफलता के साथ हाथ या पैर के संबंध में जैसे-जैसे हम धड़ के नजदीक जाते हैं, पुनरारोपण की सफलता घटती जाती है, क्योंकि मांसपेशियां अधिक समय तक रक्त-अवरोध को बर्दाश्त नहीं कर पातीं।

क्षत-विक्षत हिस्से के अंगों का यदि पुनरारोपण न किया जा सके तो भी उसे व्यर्थ समझकर नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि उसकी हड्डियों, रक्तवाहिनियों, नसों, तंतुओं एवं चमड़ी का उपयोग किया जा सकता है, अंगुली का उपयोग अंगूठे (जो कि हाथ की कार्य इकाई की ४० प्रतिशत हिस्सा माना जाता है) के स्थान पर तथा एक हथेली अथवा भुजा का उपयोग दूसरे के लिए किया जा सकता है।

जैसाकि पहले बताया गया है, क्षत-विक्षत अंगों को सुरक्षित रखने के लिए ठंडा किया जाता है। ठंडा रखने की यह प्रक्रिया सतत रूप से ऑपरेशन के दौरान जब तक कि उस अंग में रक्त प्रवाह पुन: प्रारंभ न हो, चलती रहती है। सर्वप्रथम क्षतिग्रस्त हिस्से का विच्छेदन कर उसे पुनरारोपण के लिए तैयार किया जाता है इसके पश्चात् शरीर से जुड़े क्षतिग्रस्त अंग का विच्छेदन कर हड्डी, नसें, तंतु, तथा रक्तवाहिनियों को अपेक्षित स्तर तक काटकर छोटा करते हैं, जिससे कि अधिक क्षतिग्रस्त हिस्सा छूट जाए। इसके बाद क्रम से हड्डी, तंतु, नस एवं मांसपेशियों को तथा अंत में रक्तवाहिनियों को जोड़ते हैं, रक्तवाहिनियों के सफल रूप से जुड़ते ही रक्त प्रवाह चालू हो जाता है, जो कि ऑपरेशन की सफलता का एक महत्वपूर्ण संकेत है। ऑपरेशन के पश्चात मरीज को गहन चिकित्सा कक्ष में रखा जाता है, क्योंकि एक मि. मी. अथवा कम व्यास की रक्तवाहिनियों में थक्का जमने की काफी संभावना रहती है फिजियोथेरापी, आक्यूपेशनल थेरापी एवं सहायक रि-कस्ट्रक्टीव सर्जरी की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहायता से मरीज अपना कार्य करने में सक्षम हो जाता है।

कैंसर, जिसमें कि शरीर की काफी बड़े हिस्से को निकालने की जरूरत रहती है। माइक्रो सर्जरी की मदद से आसानीपूर्वक चिकित्सा की जा सकती है, क्योंकि रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए मायोक्यूटेनियस फ्लप को शरीर के दूसरे हिस्से से स्थानांतरित कर प्राथमिक आवरण किया जा सकता है। इसी प्रकार मुंह के कैंसर में जीभ, गाल, एवं जबड़े का पुनर्निर्माण ऑस्टियो मायोक्यूटेनियस फ्लेप या दांत के टुकड़े द्वारा ओमेन्टम को भी स्थानांतरित कर उसके ऊपर चमड़ी लगाई जा सकती है।

नसबन्दी के बाद अथवा प्राथमिक रूप से नस में अवरोधजनित वंध्यता वाले मरीजों में इस शल्य चिकित्सा द्वारा सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है, महिलाओं में भी नसबंदी के बाद या किसी और बीमारी के कारण नस की रुकावट को माइक्रो सर्जरी द्वारा दूर किया जा सकता है। सन् १९७५ में डॉ० कोहेन ने सूक्ष्म शल्य क्रिया विधा का प्रयोग कर गुर्दा प्रत्यारोपण के समान दूसरी महिला की ट्यूब का प्रत्यारोपण किया था।

यद्यपि शरीर ने उन्हें पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया था, तथापि ट्यूब रिजेक्शन कोई समस्या नहीं है, क्योंकि जितना समय रिजेक्शन में लगता है उतने समय में महिला के गर्भ-धारण करने की पूर्ण संभावना रहती हैं।

गुर्दा-पुनरारोपण में गुर्दे की छोटी रक्तवाहिनियों को इस विधा द्वारा सफलतापूर्वक जोड़ा जा सकता है। कई बार क्षतिग्रस्त या रोगग्रस्त गुर्दे को पूरा निकालकर उसे पुनः प्रत्यारोपित कर सकते हैं।

गुर्दा प्रत्यारोपण की आवश्यकता को कम किया जा सकता है। भविष्य में सूक्ष्म शल्य चिकित्सा की मदद से शरीर में क्षतिग्रस्त अंगों को ठीक उसी तरह बदला जा सकेगा, जिस प्रकार किसी मशीन के बेकार कलपुर्जों को बदला जाता है। ★

स्वामी जी की हड्डियों से यमुना के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़ें पाताल में पहुँचेंगी। शहीदों के खून से नए शहीद पैदा होते हैं।

—लाला लाजपतराय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब समस्या—

राष्ट्रीय अखंडता के लिए एक चुनौती और कसौटी

—कृष्णलाल शर्मा

पंजाब में आज स्थिति जितनी विस्फोटक है, आतंकवादियों के मुँह को जितना खून लग गया है, उन्हें जितने आधुनिक विदेशी शस्त्र एवं अन्य साधन मिल रहे हैं, सिख समाज के धार्मिक एवं राजनीतिक नेता जिस प्रकार उनसे भयभीत होकर उनके कुकृत्यों की स्पष्ट निन्दा करने का साहस नहीं जुटा पा रहे, आम नागरिक जितना आतंकित एवं असुरक्षित होने का आभास कर रहा है, सुरक्षा बलों का मनोबल जितना गिर चुका है और राज्य तथा केन्द्र सरकार जिस प्रकार दुर्बलता एवं दुविधा की नीति का परिचय दे रही हैं उससे सर्वसाधारण में यह धारणा घर करती जा रही है कि परिस्थिति कभी भी कोई भयंकर मोड़ ले सकती है।

पंजाब समस्या आज न केवल विकट रूप धारण किए हुए है अपितु इस समस्या ने राष्ट्रीय अखण्डता के लिए स्वाधीनता के बाद की सबसे बड़ी चुनौती प्रस्तुत कर दी है। १९८० से लेकर आज तक आतंकवाद सतत सुलगता-धधकता चला आ रहा है। असंख्य निरपराध, निर्दोष एवं निहत्थे नागरिकों की निर्मम हत्या कर दी गई है और इस क्रम में विराम के अभी कोई संकेत दिखाई नहीं दे रहे। पंजाब की बलिवेदी पर शहीद होने वालों में पत्रकार, राजनीतिक एवं सामाजिक नेता तथा नगर-ग्राम में बसने वाले साधारण नागरिक शामिल हैं, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी हैं। यद्यपि इस नरसंहार का लक्ष्य केवल एक ही समुदाय के लोग हैं तथापि हत्यारों द्वारा सिख सम्प्रदाय के लोगों को भी नहीं बख्शा गया। पंजाब में खेली जा रही इस खून की होली को न तो १९८४ का ब्लूस्टार आपरेशन शांत कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सका और न पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला की पुलिस कारंवाई ही। देश के प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृहमंत्री, प्रदेश के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर रे तथा उनके परामर्शदाता श्री जे० एफ० रिबेरों द्वारा किए गए स्थाई शांति प्रस्थापित करने के 'सभी दावे सर्वदा खोखले सिद्ध हुए हैं। आपरेशन ब्लैक-थंडर की सफलता के बाद यह आशा बंधी थी कि पंजाब का भाग्य कुछ बदलेगा। किन्तु उसके बाद सरकार की दिशाहीनता के कारण सभी लाभ धूमिल होते दिखाई दे रहे हैं। आई० जी० श्री चमनलाल द्वारा रोष व्यक्त करते हुए छुट्टी पर जाने का निर्णय तथा जत्थेदार जसवीर सिंह रोड़े का स्वर्ण मन्दिर में दिवाली पर ' सर्बत खालसा" सम्मेलन बुलाकर सिखों से फतवा लेने की घोषणा पंजाब ही नही अपितु सम्पूर्ण देश के लिए एक खतरे की घंटी हैं।

प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने तीन वर्ष के अंतराल के बाद गत २१ सितम्बर की पहली बार तथा गत १२ अक्तूबर को दूसरीं बार पंजाव का प्रवास करने का साहस दिखाया है। यद्यपि दोनों प्रवासों के विभिन्न उद्देश्य बताए गए हैं, किन्तु यह स्पष्ट है कि श्री राजीव गांधी ने पंजाव की समस्या के समाधान की खोज तथा पंजाव में चुनाव की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए ही यह दोनों प्रवास किए हैं। पहले प्रवास के समय प्रधानमंत्री ने एक सर्वदलीय बैठक बुलाने का भी संकेत दिया था। उसके बाद एक मंत्रिमंडलीय उपसमिति गठित की गई जो अपनी रपट तैयार करने में जुटी है। अभी यह निश्चित होना शेष है कि सर्वदलीय बैठक की तिथि कौन सी होगी तथा उसमें विचारणीय विषय क्या होगें। श्री राजीव गांधी के प्रथम प्रवास से दो दिन पूर्व पंजाब प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री हित अभिलाषी की दिन दहाड़े हत्या तथा दूसरे प्रवास से दो दिन पूर्व पंजाब प्रदेश कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष श्री भगवान दास की निर्मम हत्या करके आतंकवादियों ने प्रधानमंत्री को यह सीधी चुनौती दे दी है कि वे पंजाब में शांति स्थापना का कोई प्रयास सफल नहीं होने देंगे।

इस समय पंजाब समस्या ने देश के सम्मुख दो स्पष्ट एवं अत्यन्त गंभीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न उपस्थित किए हैं। पहला यह कि क्या खालिस्तान के नाम पर देश का पुनः विभाजन होगा ? और दूसरा यह कि क्या सिख समुदाय विशाल हिन्दू समाज से अलग-थलग हो जायेगा ? यह सत्य होते हुए भी कि पंजाब में खालिस्तान की माँग आज मुट्ठी भर लोग ही कर रहे हैं और आतंकवादियों के सभी प्रयासों के बावजूद हिन्दू-सिख सम्बन्धों में दरार नहीं पड़ पाई, संकट की गम्भीरता को कम करके आँकना मूर्खता मात्र होगी।

पंजाब में आज स्थिति जितनी विस्फोटक है, आतंकवादियों के मुँह को जितना खून लग गया है, उन्हें जितने आधुनिक विदेशी शस्त्र एवं अन्य साधन मिल रहे हैं सिख समाज के धार्मिक एवं राजनीतिक नेता जिस प्रकार उससे भयभीत होकर उनके कुकृत्यों की स्पष्ट निन्दा करने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं, आम नागरिक जितना आतंकित एवं असुरक्षित होने का आभास कर रहा, सुरक्षा बलों का मनोबल जितना गिर चुका है और राज्य तथा केन्द्र सरकारें जिस प्रकार दुर्बलता एवं सुविधा की नीति का परिचय दे रही हैं उससे सर्वसाधारण में यह धारणा घर करती जा रही है कि परिस्थिति अभी भी कोई भयंकर मोड़ ले सकती हैं।

पंजाब गत आठ वर्षों में एक अंधेरी गली से दूसरी अंधेरी गली का सफर तय करते हुए आज पूर्ण अंधकार के कगार पर आकर खड़ा हो गया है आतंकवादी हताश एवं दिशाहीन होकर हत्याओं के खेल को बढ़ावा दे रहे हैं। अकाली आपसी संघर्ष में इतने उलझ गए हैं कि उनकी राजनीतिक सूझ-बूझ ही समाप्त हो गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा मुख्य ग्रंथी विवादग्रस्त होकर अपनीं प्रतिष्ठा एवं प्रभाव खो चुके हैं। आम सिख आज स्वयं को नेतृत्वहीन अनुभव कर रहा हैं। जिन हिन्दू-सिखों में सदियों से परस्पर रोटी-बेटी, जीने-मरने, मेले-त्यौहार और धर्मस्थलों एवं पूर्वजों का अटूट नाता चला आ रहा था, वे आज एक दूसरे को संदेह तथा घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। सब से अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि अपनी आँखों से सब देखते हुए भी राजनीतिक नेता आने वाले चुनाव पर नजरें गाड़े बैठे हैं। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में हैं और ऐसे फार्मूले की खोज में हैं जो उन्हें चुनाव की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैतरणी से पार उतार दे।

घटनाचक्र साक्षी है कि हंसते-हसते पंजाब को श्मशान बनाने के लिए दो मुख्य अपराधी हैं—एक कांग्रेसी, और दूसरे अकाली। अकाली अपने तुच्छ दलगत स्वार्थों के लिए रिजनल फार्मूला, सच्चर फार्मूला, पंजाबी सूबा, आनन्दपुर साहब प्रस्ताव तथा धर्मयुद्ध आदि सभी आंदोलनों को सदैव साम्प्रदायिक रूप देते रहे। क्षेत्रीय विवाद, जल-विवाद और अन्य अनेक मांगों को केवल सिखों की माँगें न कहकर यदि अकाली इन्हें सम्पूर्ण पंजाबियों की माँगें मानकर संघर्ष करते तो उन्हें सभी राजनैतिक दलों का व्यापक समर्थन मिलता। किन्तु अकालियों का यह लक्ष्य था ही नहीं। वे तो एक या दूसरे आन्दोलन के द्वारा सिख भावनाओं को भड़काने का अलगाववादी खेल खेलते रहे। आखिर उन्हें इससे मिला क्या? पंजाब में अकाली अपने शासन से हाथ धो बैठे, सिख पंथ की साख और सम्मान को धक्का पहुँचा, धार्मिक स्थानों की पवित्रता भंग हुई, पंजाब की खुशहाली बरबाद हुई, भाईचारा नष्ट हुआ और जो पंजाब न केवल भारत, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिये आकर्षण एवं श्रद्धा का केन्द्र था वहाँ आते हुए आज प्रत्येक व्यक्ति थर-थर काँपता है।

कांग्रेस अकालियों से भी बड़ी अपराधी सिद्ध हुई है। अकालियों को एक बार उनके संकीर्ण तथा साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के लिए क्षमा किया जा सकता है, किन्तु कांग्रेस ने पंजाब के नाम पर जो घिनौना खेल खेला है उसे इस राष्ट्रीय अपराध के लिए इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा। दल खालसा को जन्म देने, श्री जरनैल सिंह भिंडरावाले को राजनीतिक रंगमंच पर लाने और उन्हें अकालियों के विरुद्ध प्रयोग करने के लिए भूत बनाकर खड़ा करने का उत्तरदायित्व कांग्रेस पर ही है। यदि सरकार पंजाब में ९ सितम्बर, १९८१ को लाला जगत नारायण की हत्या के अपराध में श्री जरनैल सिंह पर अभियोग चलाती और उन्हें जेल में रखती, यदि २५ अप्रैल को डी०आई०जी० अवतार सिंह अटवाल की स्वर्ण मन्दिर के द्वार पर हुई हत्या के दिन पुलिस कार्यवाही की जाती और श्री भिंडरावाले सहित सभी आतंकवादियों को, जो उस समय तक गुरु नानक निवास में थे, गिरफ्तार कर लिया जाता तो न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्लूस्टार की नौबत आती, न प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्रूर हत्या होती और न दिल्ली में पशुतापूर्ण दंगे होते। कांग्रेस ने हिमालय जैसा बड़ा अपराध उस समय किया जब श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या से कोई सबक सीखने की बजाय सिख विरोधी भावनाएँ भड़काईं और देश की एकता के लिए संकट का हौवा खड़ा करके, १९८४ के लोकसभा चुनाव जीतने का घृणित खेल खेला। पंजाब में असंख्य निर्दोषों की हत्या, ब्लूस्टार आपरेशन, श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या और दिल्ली के दंगों के बाद आवश्यकता इस बात की थी कि एक ओर सिखों की घातक भावनाओं पर और दूसरी ओर सम्पूर्ण राष्ट्र की आहत मानसिकता पर मरहम रखने की कार्य-योजना तैयार की जाती। किन्तु धन्य हैं वे नेता जिन्होंने ऐसे संवेदनशील वातावरण में जलती आग पर तेल डालकर अपनी सत्ता का महल खड़ा करने को प्राथमिकता दी। अकाली भी इस इतिहास को दोहराने में पीछे नहीं रहे। राजीव लोंगोवाल समझौते का कार्यान्वयन उनके लिए गौण बनकर रह गया और संत हरचंद सिंह लोंगोवाल की क्रूर हत्या से उत्तेजित भावनाओं का उपयोग उन्होंने चुनाव जीतने के लिए करना अधिक उपयोगी समझा। स्वीकार करना होगा कि पंजाब समस्या को चुनावी हितों से जोड़ने का प्रयास आज की गंभीर संकटपूर्ण स्थिति का मुख्य कारण है।

इस समय पंजाब की नदियों में काफी पानी बह गया है और इस धरती पर काफी खून भी। आज यह सोचना एक मिथ्या भ्रम होगा कि केवल कोई राजनीतिक हल कर देने से पंजाब में शांति लौट आयेगी। आज काँग्रेस एवं अकाली दोनों अपने ही बुने हुए मकड़ी-जाल में फंस गए हैं। अकाली कम से कम आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को मनवाये बगैर कोई समझौता करते हैं तो उग्रवादी और यहाँ तक कि आम सिख भी उन्हें क्षमा नहीं करेगा। और अगर काँग्रेस सरकार आतंकवादियों के आगे झुकती है तो जनता उसे नहीं बख्शेगी। विडम्बना यह है कि इन दोनों के अपराधों का दंड संपूर्ण राष्ट्र को भुगतना पड़ रहा है। यह देश का दुर्भाग्य है "कि जिस सीमावर्ती पंजाब मे १९६५ तथा १९७१ के भारत-पाक युद्ध के समय हिन्दू एवं सिखों ने कंधे से कंधा मिलाकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैनिकों के लिए रक्तदान किया, उन्हें मोर्चों पर सहायता पहुँचाई और पाकिस्तान के दाँत खट्टे किए, आज वही पाकिस्तान पंजाब में हिन्दू-सिखों आपस में लड़ाने का षड्यन्त्र रच रहा है और आतंकवादी उसके हथियार बन गए हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंह के सजाये जिस खालसा की देशभक्ति, वीरता एवं बलिदान पर सारे देश को गर्व था और आज भी है, उसे दल खालसा ने बदनाम करके रख दिया है। काश ! आतंकवादी, अकाली नेता, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा मुख्य ग्रंथी यह अनुभव कर पाते कि उन्होंने सिख पंथ को कितनी अपार क्षति पहुँचाई है।

"न झूठी प्रतिष्ठा, न लीपापोती" की दृढ़ नीति ही पंजाब समस्या का कोई स्थाई हल निकाल सकती है। जहाँ पंजाब के सभी विवादों का शीघ्र, स्पष्ट एवं सहमतियुक्त समाधान खोजना नितांत आवश्यक है, वहाँ यह भी असंदिग्ध रूप से स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह समाधान बन्दूक की नोक पर या हिंसा का सहारा लेने वालों से कोई बातचीत करके नहीं निकाला जा सकता।

घटनाचक्र ने यह सिद्ध कर दिया है कि सीमापट्टी द्वारा भारत-पाक सीमाओं पर विदेशी हस्तक्षेप पर पूर्ण रोक, पूजास्थलों की पवित्रता की पूर्ण आश्वस्ति तथा आतंकवादियों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष के लिए कठोर कार्यवाही पंजाब में स्थाई शान्ति की स्थापना के लिए आवश्यक कदम है। जोधपुर के सभी निर्दोष बन्दियों को रिहा करने में आनाकानी तथा दिल्ली के दंगों के लिए दोषी पाये गये व्यक्तियों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही से इन्कार भी आतंकवादियों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया म एक बड़ी बाधा सिद्ध हो रहे हैं।

पंजाब-समस्या आज एक चुनौती भी है और कसौटी भी। आज यदि देश की एकता एवं अखण्डता को बचाना है तो सामरिक महत्व के सीमावर्ती प्रदेश पजाब को बचाना होगा, और यदि पंजाब को बचाना है तो भारतीय राष्ट्र के मूल्यवान अंग सिख समुदाय का हृदय परिवर्तन करना होगा। यह हृदय परिवर्तन तुष्टीकरण से नहीं किन्तु कठोर वास्तविकता के आधार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परस्पर विश्वास से ही हो सकेगा। सबको भूतकाल में हुए पापों का प्रायश्चित करना होगा और आज तक की हुई गंभीर भूलों को फिर से न दोहराने का दृढ़ संकल्प लेना होगा। एक ऐसा सामूहिक प्रयास चाहिए जो पंजाब समस्या को एक निर्णायक मोड़ दे सके। अनिवार्य शर्त यह है कि दलगत दृष्टिकोण या चुनावी लाभ के प्रलोभन से ऊपर उठकर प्रदेश एवं देश के व्यापक हित में पंजाब समस्या का समाधान खोजा जाये। ☆

मनुष्य शुक-संवाद

किसी मनुष्य ने पिंजड़े में बन्द तोते को देखकर उस पर व्यंग्य किया—

ग्रासार्जनाय शुक यज्जनरञ्जनेन—
त्यक्त्वात्मनः परगिरं त्वमुरीकरोषि।
किं भुज्यते तदपराधफलं त्वयेदमा—
जीवनं कठिनपञ्जरसंस्थितेन ॥

हे शुक! लोगों का मनोरंजन करके अन्न प्राप्ति करने के लोभ से तुमने अन्य जाति की बोली को अपना लिया। अर्थात् मनुष्यों की वाणी बोलने लगे। उसी का यह परिणाम है कि तुम्हें जीवन भर के लिए इस मजबूत पिंजड़े में बन्द रहना पड रहा हैं।

तोते ने तड़प कर उत्तर दिया—

वाचा वदामि विवशोऽन्यगिरं हृदान
नैवास्मि यूयमिव तेन च गर्वितो वा।
स्यां दण्डितो यदि तथापि दशाऽस्तु का वः
स्वेच्छानिरस्तनिज संस्कृतिवेशवाचाम् ॥

रे मूर्ख! मैं तो विवश होकर अन्य (मनुष्यों) की वाणी को अपना रहा हूं, हृदय से नहीं बोलता। फिर, तुम्हारी तरह अन्यों की भाषा बोलकर गर्व भी नहीं करता। यदि सोचते हो कि अन्यों की भाषा बोलने का मुझे यह दण्ड मिल रहा है तो तुम्हारी क्या दशा होनी चाहिए? तुम तो स्वेच्छा से शान दिखाने के लिए विदेशी संस्कृति, वेश-भूषा और भाषा को अपनाये हुए हो।

– स्व. वागीश्वर विद्यालंकार की 'वैदिक साहित्य-सौदामिनी' से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदर्श निर्भय नेता स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश

—ब्रह्मनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड

मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे आदर्श नेता और आचार्य श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्वनाम महात्मा मुन्शीराम जी) के निकट सम्पर्क में आने का अनेक वर्षों तक और अनेक रूपों में दुर्लभ पूर्वजन्म-पुण्योपार्जित अवसर प्राप्त हुआ। पूर्व इसके कि मैं आदर्श कर्मयोगी नेता के रूप में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी या महात्मा मुन्शीराम जी के विषय में लिखूँ मैं आदर्श नेता-विषयक उनके कुछ विचारों को उनके अपने एक लेख के आधार पर रख देना उचित समझता हूँ।

"नेता कैसा हो ?" इस शीर्षक से श्रद्धेय स्वामी जी ने अपने अन्तिम ग्रन्थ 'मुक्ति-सोपान' में एक लेख लिखा था जिसके कुछ मुख्यांश यहां दिए जाते हैं—

"त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदा।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः॥

ऋ० १।६१।२

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है—"सौम्य गुणयुक्त नेता आप उत्तम कर्मवीरों में उत्तम कर्मवीर, बुद्धिनिपुणों में भी श्रेष्ठ बुद्धि के स्वामी, सब विद्याओं से विभूषित हो। तभी आप महत्वपूर्ण होने से वर्षणीय उत्तम सुखों की वर्षा करने वाले और कीर्तिमानों में प्रशंसित कीर्ति वाले, मनुष्यों के लिए दर्शनीय होते हो। इसलिए इन्हीं गुणों का आप अनुसरण करो।

"नेता कौन हो सकता है ?" वेद उत्तर देता है कि जिसमें नीचे लिखे गुण न हों उसे नेता बनने का साहस न करना चाहिए।

१. प्रथम नेता में सब सौम्य गुणों का निवास होना चाहिए; जिसका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वभाव सरल नहीं, जो विपत्तियों को प्रसन्नतापूर्वक सहन नहीं कर सकता, जिसे कष्ट उसके उच्चासन से डिगा सकता है, वह नेता होने के योग्य नहीं। आगे उन गुणों की गणना कर दी गई है।…लोक-संग्रह का कार्य वही कर सकता है जो कर्मवीर हो। नेता का धर्म यही नहीं कि वह कर्मवीर हो किन्तु उसका यह भी कर्त्तव्य है कि कर्महीन पुरुषों को कर्मशील बना सके तब उसे सब कर्मवीरों से भी आगे चलने वाला होना चाहिए अर्थात् कर्मवीरों में भी उत्तम कर्मवीर होना चाहिए। फिर उन कर्मों का प्रयोग बुद्धिपूर्वक होना चाहिए।… नेता भी अपनी आयु के बड़े भाग को बुद्धि की स्वच्छता में लगाने से ही अग्रणी बन सकता है। इस बुद्धि की स्वच्छता के लिए सर्वविद्याओं के सार का ज्ञान होना भी नेता के लिए आवश्यक है। विद्या और तप से आत्मा की शुद्धि होती है तभी मनुष्य परोपकार-वृत्ति में निमग्न होकर कर्मफल की आकांक्षा से मुक्त हो जाता है।…नेता ऊपर उठता है उस समय में, जब कर्मफल की आकांक्षा का भाव उसके मन में उत्पन्न होना बन्द हो जाता है तब उसके द्वारा जन-साधारण पर सुख की वृष्टि होती है।…जो कीर्ति की परवाह नहीं करते, कीर्ति उनके पीछे भागती फिरती है। यह प्रशंसित कीर्ति नेता के काम में सहायक होती है क्योंकि उसकी उज्ज्वल कीर्ति को सुनकर आत्मिक तथा मानसिक भूख और पिपासा के सताए हुए जन उसकी शरण में जाते हैं और भूख और प्यास को बुझाकर शान्त हो, सृष्टि में सुख का राज्य लाते हैं। संसार के नेताओं को मन-वचन-कर्म द्वारा इस वेदाज्ञा का पालन करना चाहिए और यदि उनका जीवन तदनुसार नहीं है तो अपने किए हुए कर्मों के प्रायश्चित के लिए एकान्त में बैठना चाहिए।

—मुक्ति सोपान से उद्धृत

इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी में नेता के वेदोक्त गुण पूर्णरूप में विद्यमान थे। इसीलिए वे इतने अद्भुत लोकोपकारक कार्यों के करने में समर्थ हो सके।

ईश्वर में अटल विश्वास और श्रद्धा

वास्तव में देखा जाए तो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्पूर्ण जीवन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कल्याण-मार्ग का पथिक बनने की श्रद्धा ओत-प्रोत थी। उनका ईश्वर में विश्वास अटल था। मैं उस समय मायापुर वाटिका (हरिद्वार) में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एक ब्रह्मचारी के रूप में उपस्थित था जब १०' अप्रैल, सन् १९१७ को उन्होंने विधिपूर्वक संन्यासाश्रम में प्रवेश करके 'श्रद्धानन्द इस नाम को ग्रहण किया और अपने श्रीमुख से कहा कि, 'गत २०-२५ वर्ष से ईश्वर और वेदविषयक श्रद्धा, माता की तरह मेरी सदा रक्षा करती रही है जैसा कि महर्षि व्यास ने योगदर्शन के भाष्य में श्रद्धा के विषय में बताया है, 'सा हि (श्रद्धा) जननीव कल्याणी योगिनं पाति।' इसी से मुझे आनन्द की प्राप्ति हुई है। इसीलिए मैं श्रद्धानन्द इस नाम को आज से ग्रहण करता हूँ।'

"यथानाम तथा गुणाः" वाली कहावत स्वामी श्रद्धानन्द जी से बढ़कर बहुत कम कहीं चरितार्थ हुई होगी। यदि आर्यकुमारों, युवकों और अन्य सब नर-नारियों में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसी श्रद्धा उत्पन्न हो जाए तो निस्सन्देह आर्य समाज की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगे। दुःख की बात यही है कि लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की निर्भयता, साहस, कर्मशीलता, वीरता आदि गुणों की प्रशंसा की किन्तु उनकी श्रद्धा को अपनाने का प्रयत्न बहुत कम किया गया। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सदा स्मरणीय शब्द—

हम भूलते नहीं कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने, जिन्हें पूज्य महात्मा गांधी और रेवरेण्ड ऐण्ड्रूज गुरुदेव के नाम से पुकारते थे, श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर बलिदान के पश्चात् निम्नलिखित आशय के वाक्य लिखे थे जो वस्तुतः स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं—

श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। 'श्रद्धानन्द' यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्यप्रति श्रद्धावान् थे और उसी में आनन्द मानते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक, अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्भयता की मूर्ति आदर्श नेता

सर्वशक्तिमान् भगवान् में अटल विश्वास के कारण श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी निर्भयता की मूर्ति बन गए थे। उनकी निर्भयता के वैसे तो सैकड़ों उदाहरण विद्यमान हैं किन्तु दो घटनाओं का उल्लेख करना ही यहां पर्याप्त है। श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी सेवाव्रती महात्मा थे। जब सन् १९१८ में गढ़वाल में अकाल पड़ा तो अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ श्रद्धेय स्वामी जी ने 'भारत सेवा समिति' के साथ मिलकर संगठित कार्य प्रारम्भ किया और गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों को इस सेवा कार्य के लिए अपने पास बुला लिया। मैं उस समय गुरुकुल की द्वादश श्रेणी का विद्यार्थी था। मुझे भी अपने अन्य सहपाठियों के साथ पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में गढ़वाल में सेवाकार्य का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय हम लोगों ने पूज्य स्वामी जी के हृदय की कोमलता और विशालता को भली-भांति अनुभव किया। कई बार वे हमारे साथ १८-२० मील पैदल भी चले जाते थे ताकि दुर्भिक्ष-पीड़ितों की वास्तविक अवस्था का पता लगाकर उनकी सहायता की जा सके। उन्हीं दिनों की यह घटना है जिसका उल्लेख उनकी निर्भयता को सूचित करने के लिए यहां किया जा रहा है—

'सद्धर्म-प्रचारक' में किसी आर्य स्वयं-सेवक ने एक लेख गढ़वालियों की सामाजिक कुप्रथाओं की आलोचना में निकाला। इसे लेकर कुछ स्वार्थियों ने भोली-भाली अशिक्षित जनता को आर्यों के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विरुद्ध भड़का दिया। गढ़वाल की राजधानी पौड़ी गढ़वाल में एक बहिष्कार सभा की आयोजना की गई। स्वामी जी का सिर तक काट लेने की धमकियां दी जाने लगीं। सभा के दिन प्रातः स्वामी जी दुर्भिक्ष-पीड़ित सहायतार्थ दौरे से लौट रहे थे कि पौड़ी के कुछ सज्जन दो मील की दूरी पर ही जाकर आपसे मिले और उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि आप यहीं से लौट जाएँ। पौड़ी में आपके जाने से बड़ा अनर्थ हो जाएगा। पर स्वामी जी इन बातों से कहाँ भयभीत होने वाले थे। वे श्री वेंकटेशनारायण तिवारी तथा श्रीराम जी वाजपेयी इत्यादि प्रतिष्ठित सज्जनों के मना करने पर भी शाम की सभा के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए नियत समय ८ बजे से १५ मिनट पहले ही जाकर सभापति के आसन के समीप जा बैठे। उनकी भव्य शान्तमूर्ति को देखते ही वहां के वातावरण में अद्भुत परिवर्तन हो गया। स्वामी जी के साहस, धैर्य, सेवा-भावना और आत्म-विश्वास की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। किसी को उनके विरोध में कुछ कहने का साहस ही नहीं हुआ। ऐसे थे वे निर्भयता की मूर्ति श्रद्धेय स्वामी जी महाराज।

गुर्खों की संगीनों के आगे छाती खोलना

दूसरी घटना जिसका इस प्रसंग में उल्लेख अत्यावश्यक है वह ३० मार्च, सन् १९१९ की है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उन दिनों महात्मा गाँधी जी प्रवर्तित रोलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह-आन्दोलन का देहली में नेतृत्व कर रहे थे। ३० मार्च को देहली में पूर्ण हड़ताल थी। मध्याह्न के १२ बजे तक स्वामी जी देहली नगर का चक्कर लगाकर अपने निवास-स्थान पर पहुंचे ही थे कि स्टेशन पर गोली चलने का समाचार आया। वे तुरन्त स्टेशन पर पहुँचे और वहां एकत्रित ३-४ हजार आदमियों को कम्पनी बाग में सभा के स्थान पर ले गए। सभा में लगभग २५ हजार की उपस्थिति थी। आप भाषण दे रहे थे कि चाँदनी चौक के घण्टाघर पर भी गोली चलने और १०-१२ व्यक्तियों के घायल होने का समाचार आया। उत्तेजित जनता को स्वामी जी ने किसी प्रकार शान्त रखा। सेना ने आकर एक बार सारी सभा को घेर लिया। फिर चीफ कमिश्नर भी कुछ घुड़सवारों के साथ आए। मशीनगनें भी लाकर खड़ी कर दी गयीं। स्वामी जी ने चीफ कमिश्नर से कह दिया कि यदि आपके आदमियों ने लोगों को उत्तेजित किया तो मैं शान्ति-रक्षा का जिम्मेदार नहीं हूँ। अन्यथा शान्ति भंग न होने देने का सब उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। ऐसी उत्तेजित जनता को शान्त रखना सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द जी का ही काम था। जब ४० हजार का विशाल जन-समूह आपके पीछे-पीछे चला जा रहा था। घण्टाघर पर गुरखे सिपाही रास्ते से हटकर एक ओर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। लोगों ने समझा कि हमारे लिए रास्ता छोड़ा गया है किन्तु वहाँ पहुँचते ही बन्दूकें दागी गयीं। लोगों में बड़ी बेचैनी और खलबली मच गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता को वहाँ ही खड़े रहने का आदेश देकर स्वामी जी शान्त जनता पर बन्दूक दागने का कारण जानने के लिए गुरखों की ओर बढ़े। तुरन्त दो किरचें स्वामी जी की छाती पर बड़े घमण्ड में और धृष्टता के साथ यह कहते हुए गुरखों ने तान दीं कि तुमको छेद देंगे। वे शान्ति से उनके सामने खड़े हो गए और उन्होंने गुरखों से कहा, 'मैं खड़ा हूँ। गोली मारो।" इतने ही में आठ दस और किरचें स्वामी जी की छाती पर तान दी गयीं और वैसी ही धृष्टता पूर्ण धमकियाँ दी जाने लगीं। अब जनता के लिए शान्त रहना असम्भव हो गया। किन्तु श्रद्धेय स्वामी जी ने हाथ के इशारे से सत्याग्रह व्रत का स्मरण कराते हुए लोगों को शान्त किया। लोग उत्तेजित होकर उस समय वार-बार यही कह रहे थे कि हमें मरने दीजिए आप नहीं। लगभग ३ मिनट तक किरचें इसी प्रकार स्वामी जी की छाती की ओर तनी रही तब एक घुड़सवार अंग्रेज सी० आई० डी० पुलिस का मि० औंर्ड आया और उसने पुलिस के आदमी से पूछा कि क्या गोली चलाने की उसने आज्ञा दी थी? स्वामी जी ने उस अंग्रेज से पूछा कि क्या आपने गोली चलाने का शब्द सुना था? जिस पर उसने यह कहकर टालमटोल की कि मैं जाँच कर रहा हूँ। स्वामी जी महाराज लोगों के साथ आगे बढ़े। एक गुरखा अपनी खुकरी इधर-उधर घुमाते और चमकाते हुए उनके पास आया पर लोगों के उपहास करने पर वह बिना उसका प्रयोग किए लौट गया। इस प्रकार वह लाल अक्षरों में लिखी जाने वाली लाल घटना स्वामी जी की निर्भयता के कारण टल गई। सत्याग्रह के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द जी की निर्भयता का उज्ज्वल प्रमाण-रूप इस घटना का सदा स्वर्णाक्षरों में उल्लेख किया जाएगा।

इस घटना के सम्बन्ध में लौहपुरुष भारत के उप प्रधानमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने लिखा था, "वीरता और बलिदान की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने आ जाते हैं और कहते हैं, 'लो चलाओ गोलियाँ।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूँ कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहेगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धा के कारण अद्भुत आत्मिक शक्ति

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी में श्रद्धा और सर्वशक्तिमान् भगवान् की उपासना के कारण जिसे वे प्रातः कम से कम २ घण्टे नियमपूर्वक अवश्य करते थे, ऐसा हम लोगों ने उनके साथ काशी, कलकत्ता, बम्बई तथा दक्षिण भारत की यात्राओं में भी देखा, अद्भुत शक्ति का विकास हो गया था। इसका एक उदाहरण मुझे कभी भूल नहीं सकता क्योंकि जिस घटना का मैं उल्लेख कर रहा हुं वह मेरे सामने हुई। जब सन् १६२६ में मैं मुलतान गुरुकुल का आचार्य था, मुलतान गुरुकुल के अधिकारियों ने चौधरी रामकृष्ण के विरुद्ध अभियोग चलाया जिसने सन् १६०६ में गुरुकुल की स्थापना के लिए भूमि देकर पीछे चोरियाँ आदि करवा कर उन्हें बाधित कर दिया कि वे उसे छोड़कर अन्यत्र चले जाएं। पीछे गुरुकुल ताराकुण्ड में श्री परमानन्द जी की कोठियों में कई वर्ष तक चलता रहा। इस अभियोग में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को भी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्य पुराने अधिकारियों के साथ बुलाया गया और उनके स्वागतार्थ शानदार जलूस निकाला गया, चौधरी रामकृष्ण बड़े अभिमान के साथ लोगों को कहता फिरता था कि मैं कभी मकानों के बनवाने का रुपया न दूंगा और प्रिवी कौंसिल तक मुकदमा लडूंगा, किन्तु ज्यों ही हमारे सामने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की साक्षी हुई जिसमें उन्होंने बताया कि किसप्रकार चौधरी रामकृष्ण ने गुरुकुलार्थ भूमि दान में स्वेच्छया दी थी और उन्होंने फरवरी १६०६ में उस भूमि पर गुरुकुल की स्थापना की थी तो हमें यह देखकर (मैं स्वयं न्यायालय में उपस्थित था जब स्वामी जी महाराज की साक्षी हुई) बड़ा आश्चर्य हुआ कि चौधरी रामकृष्ण ने उनको उसी समय १० हजार की राशि अदालत में ही दे दी और शेष लगभग ८ हजार की राशि के प्रोनोट्स दे दिए। तब अन्य महानुभावों की गवाही की आवश्यकता ही नहीं रही। श्रद्धेय स्वामी जी की आत्म-शक्ति के इस चमत्कार को देखकर हम सब स्तब्ध रह गए।

अमर कर्मवीर का दिव्य सन्देश

विस्तार-भय से अन्य घटनाओं का उल्लेख न करते हुए श्रद्धेय स्वामी जी के इस दिव्य सन्देश को आर्य जनता के समक्ष रखना अपना कर्तव्य समझता हूँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो उन्होंने मेरी प्रार्थना पर आर्यसमाज मंगलौर (दक्षिण कर्णाटक) के उत्सव के अवसर पर भेजा था। वह दिव्य सन्देश इस प्रकार था—

"तुम यह मत भूलो कि वैदिक धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नहीं है। यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना संसार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भर के लिए भी नहीं रह सकती। प्राचीनकाल में असंख्य आध्यात्मिक कोषों को खोलने वाली चाबी तुम्हारे ही हाथों में दी गई थी और अब भी अशान्त संसार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है। किन्तु पहले तुमको अपनी सब अपवित्रताओं को धोना होगा। आज गम्भीर भाव से यह प्रतिज्ञा करो कि—

१. तुम वैदिक पंच महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे,

२. तुम अस्वाभाविक जाति-भेद के बन्धन को तोड़कर वर्णाश्रम-व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करोगे,

३. तुम अपनी मातृ-भूमि से अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे और

४. तुम आर्य समाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार, मत, सम्प्रदाय, जाति, रंग आदि भेद भावना का कुछ भी विचार न करके मनुष्यमात्र के लिए खोल दोगे।

परम पुरुष परमात्मा इस गम्भीर प्रतिज्ञा के पालन में तुम्हें सहायक हों।

श्रद्धेय स्वामी जी के इस दिव्य संदेश की ओर खेद है कि आर्य जनता ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। आज भी ऐसे नर-नारियों की संख्या अँगुली पर गिनी जा सकती है जो प्रतिदिन नियमपूर्वक सन्ध्या, हवन, स्वाध्यादि सपरिवार करते हों, जिन्होंने जाति-भेद की दलदल से अपने को पूर्णतया निकाल लिया हो और जिन्होंने वर्णाश्रम-व्यवस्था को जीवन में क्रियात्मक रूप दिया हो। इसीलिए आर्य समाज यथेष्ट उन्नति नहीं कर सका। मैं सार्वभौम वैदिक परिवार संघ के आचार्य और विश्व वेद-परिषद् ; में समस्त आर्य नर-नारियों का ध्यान श्रद्धेय स्वामी जी के इस दिव्य सन्देश की ओर आकृष्ट करना अपना कर्तव्य समझता हूं क्योंकि इसको क्रियात्मक रूप देने पर ही आर्य समाज की वास्तविक उन्नति निर्भर है।

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कठोर-परिश्रम

—भावना दीक्षित

हिमालय की रमणीक उपत्काओं में देवताओं और यक्षों का वास था और फिर दक्षिण की ओर गंगा यमुना, सिन्धु आदि नदियों का पवित्र आर्यावर्त आर्यों का देश था। आर्य वह जाति थी, जो स्वानुशासन में विश्व में अग्रणी थी। ज्ञान, कर्म और उपासना के लिए वेद जिसके महान् ग्रन्थ थे। वे अत्यधिक परिश्रमी और वेदविहित कर्म को ही उपासना मान कर उस पर कठोरतापूर्वक आचरण करने वाले थे। न तो बिना परिश्रम के कुछ पाने का लालच था और न देवताओं की अर्चना-वन्दना करके अपनी रक्षा का मोह ही। ये आर्य लोग अत्यन्त परिश्रमी कठोर तपे हुए और अद्भुत विद्वान् थे।

× × ×

हजारों वर्ष पहले की बात है

सम्पूर्ण आर्य जाति अपने कर्म-तप में लगी थी। उन्हें अपने वेदविहित कर्म से इस कदर लगाव था कि वे प्रातः से सायंकाल तक उसीके अनुसार आचरण करना ही भगवान् की सबसे अच्छी उपासना मानते थे। लेकिन आर्यों की इस कठोर कर्मभावना से देवतागण रुष्ट हो गये। कुछ काल तक तो उन्होंने स्वयं ही आर्यों को दण्ड देने का प्रयास किया। लेकिन जब वे इसमें सफल न हो सके तब वे सब इकट्ठे होकर भगवान् के पास पहुँचे।

"..........भगवान्, जहाँ तक देवताओं का अर्चन व देवताओं का भाग उन्हें देने का प्रश्न है, यदि आर्य लोग उनके भाग को उन्हें अर्पित नहीं करते और उनका यथोचित अर्चन-पूजन नहीं करते तो भी किसी हद तक सहन कर लिया जाता। लेकिन अब तो उनके ज्ञान का घमण्ड इस सीमा तक पहुँच चुका है कि वे लोग आपका अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते। कहते हैं कि "कर्म ही सब से बड़ी उपासना है।"

भगवान् ने बहुत भोले बन कर उनसे पूछा—"तो फिर क्या किया जाये ?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवता गण बोले "उन्हें अपने कर्मों का दण्ड अवश्य मिलना चाहिये। अन्यथा समस्त चराचर ही आपके अस्तित्व को अस्वीकार कर देगा।"

"......तो क्या दण्ड दिया जाये उन्हें ?" भगवान् ने पुनः प्रश्न किया

देवताओं ने मन्त्रणा की। फिर एक मत हो कर बोले "भगवन्, उनके देश में बारह वर्ष तक जलवृष्टि न हो तब उनकी बुद्धि ठिकाने आ जायेगी।"

"तथास्तु..." भगवान् ने अनुमति दे दी।

× × ×

कैलाश पर विराजमान शिव इस आज्ञा को सुनकर चौंक पड़े। कुछ क्षण मन से विचार करते रहे, फिर उन्होंने हाथ में पकड़ी हुई शृंगी को अपनी करधनी में खोंस लिया। अब बारह वर्षों तक इसे बजाने की नौबत ही आने वाली नहीं थी।

भगवान् शिव की शृंगी भी बहुत विचित्र है। जब शिव अपने श्री मुख से इसे लगा कर इसमें स्वर फूँकते हैं तब बड़े-बड़े विचित्र स्वरों की सरिता फूट पड़ती है। आकाश पर बादल व बिजली थिरकने लगते हैं। घटायें ऐसी घुमड़ती हैं कि प्रत्येक का मन मयूर नाचने लगता है और सृष्टि सुरभित हो उठती है। अन्न व बनस्पति पृथ्वी से अंकुरित होने लगते हैं और शिव द्वारा सारे संसार का शिव अर्थात् कल्याण होता है।

लेकिन अब बारह वर्ष तक जल नहीं बरसेगा। बारह वर्षों तक आकाश में बिजली व बादल नर्तन नहीं करेंगे।

× × ×

आर्यावर्त में पहले ही वर्ष में हा-हा-कार मच उठा। खेत बोये नहीं जा सके। बीज का अनाज भी समाप्त हो गया। भीषण गर्मी के कारण वृक्ष भी जल गये। पत्तियाँ सूखने लगीं। पशुओं को आहार दुर्लभ हो गया। घास और बनस्पतियां केवल नदियों के किनारे बाकी बचीं।

दूसरे और तीसरे वर्ष स्थिति खराब और अत्यधिक खराब हो गई। और चौथी वर्ष—

भीषण गर्मी के कारण पृथ्वी से हर समय लपटें निकलती रहतीं। जमीन में दरारें पड़ गईं। हर समय लू चलती रहती। वृक्ष सूख गये, साधारण लता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्रुमों के वंश ही समाप्त हो गये। पक्षी, जीव-जन्तु समाप्त हो गये अथवा देश छोड़ गए। पशु अधिकांश समाप्त हो गए। जो बचे वे मात्र हड्डियों के ढाँचे भर रह गये, लगता था यह भी समाप्त होने वाले हैं। मनुष्य अधिकांश समाप्त हो गये, भोजन और जल के अभाव में। जो बचे केवल वृक्षों के मूल आदि को उबाल कर, पीकर किसी प्रकार जीवन बचाये थे। लेकिन इस प्रकार कब तक जीवन बच सकेगा ?

× × ×

कैलाश से शिव और पार्वती आकाश मार्ग से देशाटन को निकले। हिमालय की सुन्दर-सुन्दर रमणीक उपत्यकाओं को पार कर जब वे आर्यावर्त के आकाश पर आये तब पार्वती जी आर्यावर्त का हाल देख चौंक पड़ीं। चारों ओर श्मशान जैसा हाल था। मरे पशु-मनुष्यों के शव अस्थि-पंजर, सूखे जले से वृक्ष, दरकी हुई पृथ्वी और भयानक लू के थपेड़े। यह देख कर अन्नपूर्णा घबरा उठी। बोली "भगवन् यह आर्यावर्त का क्या हाल हो गया।"

शिव ने विश्वास छोड़ा। भगवान की आज्ञा है कि यहां बारह वर्ष तक जल नहीं बरसेगा। अभी तो केवल चार वर्ष ही व्यतीत हो पाये हैं।"

"इसका तो तात्पर्य है कि आर्यावर्त से जीवन नाम का अस्तित्व ही समाप्त हो जावेगा ?" पार्वती जी ने व्यथा के साथ पूछा।

"जो हो।" दुःखी होकर शिव जी बोले "देवताओं की यही इच्छा है।"

तब तक अन्नपूर्णा जी की दृष्टि एक खेत पर पड़ी। जर-जर मात्र हड्डी के ढांचे जैसे शरीर का एक पुरुष हड्डी के ढांचे जैसे बैलों के सहारे अत्यधिक कठोर धरती पर हल चला रहा था। वे आश्चर्य में पड़ गईं। उधर इशारा करके शिव से पूछा बैठीं "भगवन् उधर देखो···जब जल बरसना ही नहीं है और न खेत में कुछ होना है तो इतनी कठोर धरती पर यह किसान हल क्यों चला रहा है। इससे इसे क्या लाभ होगा।"

शिव बोले" बात यह है कि ये लोग आर्य जाति के हैं, कठोर परिश्रमी व तपस्वी। ये लोग जानते हैं कि बारह वर्षों तक जल नहीं बरसेगा। करीब-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करीब सम्पूर्ण जन-जीवन समाप्त हो जावेगा। लेकिन किसी प्रकार दैवयोग से यदि कुछ लोग बच गये तब बारह वर्षों के बाद जब जल बरसेगा तो हल चला कर उसका उपयोग तो कर सकेंगे। इस कारण ये लोग हल चलाने का अभ्यास कर रहे हैं कि कहीं बारह वर्षों में हल चलाने और अन्न उपजाने की प्रक्रिया ही न भूल जावें।"

"भगवन् एक बात तो बताइये, आप-बारह वर्षों तक शृंगी नहीं बजावेंगे कहीं आप भी कलात्मक ढंग से शृंगी बजाना भूल गये तब कैसे जल वृष्टि होगी?"

"...बात तो तुम ठीक कहती हो अन्नपूर्णा।" और भगवान् शिव ने शृंगी निकाल ली, अभ्यास करने लगे।

आकाश में बादल घिर आये, बिजली नर्तन करने लगी और जलवृष्टि होने लगी।

जब शृंगी बजाकर अभ्यास पूरा कर चुके तब शिव ने आँखें खोलीं और जल देख कर चौक पड़े "अरे पार्वती यह क्या हो गया?"

फिर मुस्काये, बोले "पार्वती बात यह है कि मनुष्य का कठोर परिश्रम विधि के विधान को भी बदल देता है।"

इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि कठिनाई के समय में भी अपने कार्य के अभ्यास को नहीं छोड़ना चाहिए।

शिक्षक (बच्चों से) तुम्हें पता है कि अमरीका में १५ साल के बच्चे भी अपने पांव पर खड़े हो जाते हैं। एक बच्चा— गुरु जी, भारत में तो एक साल के बच्चे चलने भी लगते हैं।

☐ होशियार सिंह व अमरीक सिंह क्लास में नालायक विद्यार्थी थे। इसलिए इन्स्पैक्शन के दिन अध्यापक ने उन्हें आने को मना किया लेकिन होशियार सिंह चुपचाप आकर क्लास में बैठ गया। अधिकारी महोदय ने आते ही पूछा, "बताइए क्लास में होशियार कौन है?" होशियार सिंह खड़ा हो गया। कहने लगा, "सर मैं हूं।" अधिकारी बोले, "आप बताएगे कि अमरीका कहां है?" होशियार सिंह बोला, "सर वह बाथरूम में डर के मारे छिपा ठा है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	500 रु०
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 ,,
3.	वेद ज्योति	20 ,,
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	35 ,,
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 ,,
6.	अथर्ववेद परिचय	6 ,,
7.	संस्कार विधिः (सजिल्द)	20 ,,
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	30 ,,
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा० रामनाथ वेदालंकार)	30 ,,
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 ,,
	,, ,, (आर्ट पेपर पर)	201 ,,
11.	ज्योति-स्तम्भ	10 ,,
12.	वैदिक सम्पत्ति	101 ,,
13.	योगासन	2 ,,
14.	योग और ब्रह्मचर्य	3 ,,
15.	Concept of God	50 ,,
16.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	25 ,,
17.	LIGHT OF TRUTH	50 ,,
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 ,,
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 ,,
20.	संक्षिप्त महाभारत	50 ,,
21.	संक्षिप्त रामायण	10 ,,
22.	गायत्री मंत्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित (दोनों ओर पत्ती लगा)	1.50 ,,

कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय : 2286, आर्यसमाज रोड करौल बाग नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम पो० मुखमेलपुर, दिल्ली-1100036

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. मुखमेलपुर दिल्ली-३६	पौष संवत् २०४५ दिसम्बर १९८८	Delhi Postal D-C-201 N. R. 10719/65

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिये

1.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	60 पैसे
3.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	60 पैसे
4.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	5 रु०
5.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9.	हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
11.	Bible in the Balance	1 रु०
12.	A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
13.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15.	बाइबिल को चुनौती	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17.	...और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 रु०
19.	The Clarion Call	60 पैसे
20.	जनज्ञान मासिक का जन हिन्दू विशेषांक	6 रु०
21.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
22.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट ।
प्रत्येक आदेश के साथ संपूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi